अभ्यासवान् भव

नवमकक्षायाः संस्कृतस्य अभ्यासपुस्तकम्

© NCERT
not to be republished

0975

विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0975 – अभ्यासवान् भव
कक्षा 9 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5292-059-4

प्रथम संस्करण
मई 2018 वैशाख 1940

पुनर्मुद्रण
अप्रैल 2019 चैत्र 1941
अक्तूबर 2019 अश्विन 1941
फ़रवरी 2021 माघ 1942

PD ?? RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2018

₹ .....

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा ....
..
..
...द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	: *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	: *विपिन दिवान*
संपादन सहायक	: ऋषिपाल सिंह
उत्पादन सहायक	: ....

चित्र
यशवन्त के. श्रीवास्तव

© NCERT not to be republished

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृत-शिक्षणार्थम् आदर्श-पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः भाषाशिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे माध्यमिकस्तरीयच्छात्राणां संस्कृतव्याकरणस्य अभ्यासार्थं द्वादशाध्यायेषु निर्मितस्य *अभ्यासवान् भव* इति नामधेयस्य अभ्यासपुस्तकस्य संस्करणं प्रस्तूयते। अत्र अपठितावबोधनेन सह पत्रलेखनम्, अनुच्छेदलेखनम्, रचनानुवादः, वर्णविचारः, कारकोपपदविभक्तिः, प्रत्ययसमासाव्ययप्रयोगाः, शब्दरूपाणि, धातुरूपाणि इति विषयेषु अभ्यासक्रमाः दत्ताः येन छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासो भवेत्। अनेन पुस्तकेन सह छात्राः संस्कृतस्य भाषाप्रयोगे दक्षाः भवेयुः इति एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुम् अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

नवदेहली
मई, 2018

हृषीकेशः सेनापतिः
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

पुस्तक निर्माण समिति

सदस्य

आभा झा, *पी.जी.टी.* संस्कृत, गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली

कीर्ति कपूर, *प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

जगदीश सेमवाल, *सेवानिवृत्त निदेशक*, वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर

भास्करानन्द पाण्डेय, *सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य,* राजकीय सर्वोदय सह-शिक्षा विद्यालय, पश्चिम विहार नयी दिल्ली

लता अरोड़ा, *सेवानिवृत्त टी.जी.टी.* संस्कृत, केंद्रीय विद्यालय नं. 3, दिल्ली कैण्ट, नयी दिल्ली

विरेन्द्र कुमार, *टी.जी.टी.* संस्कृत, केंद्रीय विद्यालय नं. 9, फ़रीदाबाद

शंकर झा *टी.जी.टी.* संस्कृत, केंद्रीय विद्यालय नं. 2, फ़रीदाबाद

सरोज गुलाटी, *पी.जी.टी.* संस्कृत, कुलाची हंसराज मॉडल पब्लिक स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली

सरोज पुरी, *टी.जी.टी.* संस्कृत, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा, दिल्ली

समन्वयक एवं संपादक

के.सी.त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सहसमन्वयक एवं संपादक

जतीन्द्र मोहन मिश्र, *प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पुस्तक निर्माण समिति के सभी सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है। परिषद्, जगदीश चन्द्र काला एवं यासमीन अशरफ, *जे.पी.एफ.* संस्कृत (भाषा शिक्षा विभाग) एवं संपादन के लिए ममता गौड़ *संपादक-संविदा*, आरती, नरेश कुमार *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (प्रकाशन प्रभाग) के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने पाण्डुलिपि के प्रूफ़ संशोधन में विशेष सहयोग किया है। पुस्तक को यथासमय प्रकाशित करने के लिए परिषद् प्रकाशन प्रभाग के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

© NCERT not to be republished

भूमिका

व्याकरणशास्त्र अनादिकाल से भारतीय चिन्तन का अनिवार्य अङ्ग रहा है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक संस्कृत भाषा में लिखित शास्त्रों के सम्यक् अध्ययन, मनन एवं चिन्तन के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि व्याकरण भाषा को शुद्ध बनाकर उसका समुचित प्रयोग सिखाता है। व्याकरण शब्द (वि + आ + कृ + ल्युट्) से निष्पन्न है।

व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा: अनेन इति व्याकरणम्

अर्थात् शब्दों की व्युत्पत्ति करने वाले, प्रकृति एवं प्रत्यय का निर्धारण करने वाले तथा उनके शुद्ध स्वरूप का विवेचन करने वाले शास्त्र को व्याकरणशास्त्र कहते हैं। अति प्रचीन काल से शास्त्रों में व्याकरण का प्रमुख स्थान है – मुखं व्याकरणं स्मृतम्। संस्कृत भाषा में व्याकरणशास्त्र का जितना सूक्ष्म, तर्कपूर्ण एवं विस्तृत विवेचन हुआ है उतना विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं हुआ है। वेदों के सम्यक् अध्ययन, अर्थ-बोध तथा वेद-मंत्रों की व्याख्या के लिए वेदाङ्गों का ज्ञान अनिवार्य है। वेदाङ्ग 6 हैं —

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिण:।।

1. शिक्षा, 2. व्याकरण, 3. छन्द, 4. निरुक्त, 5. ज्योतिष, और 6. कल्प।

व्याकरण की सहायता से ही हम वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों के साथ-साथ भास, कालिदास, माघ, श्रीहर्ष, भवभूति, बाण एवं जगन्नाथ प्रभृति विद्वानों की कृतियों का रसास्वादन करते हैं।

व्याकरण ऐसी शक्ति प्रदान करता है जिसके द्वारा सारे श्रुत और अश्रुत शब्दों तथा पठित और अपठित वाङ्मय का रहस्य अल्पकाल में ही समझा जा सकता है। शब्दों का असन्दिग्ध ज्ञान व्याकरण से ही सम्भव है। धनवान् शब्द शुद्ध है या धनमान्, बुद्धिमती शब्द शुद्ध है या बुद्धिवती। इस प्रकार के सन्देह को वैयाकरण ही दूर कर सकता है।

संस्कृत व्याकरण की परम्परा

संस्कृत व्याकरण की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितनी वैदिक संहिता। तैत्तिरीय संहिता में उल्लेख है कि इन्द्र ने संस्कृत भाषा का प्रथम व्याकरण रचा। पतञ्जलि के महाभाष्य में संकेत मिलता है कि इन्द्र के पहले भी व्याकरणशास्त्र का अस्तित्व था। इन्द्र ने बृहस्पति से व्याकरण-विद्या का अध्ययन किया था—

"बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच।"

ऐन्द्र व्याकरण की अविच्छिन्न परम्परा का उल्लेख ऋक्तन्त्र में भी सुलभ है —

ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्राय, इन्द्रो भरद्वाजाय, भरद्वाज ऋषिभ्य:, ऋषय: ब्राह्मणेभ्यश्च।

© NCERT not to be republished

इससे प्रतीत होता है कि ऐन्द्र सम्प्रदाय व्याकरण का एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय था। इसके समकक्ष व्याकरणशास्त्र का एक दूसरा माहेश्वर-सम्प्रदाय भी था जिसके प्रवर्तक महेश्वर थे जिसकी आधारशिला पर पाणिनि ने व्याकरण के भव्य प्रासाद का निर्माण किया।

पाणिनि ने *अष्टाध्यायी* में आपिशलि, काशकृत्स्न, शाकल्य, स्फोटायन एवं शाकटायन आदि दस वैयाकरणों का नामोल्लेख किया है। इन्होंने अपने से पूर्ववर्ती सभी वैयाकरणों के ग्राह्य-विचारों और विवेचनों से परिपूर्ण-तत्त्वों को अपने ग्रन्थ में अपनाया है।

पाणिनि परम्परा के द्वितीय वैयाकरण *कात्यायन* हैं, जिन्हें *वररुचि* भी कहा जाता है। ये दाक्षिणात्य थे। इन्होंने पाणिनि द्वारा रचित लगभग 1250 सूत्रों पर आलोचनात्मक टिप्पणी दी है, जो *वार्तिक* के नाम से प्रसिद्ध हैं। वार्तिकों की संख्या प्राय: चार हज़ार है।

पाणिनि की व्याकरण परम्परा का परिवर्तन एवं परिवर्धन करने वाले महान् वैयाकरण पतञ्जलि हैं। इनका समय दूसरी शताब्दी ई.पू. है। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ *महाभाष्य* है।

व्याकरणशास्त्र में पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि को *त्रिमुनि* (मुनित्रय) संज्ञा से अभिहित किया गया है।

प्रक्रिया ग्रन्थ

टीकाओं और उपटीकाओं के बाद पाणिनीय सूत्रों की नवीन पद्धति की ओर वैयाकरणों का ध्यान आकर्षित हुआ। *धर्मकीर्ति ने रूपावतार* ग्रन्थ लिखा, जिसमें अष्टाध्यायी के सूत्रों को विभिन्न प्रकरणों में विभक्त कर सम्पादित किया गया है। सन् 1350 ई. में विमल सरस्वती ने *रूपमाला* और 1400 ई. में पं. रामचन्द्र ने *प्रक्रिया कौमुदी* नामक ग्रन्थ की रचना की। 1630 ई. के लगभग *भट्टोजिदीक्षित* ने वैयाकरण *सिद्धान्त कौमुदी* की रचना की। इस पर स्वयं *भट्टोजिदीक्षित* ने *प्रौढ़मनोरमा* नाम की टीका लिखी। सिद्धान्त कौमुदी पर नागेशभट्ट ने *लघुशब्देन्दुशेखर* नामक प्रौढ़ ग्रन्थ लिखा। सिद्धान्त कौमुदी की दो अन्य प्रसिद्ध टीकाएँ – *तत्त्वबोधिनी* और *बालमनोरमा* हैं। आचार्य वरदराज ने सिद्धान्तकौमुदी को संक्षिप्त करते हुए *सारसिद्धान्तकौमुदी, लघुसिद्धान्तकौमुदी* एवं *मध्यसिद्धान्तकौमुदी* की रचना की, जो व्याकरण के प्रारम्भिक छात्रों द्वारा क्रमश: व्याकरण अध्ययन के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ हैं।

उपर्युक्त समस्त ग्रन्थ प्राय: व्याकरण के व्युत्पत्ति पक्ष को लक्ष्य में रखकर लिखे गए हैं। व्याकरण के दार्शनिक पक्ष को लेकर लिखे गए ग्रन्थों में – भर्तृहरि का *वाक्यपदीय*, कौण्डभट्ट का *वैयाकरणभूषणसार* तथा नागेशभट्ट की *लघुमञ्जूषा* और *स्फोटवाद* प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

विद्यालयी शिक्षा की रूपरेखा के आलोक में माध्यमिक स्तर के लिए निर्धारित संस्कृत पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर कक्षा नवीं के छात्रों के लिए संस्कृत भाषा के सम्यक् अभ्यास हेतु इस अभ्यास पुस्तक की रचना की गई है। इसमें 12 अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में *अपठितावबोधनम्*, द्वितीय में *पत्रम् — (क) अनौपचारिकम् पत्रम्, (ख) औपचारिकम् पत्रम्*, तृतीय में *चित्रवर्णनम्*, चतुर्थ में *संवादानुच्छेदलेखनम्*, पंचम में *रचनानुवाद:*, षष्ठ में *कारकोपपदविभक्ति:*, सप्तम में *सन्धि:*, अष्टम में *उपसर्गाव्ययप्रत्यया:*, नवम में *समासा:*, दशम में *शब्दरूपाणि अकारान्त पुँल्लिङ्गशब्द:*, एकादश अध्याय में *धातुरूपाणि*

2021–22
© NCERT not to be republished

एवं द्वादश अध्याय में *वर्णविचार:* दिए गए हैं। पुस्तक के परिशिष्ट 1 में *'फलादीनां नामानि'* तथा परिशिष्ट 2 में *'विलोमपदानि'* एवं *'पर्यायपदानि'* को दिया गया है। इस तरह इस पुस्तक में कक्षा नवम के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप संस्कृत व्याकरण के आधारभूत नियमों का परिचय देते हुए उपयोगी अभ्यासचारिका द्वारा छात्रों में संस्कृत की समझ तथा भाषा प्रयोग को सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया गया है।

आशा है यह अभ्यास पुस्तक माध्यमिक स्तर पर नवम कक्षा के छात्रों को संस्कृत भाषा, व्याकरण एवं संस्कृत व्यवहार का अभ्यास कराने में सफल होगी।

© NCERT not to be republished

not to be republished

विषयानुक्रमणिका

पुरोवाक्		*iii*
भूमिका		*vii*
मङ्गलम्		*xii*
1.	अपठितावबोधनम्	1
2.	पत्रम्	13
	(क) अनौपचारिकम् पत्रम्	
	(ख) औपचारिकम् पत्रम्	
3.	चित्रवर्णनम्	24
4.	संवादानुच्छेदलेखनम्	34
5.	रचनानुवादः	46
6.	कारकोपपदविभक्तिः	59
7.	सन्धिः	86
8.	उपसर्गाव्ययप्रत्ययाः	92
9.	समासाः	109
10.	शब्दरूपाणि	113
11.	धातुरूपाणि	134
12.	वर्णविचारः	138
	परिशिष्टम्–1	142
	परिशिष्टम्–2	146

© NCERT not to be republished

मङ्गलम्

अभ्यासं कार्यसिद्ध्यर्थं
नित्यं कुर्वन्ति पण्डिता:।
संसारे सिद्धिमन्त्रोऽयं
तस्मादभ्यासवान्भव।।

कार्य की सिद्धि के लिए समझदार लोग नित्य अभ्यास करते हैं। यह (अभ्यास) संसार में सिद्धि (प्राप्त करने) का मंत्र है। इसलिए (तुम भी) अभ्यास करने वाले बनो।

अभ्यस्यामो वयं विद्यां
यावतीमधिकाधिकाम्।
तावदग्रे जगत्यस्मिन्
सरिष्यामो न संशय:।।

हम विद्या का जितना अधिक से अधिक अभ्यास करते हैं, संसार में उतना ही आगे बढ़ेंगे इसमें संदेह नहीं है।

© NCERT not to be republished

परिशिष्टम्-1

फलवर्ग (Fruits)

द्राक्षा	-	अंगूर
दाडिमम्	-	अनार
पेरुकम्	-	अमरुद
आम्रम्	-	आम
आम्रातकम्	-	आंवला
अम्लिका	-	इमली
कर्कटिका	-	ककड़ी
पनस:	-	कटहल
कदलीफलम्	-	केला
चर्भटि:/उर्वारुकम्	-	खीरा
खर्बूजम्	-	खरबूजा
खर्जूरम्	-	खजूर
जम्बीरम्	-	नींबू
सीताफलम्	-	शरीफा
नारङ्गम्	-	सन्तरा
लीचिका	-	लीची
बदरीफलम्	-	बेर
पीतकम्/पपीतम्/पपीतकम्	-	पपीता
आटतफलम्/रुचिफला	-	नाशपाती
नारिकेलम्	-	नारियल

शाकवर्ग (Vegetables)

आलुकम्	-	आलू
पलाण्डु:	-	प्याज
कारवेल्लम्	-	करेला
आलुकी	-	अरबी
कर्कटी	-	ककड़ी
कुन्दरु:	-	कुन्दरु

© NCERT not to be republished

कूष्माण्डम्	-	कुम्हड़ा
गृञ्जनम्	-	गाजर
कोशातकी	-	तरोई
पालक्या/पालकी	-	पालक
भिण्डक:	-	भिण्डी
मूलकम्	-	मूली
कलाय:	-	मटर
वृन्ताकम्	-	बैंगन
पटोलकम्/पटोल:	-	परवल
टमाटरम्	-	टमाटर
सिम्बा	-	सेम
श्वेतकन्द:	-	शलगम
शक्रकन्द:	-	शकरकन्द
वास्तुकम्	-	बथुआ
अलाबु	-	लौकी

वाहनों की सूची

लोकयानम्	-	बस
रेलयानम्	-	रेलगाड़ी
वायुयानम्	-	हवाईजहाज
वृषभयानम्	-	बैलगाड़ी
स्कूटरयानम्	-	स्कूटर
कारयानम्	-	कार
मोटरयानम्	-	मोटरगाड़ी
टेम्पोयानम्	-	टेम्पो
जलयानम्	-	स्टीमर
रुग्णवाहनम्	-	एम्बुलेंस
त्रिचक्रिका	-	रिक्शा
द्विचक्रिका	-	साईकिल
तेजस्विनी	-	स्कूटी

© NCERT not to be republished

अंगों के नाम

नेत्रम्	-	आंख
स्कन्ध:	-	कंधा
मस्तकम्/ललाटम्	-	माथा
बाहु:	-	बांह
पाद:	-	पैर
उदरम्	-	पेट
पृष्ठम्	-	पीठ
पक्ष्मन्	-	पलक
ओष्ठ:	-	ओठ
अधर:	-	नीचे के ओठ
नाभि:	-	नाभी
नख:	-	नाखून
नासिका	-	नाक
दन्त:	-	दाँत
श्मश्रू	-	दाढ़ी, मूँछ
चिबुकम्	-	ठोड़ी
जिह्वा	-	जीभ
उरु:	-	जांघ
वक्ष:	-	छाती
मुखम्	-	मुख
सीमन्त:	-	माँग
भ्रू:	-	भौं
जानु:	-	घुटना
कण्ठ:	-	गला
ग्रीवा	-	गर्दन
कपाल:	-	खोपड़ी
कफणि:	-	कोहनी
कर्ण:	-	कान
मणिबन्ध:	-	कलाई

© NCERT not to be republished

कटिः	-	कमर
अङ्गुष्ठः	-	अंगूठा
अङ्गुलिः	-	अंगुली
हस्तः	-	हाथ
करतलम्	-	हथेली
हृदयम्	-	हृदय

सम्बन्धवाचकशब्दाः

पितामहः	-	दादा
पितामही	-	दादी
मातामहः	-	नाना
मातामही	-	नानी
मातुलः	-	मामा
मातुलानी	-	मामी
भ्रातृजाया	-	भाभी
ननान्दा	-	ननद
श्वसुरः	-	श्वसुर
श्वश्रूः	-	सास
स्नुषा	-	नातिन/बहू
श्यालः	-	साला
श्याली	-	साली
पितृव्यः	-	चाचा
पितृव्या	-	चाची
पितृभगिनी	-	बुआ
मातृभगिनी	-	मौसी
आवुत्तः	-	जीजा
जामाता	-	दामाद
पौत्रः	-	पोता
दौहित्रः	-	नाती
भागिनेयः	-	भाँजा

© NCERT not to be republished

परिशिष्टम्-2

विलोमपदानि (Antonyms)

धनिक:	-	निर्धन:
कटु:	-	मधुरम्
मित्रम्	-	शत्रु:
विद्वान्	-	मूर्ख:
दानी	-	कृपण:
उद्यमी	-	अलस:
लाभ:	-	हानि:
प्रकाश:	-	अन्धकार:
समीपम्	-	दूरम्
ज्येष्ठ:	-	कनिष्ठ:
देव:	-	दानव:
रात्रि:	-	दिवस:
आय:	-	व्यय:
कीर्ति:	-	अपकीर्ति:
सार्थक:	-	निरर्थक:
सुलभ:	-	दुर्लभ:
सक्रिय:	-	निष्क्रिय:
अमृतम्	-	विषम्
जीवनम्	-	मरणम्
साकार:	-	निराकार:
स्वतन्त्रता	-	परतन्त्रता
जय:	-	पराजय:
स्तुति:	-	निन्दा
शोक:	-	हर्ष:
आस्तिक:	-	नास्तिक:
सज्जन:	-	दुर्जन:
संयोग:	-	वियोग:

© NCERT not to be republished

शीतम्	-	उष्णम्
स्वदेश:	-	विदेश:
उत्थानम्	-	पतनम्
मूक:	-	वाचाल:
कृतज्ञ:	-	कृतघ्न:
उपकार:	-	अपकार:
नवीन:	-	प्राचीन:
उदय:	-	अस्त:
नूतनम्	-	पुरातनम्
उचितम्	-	अनुचितम्
प्रत्यक्ष:	-	परोक्ष:
क्रय:	-	विक्रय:
आरोह:	-	अवरोह:
अग्रज:	-	अनुज:
दु:खित:	-	प्रसन्न:
कृष्ण:	-	श्वेत:
अद्य	-	श्व:
दिवस:	-	रात्रि:
अध:	-	उपरि
वक्र:	-	सरल:
क्लिष्ट:	-	सरल:

पर्यायवाचिन: शब्दा: (Synonyms)

नयनम्	-	चक्षु:, लोचनम्, नेत्रम्
कमलम्	-	पङ्कजम्, नीरजम्, सरोजम्
भूमि:	-	धरा, वसुधा, वसुन्धरा
नदी	-	सरिता, सलिला, तटिनी
जलम्	-	नीरम्, तोयम्, सलिलम्
खग:	-	खेचर:, पक्षी, विहङ्ग:
मेघ:	-	जलद:, घन:, वारिद:
भ्रमर:	-	मधुप:, भृङ्ग:, मधुकर:
रात्रि:	-	निशा, रजनी, यामिनी

© NCERT not to be republished

वृक्षः	-	तरुः, विटपः, पादपः
नारी	-	महिला, वनिता, कामिनी
समुद्रः	-	सागरः, जलधिः, रत्नाकरः
अश्वः	-	घोटकः, वाजी, तुरङ्गः
गजः	-	करी, द्विपः, कुञ्जरः
हस्तः	-	करः, पाणिः
पुत्रः	-	सुतः, आत्मजः, तनयः
गृहम्	-	आलयः, सदनम्, निकेतनम्
सेवकः	-	दासः, अनुचरः, भृत्यः
सरस्वती	-	भारती, वीणावादिनी, शारदा
सूर्यः	-	भानुः, भास्करः, आदित्यः
सिंहः	-	वनराजः, शार्दूलः, केसरी
पुष्पम्	-	सुमनः, कुसुमम्, प्रसूनम्
वनम्	-	काननम्, अरण्यम्, विपिनम्
चन्द्रमाः	-	मयङ्कः, शशीः, रजनीशः
पर्वतः	-	गिरिः, नगः, शैलः
गणेशः	-	गजाननः, एकदन्तः, गौरीपुत्रः
अमृतम्	-	सुधा, पीयूषम्, सोमः
लक्ष्मी	-	श्रीः, कमला, रमा
गङ्गा	-	भागीरथी, देवनदी
गगनम्	-	नभः, व्योम, अम्बरम्
इन्द्रः	-	शक्रः, देवेन्द्रः, सुरपतिः
अग्निः	-	अनलः, पावकः, वह्निः
वायुः	-	समीरः, अनिलः, पवनः
राजा	-	नृपः, भूपतिः, नरेशः
पुत्री	-	सुता, आत्मजा, तनया

© NCERT not to be republished

0975CH01

1

अपठितावबोधनम्

I. अधोलिखित-परिच्छेदं पठित्वा अभ्यासप्रश्नानाम् उत्तरं लिखत।

गोदावरीतीरे विशाल: शाल्मलीतरु: आसीत्। तत्र पक्षिण: निवसन्ति स्म। अथ कदाचित् रात्रौ कश्चिद् व्याध: तत्र तण्डुलान् विकीर्य जालं च विस्तीर्य प्रच्छन्नो भूत्वा स्थितश्च। प्रात:काले चित्रग्रीवनामा कपोतराज: सपरिवार: आकाशादेव तान् तण्डुलकणान् अपश्यत्। तत: कपोतराज: तण्डुललुब्धान् कपोतान् प्रत्याह— "कुतोऽत्र निर्जने वने तण्डुलकणानां सम्भव:। भद्रमिदं न पश्यामि। संभवत: कोऽपि व्याध: अत्र भवेत्। सर्वथा अविचारितं कर्म न कर्तव्यम्।" परं तस्य वचनं तिरस्कृत्य कश्चित् तरुण: कपोत: सदर्पमाह– आ:! किमेवमुच्यते—

वृद्धानां वचनं ग्राह्यमापत्काले ह्युपस्थिते।
सर्वत्रैवं विचारेण भोजनेऽप्यप्रवर्तनम् ।।

एतदाकर्ण्य सर्वे कपोता: तत्र उपविष्टा: जाले च निबद्धा: अभवन्। यतो हि– बहुश्रुता अपि लोभमोहिता: क्लिश्यन्ते।

अभ्यास:

(1) एकपदेन उत्तरत –

(क) आपत्काले केषां वचनं ग्राह्यम्? ....

(ख) विशाल: शाल्मलीतरु: कुत्रासीत्? ....

(ग) व्याध: कान् विकीर्य प्रच्छन्नो भूत्वा स्थित:? ....

(घ) सर्वथा कीदृशं कर्म न कर्तव्यम्? ....

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(क) कपोतराज: कान् प्रत्याह?

....

(ख) के कदा क्लिश्यन्ते?

....

(3) भाषिककार्यम् –

(क) 'विशाल: शाल्मलीतरु: आसीत्।' अत्र विशेषणपदं किम्?

....

© NCERT not to be republished

(ख) 'तरुण: कपोत: सदर्पम् आह' इति वाक्ये क्रियापदं चित्वा लिखत।

....

(ग) 'तत्र रात्रौ पक्षिण: निवसन्ति स्म', इति वाक्ये कर्तृपदं चित्वा लिखत।

....

(घ) 'वृद्ध:' इत्यस्य किं विलोमपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

....

(4) उपर्युक्तगद्यांशस्य उचितं शीर्षकं दीयताम्।

....

II. समय: अन्येषां वस्तूनाम् अपेक्षया अधिक: महत्त्वपूर्ण: मूल्यवान् च वर्तते। अन्यानि वस्तूनि विनष्टानि पुनरपि लब्धुं शक्यन्ते परं समयो विनष्टो न केनापि उपायेन पुन: परावर्तयितुं शक्यते।

जना: द्विधा समयस्य दुरुपयोगं कुर्वन्ति– व्यर्थयापनेन अकार्यकरणेन च। अनेके जना: कार्यसम्पादने समर्था: अपि निरर्थकं समयं यापयन्ति। इतस्तत: भ्रमन्ति, अप्रयोजनं गृहे-गृहे अटन्ति। ते तु नैव स्वार्थाय न च परार्थाय किञ्चित् कार्यं कुर्वन्ति। न धर्मम् आचरन्ति, न धनम् उपार्जयन्ति, तेषां जन्म निरर्थकं भवति। भूमिरपि एतादृशानां निष्क्रियाणां भारं वोढुं नेच्छति। ईदृशा: जना: कस्मै अपि न रोचन्ते न वा कश्चित् तेभ्य: आश्रयमेव दातुमिच्छति। ते यत्र-यत्र गच्छन्ति तत: एव बहिष्क्रियन्ते। पितरौ अपि एतादृशान् तनयान् न अभिनन्दत:।

अत: अस्माभि: आलस्यं विहाय सर्वदैव समयस्य सदुपयोग: कर्तव्य:।

© NCERT not to be republished

अभ्यास:

(1) एकपदेन उत्तरत—

(क) पितरौ एतादृशान् कान् नाभिनन्दत:? ....

(ख) क: विनष्ट: परावर्तयितुं न शक्यते? ....

(ग) का निष्क्रियाणां भारं वोढुं नेच्छति? ....

(घ) किं विहाय समयस्य सदुपयोग: कर्तव्य:? ....

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

(क) केषां जन्म निरर्थकं भवति?

....

(ख) अन्येषां वस्तूनामपेक्षया समय: किमर्थमधिक: महत्त्वपूर्ण: मूल्यवान् च?

....

(3) भाषिक-कार्यम् —

(क) 'यावान् काल: निरर्थक: गत: स: गत: एव' इति वाक्ये अव्ययपदं किम् इति चित्वा लिखत।

....

(ख) 'सदुपयोग:' इत्यस्य पदस्य किं विलोमपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

....

(ग) 'अनेके जना:' इत्यत्र विशेष्यपदं किम्?

....

(घ) 'पुत्रान्' इत्यस्य कृते गद्यांशे किं पदं प्रयुक्तम्?

....

(4) उपर्युक्तगद्यांशस्य उचितं शीर्षकं दीयताम्।

....

III. जयदेव: वेदशास्त्रज्ञ: सदाचारी वयोवृद्ध: च आसीत्। तस्य पुत्र: धनेश: विद्वान् पितृभक्तश्चासीत्। स: पितु: सकाशादेव वेदशास्त्राणाम् अध्ययनं करोति स्म। श्रद्धया च तं सेवते।

धनेश: सर्वदा अव्यवधानेन पित्रो: वचनं पालयति स्म। पित्रो: सेवायाम् अध्ययने चैव तस्य समय: गच्छति स्म। तस्य सेवया पितरौ सर्वदा स्वस्थौ प्रसन्नौ चास्ताम्। एतत्सर्वं दृष्ट्वा एकदा नगेन्द्र: नाम शिष्य: धनेशमपृच्छत्- हे धनेश! किं जीवनपर्यन्तम् एवमेव पितृसेवाया: कार्यं करिष्यसि? त्वं जीवनस्य किम् उद्देश्यम् मन्यसे? प्रश्नौ निशम्य धनेश: साश्चर्यम् उदतरत्- भो: मित्र! किं त्वं 'पित्रो: सेवया एव विज्ञानम्' इति सूत्रं न श्रुतवान्। अहं तयो: सेवया एव आत्मानं गौरवान्वितम् अनुभवामि।

कालक्रमेण धनेश: लोकविश्रुत: विद्वान् अभवत्।

अभ्यास:

(1) एकपदेन उत्तरत —

(क) धनेश: कयो: सेवायां समयं यापयति स्म? ....

(ख) क: विद्वान् पितृभक्तश्चासीत्? ....

(ग) क: धनेशं जीवनस्य अभिप्रायम् अपृच्छत्? ....

(घ) आचार्यस्य नाम किम् आसीत्? ....

© NCERT not to be republished

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) धनेशस्य समय: कथं गच्छति स्म?

....

(ख) नगेन्द्रस्य प्रश्नौ निशम्य धनेश: साश्चर्यम् किम् उदतरत्?

....

(3) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) 'तस्य पुत्र: धनेश:' इत्यत्र 'तस्य' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

....

(ख) 'श्रुत्वा' इति पदस्य किं समानार्थकपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

....

(ग) 'पितरौ सर्वदा स्वस्थौ प्रसन्नौ चास्ताम्' अत्र क्रियापदं चित्वा लिखत।

....

(घ) 'मातु:' इति पदस्य किं विलोमपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

....

(4) उपर्युक्तगद्यांशस्य उचितं शीर्षकं दीयताम्।

....

IV. अमर्त्यसेन: इति नाम एव संस्कृतमयम्। अस्य जन्म शान्तिनिकेतने अभवत्। शान्तिनिकेतनस्य संस्थापक: गुरुदेव: रवीन्द्रनाथठाकुर: अस्य नामकरणं कृतवान्। बालकस्य नामकरणं कुर्वन् स: उक्तवान् आसीत्- 'अमर्त्यसेन:' इत्येतत् पदं संस्कृत-मूलम्। शान्तिनिकेतने वसन् अमर्त्यसेन: संस्कृताभ्यासं कृतवान्। स: 'स्वपितामह: श्रीक्षितीशमोहनसेन इव संस्कृतस्य प्रसिद्ध: विद्वान् भवेयम्' इति इच्छति स्म। उच्च-शिक्षाप्राप्त्यर्थं स आंग्लदेशम् अगच्छत् तत्र 'अर्थशास्त्रस्य' विशदम् अध्ययनं कृत्वा प्राध्यापक: अभवत्। अध्यापन-समये स: अर्थशास्त्रविषयिणीं महतीं गवेषणाम् अकरोत्। अध्यापन-कार्यं समाप्य श्रीअमर्त्यसेन: भारतं प्रत्यावर्तत। भारत–सर्वकार: तस्य वैदुष्यं विद्वत्तां च समादृत्य तस्मै 'भारतरत्नम्' इति सम्मानं दत्तवान्। जयतु एष: संस्कृतपुत्र:, अर्थशास्त्री च।

अभ्यास:

(1) एकपदेन उत्तरत —

(क) अमर्त्यसेनस्य जन्म कुत्र अभवत्? ....

(ख) अमर्त्यसेनाय 'भारतरत्नम्' इति सम्मानं क: दत्तवान्? ....

(ग) अमर्त्यसेन: उच्चशिक्षार्थं कुत्र अगच्छत्? ....

(घ) अमर्त्यसेन: कुत्र संस्कृताभ्यासं कृतवान्? ....

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) अमर्त्यसेनस्य नामविषये रवीन्द्रनाथ: ठाकुर: किम् उक्तवान्?

....

(ख) अध्यापनसमये स: किं कृतवान्?

....

(3) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) 'अस्य जन्म शान्तिनिकेतने अभवत्।' इत्यस्मिन् वाक्ये 'अस्य' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

....

(ख) 'अमर्त्यसेन: संस्कृताभ्यासं कृतवान्।' गद्यांशेऽस्मिन् कर्तृपदं चित्वा लिखत।

....

(ग) 'अगच्छत्' इति क्रियापदस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

....

(घ) 'महतीं गवेषणाम्' अत्र विशेषणपदं किम्?

....

(4) उपर्युक्तगद्यांशस्य उचितं शीर्षकं दीयताम्।

....

V. विगतसप्ताहे अस्माकं विद्यालयपक्षत: शैक्षणिकयात्राप्रसङ्गे वयम् उज्जयिनीं प्रति अगच्छाम। उज्जयिनी भारतस्य इतिहास-धर्म-दर्शन-कला-साहित्य-योग-ज्योतिषादीनां केन्द्रम् अस्ति। अत्र स्थितस्य महाकालेश्वरस्य कारणेनापि अस्या: विशिष्टं महत्त्वम्। एषा अवन्तिका, विशाला, प्रतिकल्पा, कुमुदवती, स्वर्णशृंगा इति नामभिरपि शास्त्रेषु वर्णिता।

अत्रत्या वेधशालाऽपि अतिविशिष्टा। जना: वेधशालां 'यन्त्रभवनम्' इत्यपि वदन्ति। इयम् आंग्लभाषायाम् 'आब्ज़र्वेटरी' इत्यपि कथ्यते। शैक्षणिकयात्राप्रसंगात् अस्या: विशिष्टावलोकनम् अस्माभि: कृतम्। एषा वेधशाला उज्जयिन्या: दक्षिणभागे क्षिप्राया: उत्तरतटे उन्नतभूभागे स्थिताऽस्ति। कर्करेखा इत: एव निर्गता। इदं स्थानं गणितस्यापि आधारस्थलम्।

© NCERT not to be republished

अष्टादशशताब्द्यां राज्ञा जयसिंहेन ज्योतिषानुरागवशात् वेधशालाया: निर्माणं कारितम्। ग्रहाणां प्रत्यक्षवेधनाय जयसिंह: उज्जयिन्याम् काश्याम् देहल्याम् जयपुरे मथुरायां च वेधशालानां निर्माणम् अकारयत्।

वस्तुत: वेधशालां वीक्ष्य मनसि गौरवमनुभवामि यत् प्राचीनकालेऽपि अस्माकं पूर्वजानां गणितस्य ग्रहनक्षत्राणाञ्च ज्ञानम् अद्भुतं वैज्ञानिकञ्चासीत्।

अभ्यास:

(1) एकपदेन उत्तरत —

(क) वेधशाला कस्या: उत्तरतटे स्थिता अस्ति? ....

(ख) विद्यालयपक्षत: वयं कुत्र अगच्छाम? ....

(ग) वेधशालाया: एकम् अपरं नाम लिखत? ....

(घ) वेधशाला कस्य आधारस्थलम्? ....

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) जयसिंह: कुत्र-कुत्र वेधशालानां निर्माणम् अकारयत्?

....

(ख) उज्जयिनी केषां केन्द्रम् वर्तते?

....

(3) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) 'दृष्ट्वा' इत्यर्थे किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

....

(ख) 'उत्तरभागे' इति पदस्य विपरीतार्थपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

....

(ग) 'शैक्षणिकयात्राप्रसङ्गात् अस्या: विशिष्टावलोकनम् अस्माभि: कृतम्' - अत्र 'अस्या:' इति सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्?

....

(घ) 'अस्माकं पूर्वजानां ज्ञानम् अद्भुतं वैज्ञानिकञ्चासीत्' इत्यस्मिन् वाक्ये विशेष्यपदं किम्?

....

(4) उपर्युक्तगद्यांशस्य उचितं शीर्षकं दीयताम्।

....

© NCERT not to be republished

VI. पञ्चदश-शताब्द्यां निर्मितं 'लोधी गार्डन' इति प्रसिद्धम् उपवनं नवदेहलीक्षेत्रे स्थितमस्ति। नवति-प्रहल (arce)-परिमितं बृहदाकारकम् इदमुपवनम्। अत्र शताधिक-वर्षेभ्य: प्राचीना:पादपा: सन्ति। तेषु वटवृक्ष: अश्वत्थ: निम्ब: किंशुक: आम्रं देवदारु: इंगुदी: सिंसपा: आमलकवृक्ष: बिल्व: अर्जुन: च प्रमुखा: सन्ति। सरणिषु स्थिता: वृक्षा: दर्शकानां मनांसि हरन्ति।

प्रतिदिनं सहस्रश: जना: अत्र विहाराय आगच्छन्ति। लक्षश: खगाश्च अत्राश्रयं प्राप्नुवन्ति।

इदम् उपवनम् चतुर्भागेषु विभक्तम्। एकत्र पुष्पाराम: विराजते। अस्मिन् आरामे मुख्यतया पाटलं नवमल्लिका उत्पलं जपाकुसुमं शेफालिका बकुलपुष्पं रजनीगन्धा यूथिका च सन्ति।

पुष्पाणां शोभा दर्शकानां मन: प्रसादयति। मधुगन्धिन: भ्रमरा: पुष्पेषु डयन्ते। पुष्पेभ्य: मधुररसं नीत्वा मधुमक्षिका: मधुसञ्चयं कुर्वन्ति। अस्मिन् उपवने विद्युन्निर्झरा: वातावरणं मनोहरम् शीतलञ्च कुर्वन्ति। अत्र भ्रान्त्वा रुग्णा: अपि जना: स्वास्थ्यलाभं कुर्वन्ति। कदाचिदस्माभि: अत्र भ्रमणाय गन्तव्यमेव।

अभ्यास:

(1) एकपदेन उत्तरत –

(क) 'लोधीगार्डन' इति उपवनम् कति-भागेषु विभक्तम्? ....

(ख) भ्रमरा: कुत्र डयन्ते? ....

(ग) रुग्णा: जना: किं कृत्वा स्वास्थ्यलाभं कुर्वन्ति? ....

(घ) केषां शोभा दर्शकानां मन: प्रसादयति? ....

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(क) 'लोधी-गार्डन' इति नामके उपवने के प्रमुखा: वृक्षा: सन्ति?

....

(ख) पुष्पारामे उपलब्धानां केषाञ्चित् पुष्पाणां नामानि लिखत।

....

(3) यथानिर्देशम् उत्तरत –

(क) गद्यांशात् संख्यावाचकमेकं पदं चित्वा लिखत।

....

(ख) 'मधुगन्धिन: भ्रमरा:' अत्र किं विशेषणपदं प्रयुक्तम्?

....

(ग) 'स्वस्था:' इति पदस्य किं विलोमपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

....

(घ) 'सहस्रश: जना: भ्रमणाय आगच्छन्ति' अत्र कर्तृपदं किम्।

....

(4) उपर्युक्तगद्यांशस्य उचितं शीर्षकं दीयताम्।

....

VII. "अम्ब! अहमपि अनुजेन देवेशेन सह क्रीडितुं बहिर्गच्छामि, द्वारं पिधेहि कृपया।" पुत्र्या: इदं वच: निशम्य रमा स्वशैशवं प्राप्ता विचारमग्ना चाभवत्-यदा ममानुज: क्रीडनाय बहिर्गच्छति स्म तदा अहं स्वपितृभ्यां गृहकार्यार्थं पठनार्थं चैव प्रेरिता येनाऽहं गृहस्योत्तरदायित्वनिर्वाहे शिक्षाक्षेत्रे च श्रेष्ठाऽभवम्। परमद्यापि एका कुण्ठा मनसि यदा-कदा जायते यदहं पाठ्यसहगामिक्रियासु क्रीडासु वा कदापि उत्तमं प्रदर्शनं कर्तुं समर्था नाऽभवम्। अद्य मत्सदृश्य: नार्य: वायुयानं चालयन्ति ता: शिक्षिका: चिकित्सिका: अधिकारिण्य: प्रशासिका: वा भूत्वा गृहस्योत्तरदायित्वमपि निर्वहन्ति। क: दोष: आसीन्मम यत् निपुणा सत्यपि अहमेतादृशं किमपि कर्तुं नापारयम्। अस्तु तावत्! चिन्तयाऽलम्। अहं पुत्र्यै तादृश्य: सर्वा: सुविधा: अवश्यमेव प्रदास्यामि येन तस्या: मनसि एतादृश्या: कुण्ठाया: अवकाश: एव न स्यात्।

अभ्यास:

(1) एकपदेन उत्तरत—

(क) रमा काभ्यां गृहकार्यार्थं पठनार्थं च प्रेरिता? ....

(ख) रमा कस्यै सर्वा: सुविधा: प्रदास्यति? ....

(ग) रमाया: पुत्री केन सह क्रीडितुं बहिर्गच्छति? ....

(घ) रमा कस्य निर्वाहे श्रेष्ठा अभवत्? ....

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

(क) पुत्र्या: किं वच: निशम्य रमा स्वशैशवं प्राप्ता?

....

(ख) रमाया: मनसि यदा कदा कीदृशी कुण्ठा जायते?

....

(3) यथानिर्देशम् उत्तरत—

(क) 'एतादृश्या: कुण्ठाया: अवकाश: एव न स्यात्' -अत्र किं विशेष्यपदम्?

....

© NCERT not to be republished

(ख) 'मत्सदृश्य: नार्य:' वायुयानं चालयन्ति "इति वाक्ये किं कर्तृपदम्?

....

(ग) 'द्वारं पिधेहि कृपया' अत्र किं क्रियापदम्?

....

(घ) 'अस्तु तावत्' अनयो: पदयो: किम् अव्ययपदम्?

....

(4) उपर्युक्तगद्यांशस्य उचितं शीर्षकं दीयताम्।

....

VIII. नकुल: प्रतिदिनं प्रात: स्यूतकमादाय महाविद्यालयं गच्छति सायंकाले च कदा आगमिष्यति इति तु अनिश्चितम् एव। पितरौ एतत्सर्वं दृष्ट्वा आहतौ भवत:। पुत्रं बोधयितुञ्च प्रयत्नम् अकुरुताम् परं नकुल: किमपि न शृणोति। एकदा पुत्रं प्रबोधयन्ती माता रुदती वदति यत् धिङ् मम जीवितम्, यस्यां सूनुरपि अविश्वसिति, मनोगतं भावमेव न ज्ञापयति। मातु: एतादृशेन व्यवहारेण साश्रुनयन: पुत्र: वदति-मात:! अद्यत्वे मम मित्राणि मां मद्यपानाय प्रेरयन्ति। तै: सह अहमपि सानन्दं मद्यपानं धूमपानमपि च करोमि खाद्याखाद्यं च खादामि। बहुधा मित्राणि प्रति 'न' इति वक्तुमिच्छामि परमसमर्थ: एवात्मानं पश्यामि मित्रतावशात्। मात:! कर्तव्याकर्तव्यमपि विस्मृतं मया। दर्शय मां सन्मार्गम्। एवंभूतं पुत्रं स्नेहेन लालयन्ती माता तमबोधयत् यत्-'त्यज दुर्जनसंसर्गम्, समानशीलव्यसनेषु चैव सख्यं करणीयमिति'। मातु: वात्सल्यमयेन बोधनेन नकुल: दुर्जनसंसर्गं त्यक्तुं दृढनिश्चयं करोति।

अभ्यास:

(1) एकपदेन उत्तरत –

(क) 'धिङ् मम जीवितम्' इति का वदति? ....

(ख) कौ आहतौ भवत:? ....

(ग) माता पुत्रं किं त्यक्तुम् अकथयत्? ....

(घ) नकुल: मित्राणि प्रति किं वक्तुमिच्छति स्म? ....

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(क) नकुल: मित्रै: सह किं किं करोति स्म?

....

(ख) स्नेहेन लालयन्ती माता पुत्रं किं बोधयति?

....

© NCERT not to be republished

(3) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) 'अद्यत्वे मम मित्राणि मां मद्यपानाय प्रेरयन्ति'- अत्र किमव्ययपदम्?

....

(ख) 'साश्रुनयन: पुत्र: वदति' - अत्र किं विशेषणपदम्?

....

(ग) 'अनेकश:' इति पदस्य किं समानार्थकपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

....

(घ) गद्यांशे 'शत्रून्' इति पदस्य किं विलोमपदं प्रयुक्तम्?

....

(4) उपर्युक्तगद्यांशस्य उचितं शीर्षकं दीयताम्।

....

IX. एक: काष्ठहार: काष्ठान्यानेतुं वनमगच्छत्। तत्र सहसैव वृक्षध्वनिं श्रुत्वा तिष्ठति। वृक्ष: समीपस्थं कर्तितं वृक्षं दृष्ट्वा रुदन्निव वदति स्म, ह्य: एक: काष्ठहार: काष्ठाय मम मित्रस्य शरीरमच्छिनत्। छेदनेनास्य शरीरे व्रणान् दृष्ट्वातीव दु:खितोऽहम्। काष्ठानि नीत्वा स: तु आपणं गतवान् परं न कोऽप्यस्त्यत्र योऽस्य व्रणानामुपचारं करोतु। किमर्थं विस्मरन्ति जना: यदस्माकं शरीरं न केवलं काष्ठविक्रयणाय एवास्ति अपि तु वायो: शुद्धीकरणाय, कूहानाशनाय, आतपेन श्रान्तेभ्य: पथिकेभ्य:, पशुभ्यश्च छायाप्रदानाय, खगेभ्य: निवासाय, व्याधितेभ्य: औषधये, बुभुक्षितेभ्य: फलप्रदानाय चाप्यस्ति। काष्ठविक्रयेण तु केवलमेकवारमेव एकस्यैव लाभ: जायते परमनेन चिरकालपर्यन्तं विविधा: प्राणिन: निराश्रया: भवन्ति। फलौषधीनां प्राप्तिरपि दुर्लभा भवति। एवमेव एकैकं कृत्वाऽस्माकं सर्वेषां कर्तनेन वसन्तादीनाम् ऋतूनां महत्त्वमपि विलुप्तं भविष्यति। इदं सर्वं श्रुत्वा खिन्नमना: काष्ठहार: वृक्षकर्तनात् विरम्य वृक्षारोपणम् आरब्धवान्।

अभ्यास:

(1) एकपदेन उत्तरत —

(क) काष्ठहार: किं श्रुत्वा तिष्ठति? ....

(ख) वृक्षस्य वार्तां श्रुत्वा काष्ठहार: कीदृश: अभवत्? ....

(ग) काष्ठहार: काष्ठानि नीत्वा कुत्र गतवान्? ....

(घ) वृक्षा: कस्य शुद्धीकरणाय भवन्ति? ....

© NCERT not to be republished

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) वृक्ष: किमर्थं दु:खित: आसीत्?

....

(ख) वृक्षाणां कर्तनेन केषां महत्त्वं विलुप्तं भविष्यति?

....

(3) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) 'वृक्ष: समीपस्थं वृक्षं दृष्ट्वा रुदन्निव वदति'- अस्मिन् वाक्ये किं विशेषणपदम्?

....

(ख) 'आश्रिता:' इति पदस्य कृते किं विलोमपदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

....

(ग) 'विलोक्य' इत्यर्थे किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

....

(घ) 'ह्य: एक: काष्ठहार: मम मित्रस्य शरीरमच्छिनत्' - अत्र किम् अव्ययपदम्।

....

(4) उपर्युक्तगद्यांशस्य उचितं शीर्षकं दीयताम्।

....

X. विज्ञानस्य नवीनेषु आविष्कारेषु एक: अतीव उपयोगी आविष्कार: अस्ति- 'चलभाषियन्त्रम् (मोबाइल इति)। अस्य मुख्यं प्रयोजनमासीत् दूरवर्तिना केनापि जनेन सह वार्तालाप: सुकर: भवेत् इति। परमद्यत्वे तु चलभाषियन्त्रं लघुसङ्गणकमिव वर्तते। एवं प्रतीयते यत् जना: हस्ते एकं सम्पूर्णं जगत् एव नयन्त: गच्छन्ति। अनेन ते न केवलं संभाषणं कुर्वन्ति अपि तु वक्तारं साक्षात् पश्यन्त्यपि। ईमेल-फेसबुक-व्हाट्सएप-माध्यमै: एतदतीव सुकरं संदेशवाहकमपि।

अस्य माध्यमेन गमनागमनार्थं शीघ्रमेव वाहनं प्राप्य जना: सरलतया स्वगन्तव्यं प्राप्नुवन्ति। न केवलमेतदेव अपि तु एतत् यन्त्रं मनोरञ्जनकारि अपि। बाला:, वृद्धा: युवान: अस्य माध्यमेन विविधक्रीडाभि: मनोरञ्जनक्षमा: भवन्ति। परमेतदपि विचारणीयं यदस्य अधिकाधिकप्रयोग: हानिकर: भवति। 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' इत्यनुसृत्य अस्य यथावश्यकं प्रयोग: एव करणीय:।

© NCERT not to be republished

अभ्यास:

(1) एकपदेन उत्तरत —

(क) किम् अतीव सुकरं सन्देशवाहकम्? ....

(ख) जना: साक्षात् कं पश्यन्ति? ....

(ग) किं प्राप्य जना: स्वगन्तव्यं प्राप्नुवन्ति? ....

(घ) अस्य अधिकाधिकप्रयोग: कीदृश: भवति? ....

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) अस्य मुख्यं प्रयोजनं किमासीत्?

....

(ख) अस्य प्रयोगेण के कथं च मनोरञ्जनक्षमा: भवन्ति?

....

(3) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) 'लब्ध्वा' इत्यर्थे किं पदं गद्यांशेऽस्मिन् प्रयुक्तम्?

....

(ख) 'केनापि जनेन सह वार्तालाप: सुकर: भवेत्' इत्यत्र किं विशेषणपदम्?

....

(ग) 'अस्य यथावश्यकं प्रयोग: एव करणीय:' इति अत्र किं क्रियापदम्?

....

(घ) 'चलभाषियन्त्रं लघुसङ्गणकमिव वर्तते' इति अत्र किम् अव्ययपदम्।

....

(4) उपर्युक्तगद्यांशस्य उचितं शीर्षकं दीयताम्।

....

© NCERT not to be republished

0975CH02

2

पत्रम्

(क) अनौपचारिकम् पत्रम्

1. योगदिवसे आयोज्यमाने कार्यक्रमे अनुजस्य सहभागित्वं वर्णयत् पत्रम्।

जयपुरम्
17.11.2017

प्रिय अनुज,
सस्नेहं नमो नमः।

कुशली, कुशलं कामये। इदं विज्ञाय मम चेतः अतीव प्रसन्नताम् अनुभवति यद् भवान् योगदिवसम् उपलक्ष्य राजधान्याम् आयोजिते विशेषकार्यक्रमे भारतस्य प्रधानमन्त्रिणा सह योगासनानि करिष्यति। योगाः स्वास्थ्यस्य रक्षायाः सरलतमाः उपायाः सन्ति। सम्पूर्णविश्वं भारतीयस्य योगज्ञानस्य शिक्षणाय उत्सुकं दृश्यते। संयुक्तराष्ट्रसंघः (U.N.O) जूनमासस्य एकविंशति-तारिकां 'योगदिवसः' इति रूपेण घोषितवान्।

अनुज! योगासनानि रक्तचापं, हृदयरोगम्, अतिस्थूलतां, मधुमेहम् च निवारयति। त्वमपि प्रतिदिनम् अभ्यासं करोषि, अतः मन्ये तव स्वास्थ्यं सुदृढम् अस्ति एव। एवमेव उत्तरोत्तरम् उन्नतिं कुरु इति मे शुभकामना।

तव अग्रजः
रामकरणः
सी/104 वसन्तकुञ्जमः
जयपुरम्

© NCERT not to be republished

अभ्यासः—योगदिवसे आयोज्य कार्यक्रमे भगिन्याः सहभागित्वं वर्णयन्तः एकं पत्रं लिखत।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

(ख) औपचारिकम् पत्रम्

1. अवकाशार्थं प्रार्थना-पत्रम्।

सेवायाम्
श्रीमन्तः प्राचार्याः
केन्द्रीयविद्यालयः, जयपुरम्
राजस्थानम्
विषयः- दिनद्वयस्य अवकाशार्थं प्रार्थना-पत्रम्।
महोदयाः

सविनयं निवेदयामि यदहं भवतः विद्यालयस्य माध्यमिक-कक्षायाः छात्रः अस्मि। ह्यः विद्यालयात् गृहं गच्छन् अहं ज्वरग्रस्तः अभवम्। यदाहं चिकित्सकं प्रति गतः तदा चिकित्सकेन दिनद्वयस्य विश्रामाय परामर्शः प्रदत्तः।

अतः अहं विद्यालयम् आगन्तुम् असमर्थः अस्मि। कृपया मम प्रार्थनां स्वीकृत्य दिनद्वयस्य अवकाशं प्रदाय माम् अनुगृह्णन्तु भवन्तः इति।

भवताम् आज्ञाकारी छात्रः
राजीवः
नवमी 'ब'
क्रमाङ्कः-35

दिनाङ्कः-28.11.2017

क अवकाशार्थं प्राचार्यां प्रति प्रार्थनापत्रम् लिखत।

सेवायाम्
प्राचार्या
केन्द्रीयविद्यालयः रोहिणी,
दिल्ली
विषयः दिनद्वस्य अवकाशार्थं प्रार्थनापत्रम्
महोदये

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. भगिन्याः विवाहे गन्तुं प्रार्थना-पत्रम्।

सेवायाम्,
श्रीमन्तः प्राचार्याः
प्रतिभा-विकास-विद्यालयः
वसन्तकुञ्जः
नवदिल्ली
विषयः- भगिन्याः विवाहे गृहं गन्तुम् अवकाशार्थं प्रार्थना।
महोदयाः

सविनयं निवेदयामि यदहं नवमकक्षायाः छात्रः अस्मि। आगामिनः मासस्य द्वितीयायां तिथौ मम ज्येष्ठभगिन्याः विवाहः सुनिश्चितः अस्ति। वरयात्रा गाजियाबादतः आगमिष्यति। भगिन्याः शुभविवाहस्य अवसरे मम उपस्थितिः अनिवार्या अस्ति। अनुजः अस्मि इति कारणात् बहुकार्याणि मया करणीयानि।

कृपया मम स्थितिं विचार्य सप्ताहस्यैकस्य अवकाशं प्रदाय माम् अनुगृह्णन्तु। अध्ययनस्य अवशिष्टं कार्यम् अहम् अवकाशं समाप्य शीघ्रमेव पूरयिष्यामि।

भवताम् आज्ञाकारी शिष्यः,
जयदेवः
नवमी-'स'
क्रमाङ्कः-31

दिनाङ्कः-28.11.2018

क भ्रातु: विवाहे गमनाय प्रार्थना-पत्रम् लिखत।

सेवायाम्
प्राचार्या,
केन्द्रीय-विद्यालय: चमोली,

महोदये

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. भवान् अविनाश:। शैक्षिकभ्रमणाय अनुमतिं, व्ययार्थं धनं च प्रार्थयितुं पितरं प्रति मञ्जूषाया: सहायतया पत्रं लिखतु।

स्वाध्याये, भवान्, प्रथमसत्रीया, शैक्षिकभ्रमणस्य, अनुमति:, गन्तुम्, पञ्चशतरूप्यकाणि, प्रेषयन्तु, शीघ्रातिशीघ्रं, प्रतीक्षायाम्

छात्रावासत:

दिनाङ्क:...............................

पूज्यपितृचरणा:,
प्रणतीनां शतम्।

अत्र अहं कुशल: 1.......................................व्यापृत: अस्मि। आशासे 2.............................. अपि मात्रा सह आनन्देन निवसति। मम 3.......................................परीक्षा सम्पन्ना। परीक्षानन्तरं शिक्षकै: सह छात्राणां 4.......................................योजना अस्ति। यदि

भवत: 5...स्यात् तर्हि अहमपि तै: सह 6...
इच्छामि। सर्वै: एव गन्तुकामै: 7.. देयानि सन्ति। भवत: अनुमति: अस्ति चेत् पञ्चशतरूप्यकाणि शुल्काय, पञ्चशतरूप्यकाणि च मार्गव्ययार्थं 8..भवन्त:।

कृपया 9...स्वमन्तव्यं प्रकटयन् पत्रं लिखतु।

भवत: अनुमत्या: 10.. भवत: पुत्र:

अविनाश:

4. पर्वतीयसुषमाया: वर्णनं कुर्वन् स्वमित्रं नमितं प्रति सुमेशस्य पत्रम्।

प्रिय मित्र नमित,

सप्रेम नमो नम:।

अत्र कुशलं, तत्र अस्तु। दिसम्बरमासे अहं परिवारेण सह कश्मीरप्रदेशम् अगच्छम्। कश्मीरप्रदेशस्य सौन्दर्यं तु दर्शकान् आकर्षयति। विविधै: फलै: युक्ता: वृक्षा: प्रकृते: सौन्दर्यं वर्धयन्ति एव। सर्वत्र एव हरितिमा आसीत्। यत्र कुत्रापि दृष्टि: गच्छति तत्र प्रकृते: सुषमा एव दृश्यते स्म। कश्मीर-प्रदेशस्य डलसर: तु सर्वेषाम् आकर्षणस्य केन्द्रम् अस्ति। यदा अत्र हिमपात: भवति, तदा तस्य वर्णनं कर्तुं न कोऽपि समर्थ: अस्ति। कश्मीरप्रदेश: पृथिव्या: स्वर्ग: एव। यदा भवान् अत्र आगमिष्यति तदा मम कथनस्य सत्यतां ज्ञास्यति।

शेषं सर्वं कुशलम्।

मातापित्रो: चरणयो: प्रणामा:।

भवत: मित्रम्

सुमेश:

दिनाङ्क:-28.11.2018

5. दण्डशुल्कक्षमापनार्थं प्रधानाचार्यां प्रति पत्रम्।

परीक्षाभवनत:

दिनाङ्क:.............................

आदरणीया प्रधानाचार्या,

राजकीय: प्रतिभाविद्यालय:

दिल्ली-1100039

महोदये!

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् अहं भवत्या: विद्यालयस्य नवमकक्षाया: छात्र: अस्मि। ह्य: अहं विद्यालयम् विलम्बात् आगच्छम्। अत: अहं कक्षाध्यापिकया पञ्चाशद्रूप्यकै: दण्डित:।

मम गृहस्य आर्थिकस्थिति: सुदृढा नास्ति । अत: अहं शुल्कं दातुम् असमर्थ:। कृपया मम शुल्कं क्षमित्वा अनुगृह्णन्तु।

धन्यवाद:

भवत: शिष्य:

अमित:

क दण्डशुल्कक्षमापनार्थं प्रधानाचार्यं प्रति प्रार्थना-पत्रम् लिखत।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

6. 'ई-मनी' इत्यस्य महत्त्वं वर्णयन्त: पितरं प्रति पत्रं लिखत।

नवदिल्लीत:

दिनाङ्क: 17.01.2018

सम्मान्या: पितृचरणा:,

सादरं प्रणमामि।

भवत: पत्रम् प्राप्तम्। पत्रं पठित्वा अतीव प्रसन्नताम् अनुभवामि। जनन्या सह भवताम् अत्र आगमनम् अचिरेण भविष्यति इति ज्ञात्वा विशेष-प्रसन्नता जाता। अद्यैव अहम् ई.मनी इति माध्यमेन मार्गव्ययं प्रेषयामि। सद्य: एव नूतनतया भारतसर्वकारेण प्रवर्तित: एष: ई.माध्यम:

अतीव सरल:। भवान् स्व-कोषागारात् प्राप्तम् एटीएम कार्ड इति गृहीत्वा रेलस्थानकं गच्छतु। तत्र एकं कूटसंकेतं प्रदाय भवान् धनं प्राप्तुं शक्नोति।

ई. मनी माध्यमस्य अन्येऽपि लाभा: सन्ति। यथा-चौरस्य भयं न भवति, यत्र-कुत्रापि प्रेषणं सरलं भवति, सर्वकारस्य आदेशेन सर्वे विभागा: एतत् धनं स्वीकुर्वन्ति।

कृपया चिटिकां निर्माय आगमनतिथिं ज्ञापयतु। अहम् उत्सुकतया भवत: पत्रस्य प्रतीक्षां करोमि।

मातु: चरणयो: मे प्रणामा: निवेदनीया:।

भवत: सुपुत्र:

सत्यनारायण भारद्वाज:

क 'ई-मनी' इत्यस्य महत्त्वं वर्णयन्त: मातुलं प्रति पत्रं लिखत।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

7. अतिविश्वासात् हानि: इत्यधिकृत्य मित्राय मञ्जूषाया: सहायतया पत्रं लिखत।

अस्तु, पृष्टम्, कारणम्, परीक्षापरिणाम:, ईदृश:, मया, अतिविश्वास:, अन्य:, सर्वम्

परीक्षाभवनत:

दिनाङ्क:.........................

प्रिय मित्र!

नमो नम:

अत्र कुशलं तत्र 1...........................। भवता 2........................ यत् प्रथमसत्रपरीक्षायां मम परीक्षापरिणाम: कीदृश: अस्ति? प्रथमसत्रपरीक्षायां मम 3........................... आशानुकूल: न अस्ति। अस्य 4 .... अपि मया ज्ञातम्, मम स्वोपरि 5 .... एव आसीत् यत् अहं तु सर्वम् एव जानामि। कदाचित् 6 .... स्वोपरि विश्वास: मानवाय विनाशकारी भवति। अस्य दुष्परिणाम: 7 .... तु सोढ: परं कोऽपि 8 .... अस्य पात्रं न भवेत् इति कृत्वा कथयामि। कदापि स्वोपरि अतिविश्वास: न करणीय:। शेषं 9 .... कुशलम्। सर्वेभ्य: मम प्रणामा:।

भवत: मित्रम्

8. भवान् सुमित:। मञ्जूषायां दत्तै: पदै: सह योगस्य महत्त्वं वर्णयन् स्वमित्रम् अमितं प्रति पत्रं लिखतु।

योगस्य, आगता:, प्रभाव:, कार्यक्रमे, सिध्यति, प्रेरितान्, जना:, तै:

परीक्षाभवनत:

दिनाङ्क:.........................

प्रिय मित्र **अमित!**

सप्रेम नमो नम:।

अत्र कुशलं तत्र अस्तु। मम पिता योगदिवसे 1 ....प्रचारार्थं स्वक्षेत्रे आयोजनं कृतवान्। तस्मिन् 2 ....योगविद्यायां कुशला: अनेके 3 ....आगत्य स्वविचारान् प्रकटितवन्त:। एवं ते जनान् योगस्य जीवने स्वीकारार्थं 4 ....अपि

अकुर्वन्। योगेन किं किं 5 .... किं किं च प्राप्यते इति अपि 6 .... स्पष्टीकृतम्। तेषाम् उद्बोधकानां विचाराणाम् ईदृश: 7 .... जात: यत् ये अपि जना: तत्र 8 .... ते योगप्रक्रियां जीवने धारयितुं प्रतिज्ञाम् अकुर्वन्। यदि भवान् अपि अत्र स्यात् तदा स्वयं पश्येत्। अस्तु! शेषं सर्वं कुशलम्।

भवत: मित्रम्

सुमित:

9. भवान् प्रथमसत्रपरीक्षायाम् उत्तमाङ्कान् प्राप्तवान् इति वर्णयन् मित्रं प्रति मञ्जूषाया: सहायतया पत्रं लिखतु।

समयसारणीम्, सर्वम्, अस्तु, अङ्का:, अनुपालनम्, पृष्टम्, कारणम्, कारणात्, परीक्षापरिणाम:

परीक्षाभवनत:

तिथि: ....

प्रिय मित्र,

नमोनम:

अत्र कुशलं तत्र 1 ....। भवता 2 .... यत् प्रथमसत्रपरीक्षायां मम परीक्षापरिणाम: कीदृश: अस्ति? प्रथमसत्रपरीक्षायां मम 3 .... आशानुकूल: अस्ति। अस्य 4 .... एतत् अस्ति यत् मया नियमानाम् अनुपालनं कृतम्। खेलनस्य समये खेलनम्, पठनस्य समये पठनम् कृतम्। अस्मात् 5 .... मया परीक्षायां शोभना: 6 .... प्राप्ता:। सत्यम् एव एतत् यदि समयस्य 7 .... क्रियते तदा अस्य परिणामोऽपि शोभन: भवति। भवान् अपि एवं 8 .... पालयेत्। शेषं कुशलम्। सर्वेभ्य: मम प्रणामा:।

भवत: मित्रम्

10. अतिवृष्टे: कारणात् विषमं जीवनं यापयन्तं स्वमित्रं प्रति पत्रं लिखत।

दिल्लीनगरत:

दिनाङ्क:.................

प्रिय मित्र सुमित!

नमो नम:।

अत्र कुशलं, भवत: कुशलं कामये। समाचारपत्राद् ज्ञातं यत् चेन्नईनगरस्य जीवनम् अतिवृष्टिकारणात् कठिनं जातमस्ति। सर्वत्र मार्गेषु वीथिषु च जलप्लावनं दृश्यते। यातायातम् अपि प्रभाावितं जातमस्ति। भवान् अस्मिन् विषमे समये कथं जीवनं यापयति इति सूचयतु। अहम् भवत: चेन्नईनगरस्य अन्येषां जनानां च जीवनं पूर्ववत् सुकरम् स्यात् इति भगवन्तं प्रार्थये।

भवत: सर्वविधकुशलताया: कामनया सह...

भवत: मित्रम्
सिद्धार्थ:

क अतिवृष्टे: कारणात् विषमजीवनं यापयन्तीं स्वभगिनीं प्रति पत्रं लिखत।

....
....

....
....

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

....
....

© NCERT not to be republished

3

0975CH03

चित्रवर्णनम्

यहाँ ध्यातव्य है कि प्रत्येक चित्र के साथ दी गयी मञ्जूषा में प्रदत्त पद छात्रों की सहायता के लिए हैं, किन्तु उनका प्रयोग अनिवार्य नहीं है। छात्र स्वेच्छा से भी वाक्य संरचना कर सकते हैं।

1. अधोलिखितं चित्रं वर्णयन्तः संस्कृतेन पञ्चवाक्यानि लिखत—

मञ्जूषा

उद्यानम्, बालः, खेलतः, द्वौ, बाला, करोति, पश्यति, वृक्षः, चित्रम्, रचयति, उपविशति, दोलायाम्, पादकन्दुकम्

i. ....

ii. ....

iii. ....

iv. ....

v. ....

© NCERT not to be republished

2. अधोलिखितं चित्रं वर्णयन्तः संस्कृतेन पञ्चवाक्यानि लिखत—

मञ्जूषा

खेलन्ति, क्रीडाङ्गणे, वृक्षाः, बालाः, पादकन्दुकक्रीडा, पश्यन्ति, गृहम्

i. ....

ii. ....

iii. ....

iv. ....

v. ....

© NCERT not to be republished

3. अधोलिखितं चित्रं वर्णयन्तः संस्कृतेन पञ्चवाक्यानि लिखत —

मञ्जूषा

धावन्ति, प्रसन्नाः, सन्ति, हस्तौ, मेलयित्वा, कन्या, वेशभूषां, धारयन्ति, अस्ति, हसन्ति

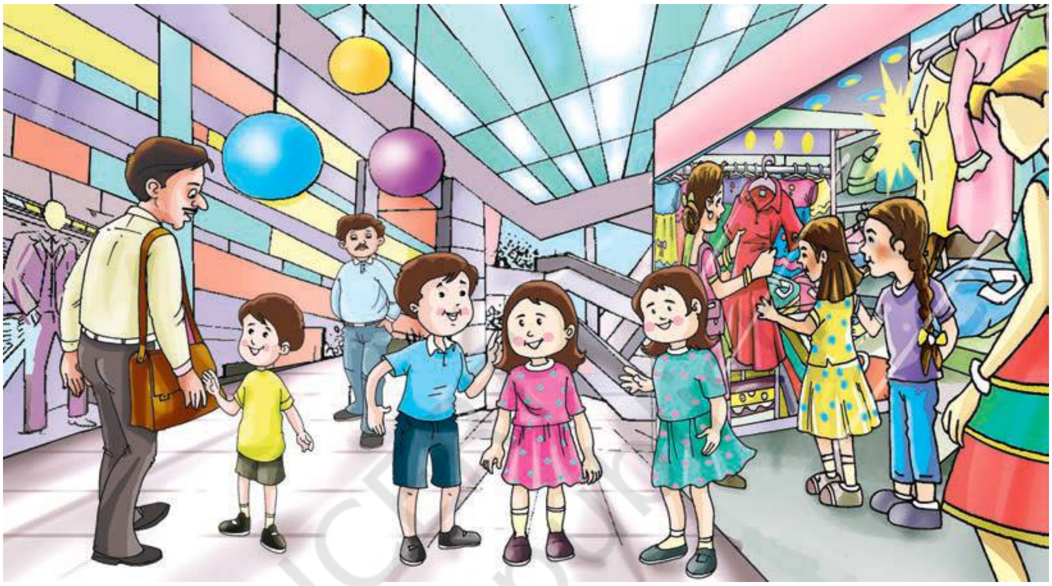

i. ....

ii. ....

iii. ....

iv. ....

v. ....

4. **अधोलिखितं चित्रं वर्णयन्तः संस्कृतेन पञ्चवाक्यानि लिखत —**

मञ्जूषा

बालः, पश्यतः, बालः, वृक्षः, हरितः, पुष्पे, पादपाः, पत्राणि, पश्यन्ति

i. ....

ii. ....

iii. ....

iv. ....

v. ....

© NCERT not to be republished

5. अधोलिखितं चित्रं वर्णयन्त: संस्कृतेन पञ्चवाक्यानि लिखत —

मञ्जूषा

शाकविक्रेता, कोलाहल:, समूह:, आकारयन्ति, कदली, आलुकम्, पलाण्डु, गृञ्जनम्, प्रयच्छन्ति, विक्रीणन्ति

i. ....

ii. ....

iii. ....

iv. ....

v. ....

6. अधोलिखितं चित्रं वर्णयन्तः संस्कृतेन पञ्चवाक्यानि लिखत —

मञ्जूषा

महाभारतम्, श्रीकृष्णः, अर्जुनाय, युद्धसमये, उपदेशान्, मोहात्, ददाति, कर्तव्यपालनम्, युद्धाय, सन्नद्धः

i. ....

ii. ....

iii. ....

iv. ....

v. ....

© NCERT not to be republished

7. अधोलिखितं चित्रं वर्णयन्त: संस्कृतेन पञ्चवाक्यानि लिखत —

मञ्जूषा

मुस्लिमधर्मावलम्बिन:, पालयन्ति, सेवई इति मिष्टान्नम्, नूतनवस्त्राणि, वर्धापनानि, आलिङ्गनं, धार्मिकं सौहार्दम्, उत्सव:, मानयन्ति, उपासनागृहम्

i. ....

ii. ....

iii. ....

iv. ....

v. ....

8. **अधोलिखितं चित्रं वर्णयन्त: संस्कृतेन पञ्चवाक्यानि लिखत —**

मञ्जूषा

ईसामसीहः, जन्म, दिसम्बरमासस्य, केक इत्याख्यं मिष्टान्नम्, नूतनवस्त्राणि, गिरिजागृहम्, उपासनापद्धतिः, शैत्यम्, सिक्थवर्तिका, सान्ताक्लॉज इति, उपहारान् वाञ्छन्ति

i. ....

ii. ....

iii. ....

iv. ....

v. ....

© NCERT not to be republished

9. अधोलिखितं चित्रं वर्णयन्तः संस्कृतेन पञ्चवाक्यानि लिखत —

मञ्जूषा

चलचित्रम्, जनाः, सम्मर्दः, चलचित्रपटः, उत्सुकाः, चिटिकम्, खाद्यसामग्री, मध्यान्तरम्, भारतम्, पश्यन्ति

i. ....

ii. ....

iii. ....

iv. ....

v. ....

© NCERT not to be republished

10. अधोलिखितं चित्रं वर्णयन्त: संस्कृतेन पञ्चवाक्यानि लिखत —

मञ्जूषा

भारतद्वारम्, सैनिका:, गणतन्त्रदिवस:, पथिसञ्चलनम्, ध्वजोत्तोलनम्, भवति, राष्ट्रियपर्व, अवकाश:, जनसम्मर्द, सैनिका:

i. ....

ii. ....

iii. ....

iv. ....

v. ....

© not to be republished

0975CH04

4

संवादानुच्छेदलेखनम्

1. अधोलिखितसंवादं मञ्जूषाप्रदत्तवाक्यैः पूरयत —

लता – राधिके ! प्रात:काले एव सज्जीभूय कुत्र गन्तुं सन्नद्धा ?

राधिका–1 ....

लता – विद्यालयम् ! अस्यां वेशभूषायाम्? तव गणवेश: कुत्राऽस्ति ?

राधिका–2 ....

लता – अहा ! काव्यालिस्पर्धा ! बहुशोभनम्। स्पर्धा तव विद्यालये एव अस्ति उत अपरस्मिन् विद्यालये ?

राधिका – 3 ....

लता – त्वम् प्रतियोगितायां सम्यग्रूपेण प्रस्तुतिं कुर्या: इति मम शुभकामना।

राधिका – 4 ....

लता– 5 ....

मञ्जूषा

(क) शुभास्ते सन्तु पन्थान:।
(ख) अहं विद्यालयं गच्छामि।
(ग) धन्यवाद: भगिनि।
(घ) विद्यालये नास्ति स्पर्धा, वयं शिक्षिकया सह अपरं विद्यालयं गमिष्याम:।
(ङ) अद्य काव्यालि-प्रतियोगिता अस्ति, अहं प्रतियोगितायां भागं ग्रहीतुं सज्जीभूय गच्छामि।

उत्तरसंकेत: – 1-ख, 2-ङ, 3-घ, 4-ग, 5-क

2. अधोलिखितसंवादं मञ्जूषाप्रदत्तवाक्यैः पूरयत —

राहुल: – अभिनव ! नमो नम:! चिरात् दृष्टोऽसि?

अभिनव– 1..

© NCERT not to be republished

राहुल: – अभिवादये तरुण ! भवता सह मिलित्वा प्रसन्नोऽस्मि।

तरुण: – 2..

राहुल: – भवान् किं करोति ?

तरुण: – अहं संस्कृतसाहित्ये स्नातकोत्तरपरीक्षां संपाद्य आगतोऽस्मि।

राहुल: – 3..।

तरुण: – किमर्थम्?

राहुल: – 4..

तरुण: – संस्कृतपठनेन सह वैज्ञानिकप्रविधीनाम् उपयोगे न कोऽपि दोष:? अहं तु सर्वाणि वैज्ञानिकोपकरणानि उपयुञ्जे।

राहुल: – शोभनम्। 5..

(क) भवान् आधुनिकै: वस्त्रै: सज्ज:, बहुमूल्यं च चलदूरभाषयन्त्रं धारयन् आधुनिक इव प्रतीयते।

(ख) मम मनस: भ्रान्तिरियम् अपगता यत् संस्कृताध्येतार: रूढिवादिन: भवन्ति।

(ग) अहमपि प्रसन्नोऽस्मि।

(घ) परं भवन्तं दृष्ट्वा तु न प्रतीयते यत् भवान् संस्कृतच्छात्र:।

(ङ) अहं मातुलगृहं गतवान् आसम्। अयं मम मातुलपुत्र: तरुण:। एनम् मिलतु।

मञ्जूषा

3. अधोलिखितसंवादं मञ्जूषाप्रदत्तवाक्यै: पूरयत —

माता – पुत्र! त्वम् अधुना किं पठसि?

पुत्र: – 1..

माता – काऽपि परीक्षा अस्ति संस्कृतस्य किम् ?

पुत्र: – मात:! 2..

माता – अतीव शोभनम् ! अभ्यासं कृत्वा सोत्साहं स्पर्धायां भागग्रहणं कुरु।

पुत्र: – 3..

माता – प्रथमं श्लोकानाम् अर्थान् अवबोध, तत: स्मरणं कुरु। एवम् न विस्मरिष्यसि।

पुत्र: – 4..

© NCERT not to be republished

माता – आगच्छ पुत्र ! अहम् सर्वेषां श्लोकानाम् अर्थमपि अवबोधयामि, सस्वरवाचनं चापि शिक्षयामि।

पुत्रः – (प्रसन्नतया) 5 ....

(कथयित्वा आलिङ्गति)

मञ्जूषा

(क)	मातः! अतीव स्नेहमयी असि त्वम्। अहं त्वयि भृशं स्निह्यामि।
(ख)	परमहं श्लोकान् स्मृत्वा अपि विस्मरामि। न जाने कीदृशी प्रस्तुतिः भविष्यति?
(ग)	मातः! मां श्लोकानाम् अर्थान् अवबोधय।
(घ)	परश्वः संस्कृतश्लोकोच्चारण-प्रतियोगिता वर्तते।
(ङ)	अहं संस्कृत-श्लोकान् कण्ठस्थीकरोमि।

4. अधोलिखितसंवादं मञ्जूषाप्रदत्तवाक्यैः पूरयत –

मोहनः – नमो नमः पितृव्य! कथमस्ति भवान्?

पितृव्यः – अहम् सम्यक् अस्मि। अपि यूयं स्वस्थाः स्थ?

1 ....

मोहनः – आम् पितृव्य! प्रदूषणस्य स्थितिः तु गभीरा सञ्जाता। अत एव

2 ....

पितृव्यः – अवकाशः! परमनेन किं भविष्यति?

3 ....

मोहनः – इदं तु सत्यम्। सर्वकारः प्रदूषणनिवारणाय अन्यानपि उपायान् करोति।

पितृव्यः– 4 ....

मोहनः – आम् पितृव्य! सर्वकारेण तु अनेके उपायाः कृताः। जनाः सार्वजनिकवाहनानां प्रयोगाय प्रेरिताः, समविषमनियमानां प्रयोगेण वाहनयातायातं न्यूनीकरणीयम् इति च निर्दिष्टम्।

पितृव्यः – वत्स! त्वमपि स्वास्थ्यरक्षणाय तत्परो भव।

5 ....

© NCERT not to be republished

मञ्जूषा

(क)	प्रदूषणस्य दुष्प्रभावः तु बालैः सह वयस्कानामपि स्वास्थ्ये भवति।
(ख)	सर्वकारेण सह सामान्यजनैः अपि प्रदूषणवारणस्य प्रयत्नः करणीयः।
(ग)	अपरिहार्यस्थितौ एव गृहात् बहिः गच्छ। यावत् वायौ हानिकारकाणि तत्त्वानि सन्ति, तावत्पर्यन्तं गृहे तिष्ठ।
(घ)	देहल्यां पर्यावरणप्रदूषणेन स्थितिः भयङ्करी अस्ति इति श्रुतं मया।
(ङ)	विद्यालयेषु अपि त्रिदिवसीयः अवकाशः घोषितः।

5. अधोलिखितसंवादं मञ्जूषाप्रदत्तवाक्यैः पूरयत –

रमेशप्रसादः–अभिवादये महोदय!

प्रधानाचार्यः–नमो नमः, किमागमनप्रयोजनम्?

रमेशप्रसादः–1 ....

प्रधानाचार्यः–परं सत्रस्य मध्ये प्रवेशः कथं संभवो भविष्यति?

रमेशप्रसादः–2 ....

प्रधानाचार्यः–अस्तु, पश्यामि अहं किं कर्तुं शक्नोमि? भवान् किं करोति? छात्रस्य माता वा किं करोति?

रमेशप्रसादः–3 ....

प्रधानाचार्यः– सा शिक्षिता अस्ति न वा ?

रमेशप्रसादः– 4 ....

प्रधानाचार्यः– इदं तु बहुशोभनम्। शिक्षिता माता 5 ....

मञ्जूषा

(क)	अहं केन्द्रसर्वकारे वित्तविभागे सहायकाधिकारी अस्मि। मम पत्नी एका गृहिणी अस्ति। सा गृहस्य सर्वाणि कार्याणि सम्पादयति।
(ख)	शिशोः आचारव्यवहारेण समं शैक्षिकप्रगतेः अपि अवधानं कर्तुं समर्था भवति।
(ग)	अहं भवतां विद्यालये स्वपुत्रस्य प्रवेशार्थम् निवेदनं कर्तुम् आगतोऽस्मि।
(घ)	अहं स्थानान्तरितो भूत्वा अत्रागतोऽस्मि, अत एव सत्रस्य मध्ये प्रवेशार्थं प्रार्थये।
(ङ)	आम् महोदय! सा स्नातकपरीक्षोत्तीर्णा अस्ति।

© NCERT not to be republished

6. अधोलिखितसंवादं मञ्जूषाप्रदत्तवाक्यैः पूरयत –

प्रवीरः – मनोज-महोदय! चिन्तित इव प्रतीयसे? किं कारणं खलु?

मनोजः – 1...

अहम् तस्य व्यवहारेण उद्विग्नतामनुभवामि।

प्रवीरः – किं सः आरम्भतः एव उद्दण्डः आसीत्?

मनोजः – 2...

न जाने इदानीं सः किमर्थम् एवम् आचरति? इति न जाने।

प्रवीरः – 3...

मनोजः – कक्षायां पञ्चाशत् छात्राः भवन्ति। किम् एकैकस्योपरि ध्यानं संभवमस्ति?

प्रवीरः – 4...

परम् यदि कोऽपि असामान्यमाचरति, तर्हि तस्य व्यवहारोपरि तु अवधानं दातव्यमेव।

मनोजः – शोभनं कथयसि 5...

मञ्जूषा

(क) किं त्वं तस्य परिवर्तितव्यवहारस्य कारणम् अन्विष्टवान्?
(ख) सर्वेषामुपरि तु व्यक्तिगतावधानं न संभवम्।
(ग) अहं मनोवैज्ञानिकरीत्या तस्य व्यवहारस्य कारणं ज्ञास्यामि।
(घ) द्वित्रेभ्यः मासेभ्यः एकः छात्रः उद्दण्ड इव आचरति।
(ङ) न, न, सः तु अतीव विनयशीलः आसीत्।

7. अधोलिखितसंवादं मञ्जूषाप्रदत्तवाक्यैः पूरयत –

शुभङ्करः – माधवि! त्वम् अल्पाहारार्थं किम् आनीतवती असि?

माधवी – 1...

अनुरागः– अहम् ओदनं द्विदलं च आनीतवान् अस्मि।

शुभङ्करः– मम माता मह्यं रोटिकां तुम्बीफलशाकं च दत्तवती, परम्

2...

लता – मम पार्श्वे आलुकस्य चिप्स इति पर्पटाः शीतलपेयं चास्ति।

3 ....

शुभङ्करः – आम्, मह्यं शीतलपेयं रोचते।

आशीषः– 4 ....

किं विस्मृतं त्वया यत् चिप्सादिकानि जंक इति भोज्यवस्तूनि स्वास्थ्याय हितकराणि न भवन्ति।

शुभङ्करः – यद्वस्तु अस्मभ्यं न रोचते, तत् वयं कथं खादेम?

आशीषः– सर्वदा तथ्यमिदं स्मरणीयं यत् 5 ....

....

मञ्जूषा

(क)	अद्यैव शिक्षिका संतुलिताहारविषये पाठितवती।
(ख)	मम अल्पाहारपात्रे रोटिका, पनसशाकं चास्ति।
(ग)	मह्यं न रोचते रोटिका, शाकं च।
(घ)	रुचिकरं भोजनं सर्वदा स्वास्थ्यप्रदं न भवति।
(ङ)	किं तुभ्यं रोचते?

8. अधोलिखितसंवादं मञ्जूषाप्रदत्तवाक्यैः पूरयत –

आचार्यः– प्रणव! किं त्वं स्वजीवनलक्ष्यं निर्धारितवान्?

प्रणवः – आम् गुरवः। 1 ....

आचार्यः– शोभनम्, तर्हि चिकित्सको भूत्वा जनसेवां करिष्यसि।

2 ....

प्रणवः – महोदय! चिकित्साक्षेत्रे बहुधनार्जनस्यापि अवसरः प्राप्यते।

3 ....

आचार्यः– किम् धनार्जनाय विदेशगमनमेव तव जीवनोद्देश्यम्?

4 ....

प्रणव: – आचार्य! किं स्वप्रतिभाया: उपयोगं कृत्वा सुविधाकांक्षा नोचिता?

आचार्य:– अनुचिता नास्ति सुविधानां धनानां च इच्छा, परं

5 ....

मञ्जूषा

(क) स्वदेशं प्रति स्वकर्तव्यस्य उपेक्षा न करणीया।
(ख) अहं चिकित्साविज्ञानं पठिष्यामि।
(ग) भारते अध्ययनं कृत्वा विदेशं पलायिष्यसे? किमिदम् उचितम्?
(घ) उत्तमं जीवनलक्ष्यम्।
(ङ) अहं तु चिकित्सको भूत्वा विदेशे जीवनं यापयिष्यामि इति मम मनसि बलवती इच्छा अस्ति।

9. अधोलिखितसंवादं मञ्जूषाप्रदत्तवाक्यै: पूरयत –

प्रवीर: – श्व: अस्माकं समावर्तनसंस्कार: (*farewel ceremony*) अस्ति। न जाने कथं द्रुतगत्या वर्षाणि व्यतीतानि।

अतुल: – 1 ....

प्रवीर: – अहं तु अभियन्त्रविज्ञानं पठिष्यामि।

देवेश: – मया तु चिकित्साविज्ञानं पठिष्यते।

नीलिमा– 2 ....

वैष्णवी – अहं "मधुबनीचित्रकला" इत्यस्य प्रशिक्षणं प्राप्य कुटीरोद्योगं चालयिष्यामि। मह्यं चित्रांकनम् अतीव रोचते।

अतुल: – 3 ....

मण्डन: – अस्मिन् कीदृशम् आश्चर्यम् ? 4 ....

....

देवेश: – त्वमपि मण्डन! तव गणितक्षेत्रे दक्षतां दृष्ट्वा त्वयि भविष्यस्य गणितज्ञं पश्यामि अहम्। त्वं कृषिकार्यं करिष्यसि ?

मण्डन: – 5 ....

अवनीश:– सम्यक् कथितम्। अधुना तु सर्वकारेण भूमिस्वास्थ्यपत्रम् *(soil health card)* अपि प्रदीयते, येन भूमिस्वास्थ्यपरीक्षणं भवति।

सर्वे – भूमे: अपि स्वास्थ्यस्य परीक्षणम्? (हसन्ति)

अवनीश: – अथ किम् ? भूमे: अपि स्वास्थ्यपरीक्षणं कर्तव्यम्।

मञ्जूषा

(क) द्वादशकक्षानन्तरं त्वं कस्मिन् क्षेत्रे भविष्यनिर्माणं करिष्यसि?
(ख) अथ किम्? वैज्ञानिकरीत्या कृषिकार्यं कृत्वा अहं देशस्य कृषिसम्पद: विकासे योगदानं करिष्यामि।
(ग) अहो महदाश्चर्यम्! कक्षाया: सर्वाधिका मेधाविनी छात्रा चित्रकलाक्षेत्रे भविष्यनिर्माणं करिष्यति?
(घ) अहं वस्त्रालंकरणविज्ञानं पठिष्यामि।
(ङ) अहमपि कृषिविज्ञानं पठित्वा कृषिकार्यं करिष्यामि।

10. अधोलिखितं संवादं मञ्जूषाप्रदत्तवाक्यै: पूरयत –

(विद्यालयात् गृहम् आगच्छति अभिषेक:)

अभिषेक:– मात:! गृहात् बहि: अवकर: प्रक्षिप्त: अस्ति। क: प्रक्षिप्तवान् अवकरम्?

माता – 1 ....
किमभवत्? त्वं किमर्थं पृच्छसि?

अभिषेक:– मात:! किं गृहाभ्यन्तरं मार्जनेन एव स्वच्छताकार्यं समाप्यते खलु?

माता – 2 ....

अभिषेक:– मात:! मार्गमुभयत: अवकराणां पर्वत इव दृश्यते, तस्य मालिन्यम् अस्माकं श्वसनतन्त्रे अवरोधं जनयति। एते 3 ....
....
अत एव अस्माभि: अस्माकं परिवेश: स्वच्छ: करणीय:।

माता – त्वं सुष्ठु भणसि। परं किमहमेकाकिनी एव मार्गस्य परिष्करणं करवाणि?

अभिषेकः– 4 ....

माता – शोभनं वत्स! परं सद्यः एव तव मनसि स्वच्छतायाः संकल्पः कथम् उद्भूतः?

अभिषेकः– 5 ....

मञ्जूषा

(क) अवकराः अनेकान् रोगान् अपि जनयन्ति।

(ख) वयम् आरम्भं कुर्मः। शनैः शनैः अन्ये अपि अस्मिन् पावनकर्मणि सहयोगिनः भविष्यन्ति।

(ग) अद्य विद्यालये स्वच्छताया महत्त्वविषये आचार्या पाठितवती।

(घ) सर्वे स्वगृहमेव परिष्कुर्वन्ति।

(ङ) अहमेव गृहस्य मार्जनं कृत्वा अवकरं बहिः प्रक्षिप्तवती।

11. स्वस्य भ्रात्रा, भगिन्या अथवा मित्रेण सह संवादं पञ्चवाक्यैः स्वशब्दैः लिखत।

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

© NCERT not to be republished

अनुच्छेदलेखनम्
(श्रवण-भाषण-कौशल-विकासार्थम्)

1. मम परिचय:

मम नाम अनुश्री: अस्ति। अहं त्रयोदशवर्षीया बालिका अस्मि। अहं राजकीय-विद्यालये नवम-कक्षायां पठामि। अहम् चेन्नईनगरे निवसामि। मम गृहे मम पितरौ, ममानुज: च सन्ति। सर्वे मयि स्निह्यन्ति। अध्ययनक्षेत्रे विज्ञानविषय: मे अतीव रोचते। सममेव चित्राङ्कने अपि मम अभिरुचि: अस्ति। भाषासु संस्कृतभाषा मे प्रिया। तत्र वाक्यसंयोजनकाले शब्दरूपधातुरूपप्रयोगे अहम् आनन्दमनुभवामि। भविष्ये चित्रकारिताक्षेत्रे नैपुण्यमधिगमिष्यामीति मे जीवनलक्ष्यम्।

निर्देश:—

अध्यापक: कक्षायाम् आत्मपरिचयस्य आदर्शवाचनं कुर्यात्, छात्राश्च तत् श्रुत्वा स्वपरिचयरूपेण कानिचित् वाक्यानि लिखेयु:।

....

....

....

....

2. पर्यावरण-प्रदूषणम्

अद्यत्वे भारतस्य राजधान्या: देहल्या: वातावरणम् अतीव प्रदूषितं सञ्जातमस्ति। सर्वत्र वायौ विषाक्तानि तत्त्वानि, यथा कार्बनमोनोऑक्साइड, सल्फर ऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन, अमोनिया इत्यादीनि व्याप्तानि सन्ति येन जनानां स्वास्थ्योपरि दुष्प्रभाव: भवति। प्रात: सायं च वातावरणे कूहा भवति। अधिसङ्ख्यका: जना: श्वासरोगेण ग्रस्ता: भवन्ति, नेत्रयो: दाह: अपि अनुभूयते। पर्यावरणप्रदूषणस्य कारणानि औद्योगिकसंस्थानां बाहुल्यम्, वाहनेभ्य: निर्गता: धूमा:, पलालस्य ज्वालनेन निर्गता: धूमा:, स्फोटकपदार्थानां ज्वालनम् इत्यादीनि सन्ति। सर्वकार: अपि अनेका: नीती: निर्माय प्रदूषणस्तरं न्यूनीकर्तुं प्रयत्नशीलोऽस्ति परम् अस्माभि: अपि एवं प्रयतितव्यम् येन पर्यावरणं प्रदूषितं न भवेत्।

© NCERT not to be republished

निर्देश:—

अध्यापक: अनुच्छेदस्यास्य आदर्शवाचनं कुर्यात्। अनन्तरं छात्रा: अपि अनुवाचनं कुर्यु:। प्रदूषणनिवारणार्थं स्वविचारान् अपि लिखेयु:।

....

....

....

....

....

....

3. अनुशासनम्

जीवने अनुशासनस्य अत्यधिकं महत्त्वं भवति। अनुशासनपालनेन अस्माकं व्यक्तित्वस्य सन्तुलित: विकास: भवति। समयपालनस्य प्रवृत्ति: विवर्धते। समयपालनेन च सर्वाणि कार्याणि समयेन भवन्ति। अनेन सामाजिकताया: अपि विकास: भवति। कर्तव्याकर्तव्यस्य ज्ञानमपि प्राप्यते, येन वयं मनुष्यजीवनं सफलं कुर्म:। अनुशासनम् अस्मान् सन्मार्गं प्रति प्रेरयति। अनुशासनस्य प्रवृत्ति: अन्त:करणात् एव भवति।

निर्देश:—

अनुच्छेदमिमं पठित्वा कक्षायाम् अनुशासनविषये छात्रा: चर्चा-विचारं कुर्वन्तु। पुस्तिकायां च लिखन्तु।

....

....

....

....

4. विमुद्रीकरणम्

2016 तमे वर्षे नवम्बरमासस्य अष्टम्यां तारिकायां प्रधानमन्त्रिणा विमुद्रीकरणस्य घोषणा कृता। पञ्चशत-रूप्यकाणां सहस्रात्मकानां च रूप्यकाणां निषेध: सञ्जात:। अस्य निर्णयस्य कारणमासीत् जनानां धनाढ्यानां च पार्श्वे यत् कृष्णधनं संचितमस्ति तत् बहिरायातु। मासद्वयम् विमुद्रीकरणेन जनै: अनेकं काठिन्यम् अनुभूतं परं भ्रष्टाचारं रोद्धुं कृतेऽस्मिन् सर्वकारस्य निर्णये

सर्वेऽपि जना: काठिन्यम् अनुभवन्त: अपि सहयोगं कृतवन्त:। विमुद्रीकरणस्य परिणामेन सर्वं धनं सर्वा: च मुद्रा: वित्तकोशे समायाता:।

निर्देश:—

छात्रा: परस्परं 'विमुद्रीकरणम्' इति विषयमधिकृत्य चर्चां कुर्वन्तु, पक्षे विपक्षे च स्वमतं प्रकटयन्तु। पुस्तिकायां च लिखन्तु।

....

....

....

....

5. परीक्षा

अहो परीक्षा पुन: समायाता। अस्या: नामोच्चारणेन एव गात्राणि कम्पन्ते, मनसि चिन्ताजालानि आयान्ति। सर्वं पठितमपि विस्मृतमिव प्रतीयते। न जाने कीदृशं प्रश्नपत्रम् आगमिष्यति, कथं च अहं स्पृहणीयान् अङ्कान् लप्स्ये इत्येव चिन्ता गुरुतरा भवति। न जाने केन महापुरुषेण परीक्षाया: संकल्पना विहिता? मन्येऽहम् ईश्वरोऽपि यदि परीक्षार्थी भूयात्, सोऽपि भीतो भूत्वा पलायनं कुर्यात्।

निर्देश:—

शिक्षकाणां निर्देशने छात्रा: परीक्षाविषये चर्चां विचारं च कुर्वन्तु पुस्तिकायां च लिखन्तु।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

5

0975CH05

रचनानुवादः

वर्तनमानकालिकवाक्यानि—

प्रयोग:- छात्रा:! आगच्छत!, वयम् अस्मिन् अध्याये संस्कृतवाक्यसंरचनाकौशलप्राप्ते: प्रयासं कुर्म:। कथं वयम् आत्मन: भावं संस्कृतभाषया प्रकटयितुं शक्नुम: इत्यर्थम् अभ्यासस्य आवश्यकता भवति। अत्र अभ्यासार्थम् कतिपयोदाहरणानि प्रदत्तानि-

यथा-

छात्र: पठति	–	*Student reads.*	–	छात्र पढ़ता है।
बालक: हसति	–	*Boy laughs.*	–	बालक हँसता है।
माता आगच्छति	–	*Mother comes.*	–	माँ आती है।
शिक्षक: पाठयति	–	*Teacher teaches.*	–	शिक्षक पढ़ाते है।
कृषक: क्षेत्रं कर्षति	–	*Farmer ploughs the field.*	–	कृषक खेत जोतता है।
श्रमिक: पाषाणं त्रोटयति	–	*Labourer breaks the stone.*	–	मज़दूर पत्थर तोड़ता है।
लिपिक: कार्यं करोति	–	*Clerk does his work.*	–	लिपिक कार्य करता है।
क्रीडक: क्रीडति	–	*Player plays.*	–	खिलाड़ी खेलता है।
छात्र: लेखं लिखति	–	*Student writes an article.*	–	छात्र लेख लिखता है।
अजौ तृणानि चरत:	–	*Two goats graze grass.*	–	दो बकरे घास चरते हैं।
वानरौ कूर्देते	–	*Two monkeys jump.*	–	दो बन्दर कूदते हैं।
सिंहौ गर्जत:	–	*Two lions roar.*	–	दो शेर गरजते हैं।
आचार्यौ पाठयत:	–	*Two teachers teach.*	–	दो आचार्य पढ़ाते हैं।
धनिकौ वस्त्रदानं कुरुत:	–	*Two richmen give clothes.*	–	दो धनी वस्त्रदान करते हैं।
कृषकौ क्षेत्रं कर्षत:	–	*Two farmers plough the field.*	–	दो किसान खेत जोतते हैं।
धावका: धावन्ति	–	*Runners run.*	–	धावक दौड़ते हैं।
श्रमिका: कार्यं कुर्वन्ति	–	*Labourers do work.*	–	मज़दूर कार्य करते हैं।

© NCERT not to be republished

पाचका: भोजनं पचन्ति	–	*Cooks are cooking food.*	–	पाचक गण भोजन पकाते हैं।
छात्रा: पाठान् पठन्ति	–	*Students read lessons.*	–	छात्र पाठ पढ़ते हैं!
नद्य: वहन्ति	–	*The rivers flow.*	–	नदियाँ बहती हैं!
त्वम् कुत्र गच्छसि?	–	*Where do you go?*	–	तुम कहाँ जाते हो?
युवां किं खादथ:?	–	*What do you both eat?*	–	तुम दोनों क्या खाते हो?
यूयं किं कुरुथ?	–	*What do you do?*	–	तुम लोग क्या करते हो?
अहं पाठं पठामि	–	*I read a/the lesson.*	–	मैं पाठ पढ़ता हूँ!
आवां ग्रामं गच्छाव:	–	*We both go to the village.*	–	हम दोनों गाँव जाते हैं!
वयं भोजनं कुर्म:	–	*We eat meal.*	–	हम लोग खाना खाते हैं।

अभ्यास :

1. अधोलिखितानां वाक्यानां हिंदीभाषया आंग्लभाषया स्वभाषया वा अनुवादं कुरुत–

i. वयं वाराणसीं गच्छाम:। – ....

ii. त्वं कुत्र गच्छसि? – ....

iii. युवां किम् कुरुथ:? – ....

iv. यूयं प्रहसनं पश्यथ। – ....

v. अहं लेखं लिखामि। – ....

vi. आवां गृहकार्यं कुर्व:। – ....

vii. वयं भोजनं पचाम:। – ....

viii. रमेश: कथां शृणोति। – ....

ix. लता गीतं गायति। – ....

x. माता जलं पिबति। – ....

xi. नद्यौ वेगेन वहत:। – ....

xii. बालिका: अभ्यासं कुर्वन्ति। – ....

xiii. शिशव: दुग्धं पिबन्ति। – ....

xiv. नृत्याङ्गना: नृत्यन्ति। – ....

xv. पुरुषा: जलं नयन्ति। – ....

© NCERT not to be republished

2. अधोलिखितानां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत—

i. हाथी चलता है। – ....

ii. दो बन्दर कूदते हैं। – ....

iii. दो लड़कियाँ नाचती हैं। – ....

iv. वृद्धजन धीरे-धीरे चलते हैं। – ....

v. महिलाएँ बातचीत करती हैं। – ....

vi. बच्चियाँ कहानी सुनती हैं। – ....

vii. दो छात्र पाठ याद करते हैं। – ....

viii. दो किसान खेत जोतते हैं। – ....

ix. दो बैल चरते हैं। – ....

x. दो हंस तैरते हैं। – ....

xi. लोग काम करते हैं। – ....

xii. तुम क्या करते हो? – ....

xiii. तुम पाठ याद करते हो। – ....

xiv. तुम लोग व्यर्थ समय बिताते हो।– ....

xv. मैं घूमती हूँ। – ....

xvi. मैं पुस्तक पढ़ती हूँ। – ....

xvii. हम दोनों गृहकार्य करते हैं। – ....

xviii. हम दोनों बातें करते हैं। – ....

xix. हम लोग स्वाध्याय करते हैं। – ....

भूतकालिकवाक्यप्रयोगः—

बालकः पाठम् अपठत्। – *The boy read a lesson (chapter).*
बालक ने पाठ पढ़ा।

छात्रः लेखम् अलिखत्। – *The student wrote an essay.*
छात्र ने लेख लिखा।

© NCERT not to be republished

पाचक: भोजनम् अपचत्।	–	*The cook cooked food.* रसोइए ने भोजन पकाया।
धावक: अधावत्।	–	*The runner ran.* धावक दौड़ा।
श्रमिक: कठिनं परिश्रमम् अकरोत्।	–	*The labourer worked hard.* श्रमिक ने कठिन परिश्रम किया।
कृषकौ क्षेत्रम् अकर्षताम्।	–	*Two farmers ploughed the field.* दो किसानों ने खेत जोता।
छात्रौ पाठम् अपठताम्।	–	*Two students read lesson.* दो छात्रों ने पाठ पढ़ा।
वृषभौ भारम् अवहताम्।	–	*Two bulls carried the load.* दो बैलों ने भार ढोया।
बालकौ गृहकार्यम् अकुरुताम्।	–	*Two boys completed the homework.* दो बालकों ने गृहकार्य किया।
जना: अभ्रमन्।	–	*People walked.* लोग घूमे।
बालका: अहसन्।	–	*Children laughed.* बच्चे हँसे।
छात्रा: पाठम् अस्मरन्।	–	*Students learnt lesson.* छात्रों ने पाठ याद किया।
बालका: जलम् आनयन्।	–	*A boy brought water.* लड़के जल लाए।
युवान: वस्त्रम् अक्रीणन्।	–	*Youngmen brought clothes.* युवकों ने वस्त्र खरीदे।
ते कार्यम् अकुर्वन्।	–	*They did the work.* उन्होंने कार्य किया।

© NCERT not to be republished

त्वं किम् अकरो:?	–	*What have you done?* तुमने क्या किया?
युवां पुस्तकम् अपठतम्।	–	*You two read books.* तुम दोनों ने पुस्तक पढ़ी।
युवां कुत्र अगच्छतम्?	–	*Where did you both go?* तुम दोनों कहाँ गए?
यूयं लेखम् अलिखत।	–	*You people wrote an essay.* तुम लोगों ने लेख लिखा।
यूयं पाठम् अस्मरत।	–	*You people learned the lesson.* तुम लोगों ने पाठ याद किया।

अभ्यास:

1. अधोलिखितानां वाक्यानां हिंदीभाषया आंग्लभाषया स्वभाषया वा अनुवादं कुरुत–

i. गजा: अचलन्। – ....

ii. सिंह: अगर्जत्। – ....

iii. अजौ अचरताम्। – ....

iv. वानरौ अकूर्दताम्। – ....

v. युवान: अक्रीडन्। – ....

vi. वृषभा: भारम् अवहन्। – ....

vii. छात्रा: पाठम् अपठन्। – ....

viii. बालका: पाठम् अपठन्। – ....

ix. त्वं पाठम् अस्मर:। – ....

x. युवां कार्यम् अकुरुतम्। – ....

xi. अहं कविताम् अस्मरम्। – ....

xii. आवाम् ग्रामम् अगच्छाव। – ....

© NCERT not to be republished

xiii. आवाम् भोजनम् अपचाव। – ....

xiv. वयम् चलचित्रम् अपश्याम। – ....

xv. वयम् भोजनम् अकरवाम। – ....

2. अधोलिखितानां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत–

i. छात्रों ने पाठ पढ़ा। – ....

ii. शिशु ने दूध पीया। – ....

iii. माता ने बच्चे को प्यार किया। – ....

iv. छात्रा ने कविता सुनाई। – ....

v. माता ने गीता सुनी। – ....

vi. क्या तुमने काम समाप्त किया ? – ....

vii. तुम लोगों ने कथा सुनी। – ....

viii. मैंने गीत गाया। – ....

ix. हम दोनों ने पाठ याद किया। – ....

x. हम लोगों ने विज्ञान पढ़ा। – ....

xi. हम लोगों ने यात्रा की। – ....

xii. मैं पटना गया। – ....

xiii. हम दोनों ने खीर बनाई। – ....

xiv. हम लोगों ने फल खाए। – ....

भविष्यत्कालिकवाक्य-प्रयोग: —

गज: चलिष्यति। – *Elephant will walk.*
हाथी चलेगा।

अज: तृणानि चरिष्यति। – *Goat will graze grass.*
बकरा घास चरेगा।

वानर: कूर्दिष्यते। – *Monkey will jump.*
बन्दर कूदेगा।

© NCERT not to be republished

पाचक: भोजनं पक्ष्यति।	–	*Mother will cook food.* रसोइया भोजन पकाएगा।
पिता कार्यं सम्पादयिष्यति।	–	*Father will complete his work.* पिता कार्य को सम्पादित करेंगे।
मीना: तरिष्यन्ति।	–	*Fishes will swim.* मछलियाँ तैरेंगी।
शिष्या: तथ्यं ज्ञास्यन्ति।	–	*Students will know about the fact.* शिष्य तथ्य जानेंगे।
सैनिका: देशं रक्षिष्यन्ति।	–	*Soldiers will protect the country.* सैनिक देश की रक्षा करेंगे।
वैद्यौ औषधं दास्यत:।	–	*Two doctors will give the medicine.* दो चिकित्सक दवा देंगे।
नर्तका: नर्तिष्यन्ति।	–	*Dancers will dance.* नर्तक नाचेंगे।
अभिनेत्र्य: अभिनयं करिष्यन्ति।	–	*Actresses will act.* अभिनेत्रियाँ अभिनय करेंगी।
शुका: वक्ष्यन्ति।	–	*Parrots will speak.* तोते बोलेंगे।
त्वं विद्यालयं गमिष्यसि।	–	*You will go to school.* तुम विद्यालय जाओगे।
त्वम् उपाधिं प्राप्स्यसि।	–	*You will get the degree.* तुम उपाधि प्राप्त करोगे।
युवां कीर्तिम् अर्जयिष्यथ:।	–	*You will get fame.* तुम यश पाओगे।

यूयं जनसेवां करिष्यथ।	–	*You will serve people.* तुम लोग जनसेवा करोगे।
अहम् आलस्यं त्यक्ष्यामि।	–	*I will leave laziness.* मैं आलस्य का त्याग करूँगा।
आवां संगीतं श्रोष्यावः।	–	*We both will listen to music.* हम दोनों संगीत सुनेंगे।
वयं देवं नंस्यामः।	–	*We will pray to God.* हम लोग देव को नमस्कार करेंगे।

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्यानां हिंदीभाषया आंग्लभाषया स्वभाषया वा अनुवादं कुरुत—

i. सेवकः पात्राणि प्रक्षालयिष्यति। – ....

ii. दाता याचकाय धनं दास्यति। – ....

iii. स्थपतिः भवनं निर्मास्यति। – ....

iv. पत्रवाहकः पत्राणि प्रेषयिष्यति। – ....

v. तृषार्तौ जलं पास्यतः। – ....

vi. क्षुधार्ताः रोटिकां खादिष्यन्ति। – ....

vii. वृक्षाः फलिष्यन्ति। – ....

viii. गायकाः गीतानि गास्यन्ति। – ....

ix. आलोचकाः निन्दिष्यन्ति। – ....

x. त्वं दुग्धं पास्यसि। – ....

xi. यूयं पादपान् सेक्ष्यथ। – ....

xii. अहं कथां श्रोष्यामि। – ....

xiii. आवां शाटिकां क्रेष्यावः। – ....

xiv. वयं क्रीडिष्यामः। – ....

© NCERT not to be republished

2. अधोलिखितवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत —

i. वह घर जाएगी। – ....

ii. वे दोनों चलचित्र देखेंगे। – ....

iii. वे लोग गीत गाएँगी। – ....

iv. तुम फल ले जाओगे। – ....

v. माली पौधों को जल से सींचेंगे। – ....

vi. पिता धन भेजेंगे। – ....

vii. भक्त देव को नमस्कार करेंगे। – ....

viii. तुम इस समय क्या करोगे? – ....

ix. मैं चित्र देखूँगा। – ....

x. तुम लोग प्रश्न पूछोगे। – ....

3. आज्ञार्थे वाक्यप्रयोगः —

सः पुस्तकं पठतु।	–	*He must read the book.* वह पुस्तक पढ़े।
तौ लेखं लिखताम्।	–	*They must write an essay.* वे दोनों लेख लिखें।
ते दुग्धं पिबन्तु।	–	*They both must drink milk.* वे लोग दूध पिएँ।
त्वं वस्त्राणि प्रक्षालय।	–	*You must wash clothes.* तुम वस्त्र धोओ।
युवां नगरं गच्छतम्।	–	*You both must go to town.* तुम दोनों नगर जाओ।
यूयं कार्यं समापयत।	–	*You people must complete the work.* तुम लोग कार्य समाप्त करो।
अहं मन्त्रं वदानि।	–	*I must recite mantra.* मैं मन्त्र बोलूँ।

© NCERT not to be republished

आवां फलानि खादाव। – *We both must eat fruits.*
हम दोनों फल खाएँ।

वयं दुर्गुणं त्यक्ष्जाम। – *We must giveup our ill habits.*
हम सब दुर्गुण छोड़ें।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत–

i. छात्र मन लगाकर पढ़ें। – ....
ii. दो बालिकाएँ गीत सुनें। – ....
iii. सभी स्त्रियाँ भय त्यागें। – ....
iv. शिष्य आचार्य को प्रणाम करें। – ....
v. देशभक्त देश की रक्षा करें। – ....
vi. सभी नृत्यांगनाएँ नृत्य करें। – ....
vii. तुम घर जाओ। – ....
viii. तुम दोनो संगीत का आनन्द लो।– ....
ix. तुम सभी चुप रहो। – ....
x. मैं भी दौड़ूँ। – ....

2. अधोलिखितवाक्यानां हिंदीभाषाया आंग्लभाषया स्वभाषया वा अनुवादं कुरुत–

i. वृद्ध: विश्रामं करोतु। – ....
ii. कर्मकरौ कार्यं कुरुताम्। – ....
iii. जना: कर्मणि लग्ना: स्यु:। – ....
iv. त्वं विषयम् अवगच्छ। – ....
v. युवां महापुरुषं नमतम्। – ....
vi. यूयम् इत: धावथ। – ....
vii. अहं पाठं स्मराणि। – ....
viii. आवां स्पर्धायां भागं गृह्णीव। – ....

© NCERT not to be republished

ix. वयं दीनानां सेवां कुर्याम – ....

x. संङ्गीतज्ञा: गायन्तु – ....

3. उदाहरणमनुसृत्य वर्तमानकालस्य वाक्यानाम् आज्ञार्थकवाक्ये परिवर्तनं कुरुत–

यथा — वर्तमानकालिकवाक्यानि आज्ञार्थकवाक्यानि

स: गीतं गायति।	–	**स: गीतं गायतु।**
बालकौ तरत:।	–	**बालकौ तरताम्।**
शिष्या: नमन्ति।	–	**शिष्या: नमन्तु।**

i. चिकित्सक: उपचारं करोति। – ....

ii. सेवकौ कार्याणि सम्पादयत:। – ....

iii. सैनिका: देशं रक्षन्ति। – ....

iv. जनक: सुतान् पालयति। – ....

v. त्वं धनं प्रेषयसि। – ....

vi. युवां गृहं गच्छथ:। – ....

vii. यूयं पादकन्दुकं क्रीडथ। – ....

viii. अहं वृक्षम् आरोहामि। – ....

ix. आवां जल्पाव:। – ....

x. वयम् अत्र उपदिशाम:। – ....

विध्यर्थे वाक्यप्रयोग: (विधिलिङ्लकारे वाक्यप्रयोग:)

छात्र: ध्यानेन पठेत्।	–	*The student should read carefully.* छात्र को ध्यान से पढ़ना चाहिए।
बालिके संगीतं शिक्षेताम्।	–	*Two girls should learn music.* दो बालिकाओं को संगीत सीखना चाहिए।
भवन्त: कोलाहलं न कुर्यु:।	–	*You people should not make noise.* आप लोग शोर न करें।
त्वं पाठं पठे:।	–	*You should read a lesson.* तुम्हें पाठ पढ़ना चाहिए।

युवां श्लोकं वदेतम्।	–	*You both should recite a shloka.* तुम दोनों को श्लोक पढ़ना चाहिए।
युवां शीघ्रं कार्यं समापयेतम्।	–	*You both should complete the work soon.* तुम दोनों को कार्य शीघ्र समाप्त करना चाहिए।
अहं गृहं गच्छेयम्।	–	*I should go home.* मुझे घर जाना चाहिए।
आवां लेखं लिखेव।	–	*We both should write an essay.* हम दोनों को लेख लिखना चाहिए।
वयं भोजनं परिवेषयेम।	–	*We people should serve the meal.* हम लोगों को भोजन परोसना चाहिए।

अभ्यास:

1. अधोलिखितवाक्यानां हिंदीभाषया आंग्लभाषया स्वभाषया वा अनुवादं कुरुत–

i. रमेश: कार्यं कुर्यात्। – ....

ii. श्रमिक: पाषाणं त्रोटयेत्। – ....

iii. सैनिक: देशं रक्षेत्। – ....

iv. राधा जलं पिबेत्। – ....

v. कवि: काव्यं कुर्यात्। – ....

vi. नद्यौ वहेताम्। – ....

vii. स्त्रिय: भोजनं पचेयु:। – ....

viii. बालिका: चित्रं रचयेयु:। – ....

ix. त्वं लेखनीं यच्छे:। – ....

x. युवां समाधानं वदेतम्। – ....

xi. यूयं कृपां प्रदर्शयेत। – ....

xii. अहं भोजनं पचेयम्। – ....

© NCERT not to be republished

xiii. आवां जलम् आनयेव। – ....

xiv. वयं गृहकार्यं कुर्याम। – ....

2. अधोलिखितवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत–

i. हमें पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए। – ....

ii. मुझे अपने भविष्य की चिंता करनी चाहिए। – ....

iii. तुम्हें विज्ञान पढ़ना चाहिए। – ....

iv. तुम दोनों को शिष्ट होना चाहिए। – ....

v. तुम लोगों को दूध पीना चाहिए। – ....

vi. सभी बच्चों को समय पर आना चाहिए। – ....

vii. चिकित्सकों को ज्ञानी होना चाहिए। – ....

viii. न्यायाधीश को न्याय करना चाहिए। – ....

ix. छात्रों को कर्तव्यनिष्ठ होना चाहिए। – ....

x. बच्चे को दौड़ना चाहिए। – ....

xi. सभी को शाम को खेलना चाहिए। – ....

xii. समय पर भोजन करना चाहिए। – ....

xiii. मुझे पाठ याद करना चाहिए। – ....

© NCERT not to be republished

6

0975CH06

कारकोपपदविभक्तिः

बालः खेलति।

बालौ धावतः।

बालाः उपविशन्ति।

महिलाः वदन्ति।

पुष्पाणि विकसन्ति।

- उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि कर्तृपदानि सन्ति।
- वाक्येषु कर्तृपदेषु प्रथमा विभक्तिः प्रयुज्यते।
- कर्तृपदस्य सम्बन्धः क्रियापदैः सह भवति।

© NCERT not to be republished

उदाहरणम् —

यदि कर्तृपदे एकवचनं तर्हि क्रियापदे अपि एकवचनं भवति। यथा —

बाल: पठति।

यदि कर्तृपदे द्विवचनं तर्हि क्रियापदे अपि द्विवचनं भवति। यथा-

बालौ पठत:।

यदि कर्तृपदे बहुवचनं तर्हि क्रियापदे अपि बहुवचनं भवति। यथा-

बाला: पठन्ति ।

- **लिङ्गपरिवर्तनेन क्रियापदानि न परिवर्तन्ते।**

यथा —

पु.		**स्त्री.**		**नपुं.**
बालक: पठति	कन्या	पठति।	मित्रम्	पठति।
बालकौ पठत:	कन्ये	पठत:।	मित्रे	पठत:।
बालका:पठन्ति	कन्या:	पठन्ति।	मित्राणि	पठन्ति।

अभ्यास:

1. उचितपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत —

i. .... पठन्ति। (छात्रौ, छात्रा:)

ii. .... पाठयति। (अध्यापका:, अध्यापक:)

iii. .... पृच्छन्ति। (शिष्या:, शिष्यौ)

iv. .... वदत:। (बालौ, बाल:)

v. .... विकसन्ति। (पुष्पे, पुष्पाणि)

vi. .... पतति। (फलम्, फले)

2. अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा कर्तृपदानि चित्वा लिखत —

वृक्षे अनेके खगा: वसन्ति। ते परस्परं प्रेम्णा व्यवहरन्ति। एकदा एक: वानर: तत्र आगच्छत्। स: शाखासु कूर्दते। खगा: दु:खिता: भवन्ति। ते न जानन्ति कथं अस्य प्रतिकार: कर्तव्य:। पुन: ते अचिन्तयन्-वयं मिलित्वा अस्य उपरि प्रहारं कुर्म:। तदा वानर: आगच्छत्। ते तस्य उपरि प्रहारम् अकुर्वन्। वानर: आहत: अभवत्। तत: परं स: कदापि तत्र न आगच्छत्।

© NCERT not to be republished

....

....

....

....

....

3. उदाहरणानुसारं सार्थकं पदं लिखत—

यथा—

i. | क: | शि | क्ष | **शिक्षक:**

ii. | नि | ला | फ | ....

iii. | वा | र: | न | ....

iv. | सु | शा | खा | ....

v. | क | चि | दा | त् | ....

4. उदाहरणानुसारं शब्दरचनां कुरुत—

यथा— वानर:

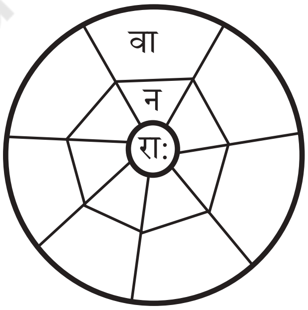

i. ....

ii. ....

iii. ....

iv. ....

v. ....

vi. ....

vii. ....

viii. ....

© NCERT not to be republished

कर्मकारकम्

पुत्र: पुत्री च **जनकम्** अनुसरत:।

पिता **बालौ** कथयति।

अध्यापक: **बालान्** कथयति।

पिता **कन्यां** कथयति।

पुत्रि! पश्य तत्र **द्वे चटके** स्त:।

रमा- द्वे न तिस्र: (पिता तिस्र: **चटका:** पश्यति।)

पुत्र: **जलम्** यच्छति।

© NCERT not to be republished

अम्बा **भोजनं** यच्छति

रमा तत्र त्रीणि **पात्राणि** स्थापयति।

- उपरि यानि रेखाङ्कितानि उदाहरणानि सन्ति तानि सर्वाणि द्वितीयाविभक्तौ सन्ति।

  यथा - जनकम्, बालौ, बालान्, कन्यां, चटके, चटकाः, जलम्, भोजनम्, पात्राणि इत्यादीनि

द्वितीयाविभक्तेः विशेषप्रयोगः

- उभयतः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति, धिक् योगे द्वितीया।
- धातोः पूर्वं यदि उप, अनु, अधि उपसर्गाः स्युः तत्रापि कर्मणि द्वितीया प्रयुज्यते।
- 'विना' योगे द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी च प्रयुज्यते।

अभ्यासः

1. मञ्जूषायाः उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत—

(पुत्रः आगच्छति।)

अमितः – मातः! अतीव बुभुक्षा बाधते माम्। किं भोजनं सज्जम्?

अम्बा – आम् पुत्र! .... कुरु।

अमितः – किं .... ?

अम्बा – तोरिका।

अमितः – अहो बहिर्गन्तव्यम्। विलम्बः भवति। बुभुक्षा नास्ति।

अम्बा – (हसन्ती) 'तोरिका' इति कथने .... समाप्ता किम्?

अमितः – (हसन्) एवं नास्ति मातः!

© NCERT not to be republished

अम्बा – तर्हि .... कुत्र खादिष्यसि

अमितः – न जानामि।

अम्बा – तर्हि आगच्छ। उष्णं .... खाद।

अमितः – अस्तु, शीघ्रं खादित्वा गच्छामि।

मञ्जूषा

रोटिकां, शाकं रोटिकां च, बुभुक्षा, पक्वम्, भोजनम्

2. उचितविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

अङ्कुरः – अमित! मम .... परितः हरिताः वृक्षाः सन्ति। (गृह)

अमितः – अतिशोभनम्। मम .... उभयतः अवकरगृहम् अस्ति। (गृह)

अङ्कुरः – एतत् तु स्वास्थाय न उचितम्।

अमितः – जानीमः वयम्।

अङ्कुरः – .... विना तु जीवनं नरकायते। (स्वास्थ्य)

अमितः – धिक् एतादृशान् .... ये इतस्ततः अवकरं क्षिपन्ति। (जन)

3. उचितविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

i. महिलाः .... गच्छन्ति। (उद्यान)

ii. तत्र ताः .... कुर्वन्ति। (व्यायाम)

iii. परस्परं .... च कुर्वन्ति। (वार्तालाप)

iv. .... च पश्यन्ति। (वृक्ष, पुष्प बहुव.)

v. ताः पुष्पाणां .... दृष्ट्वा प्रसीदन्ति (शोभा)

4. उदाहरणानुसारं लिखत—

यथा- शब्दः	विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
जन	द्वितीया	जनम्	जनौ	जनान्
मनुष्य	....	....	....	....

पुरुष	....	....	....	....
शाखा	द्वितीया	शाखाम्	शाखे	शाखाः
लता	....	....	....	....
जिह्वा	....	....	....	....
पत्र	द्वितीया	पत्रम्	पत्रे	पत्राणि
फल	....	....	....	....
पुष्प	....	....	....	....

5. कर्मकारकं द्वितीयाविभक्तिं च प्रयुज्य प्रदत्तम् उदाहरणम् अनुसृत्य पञ्च वाक्यानि लिखत।

उदाहरणाम् — 1. कौमुदी **संस्कृतं** पठति।

2. वत्सला **आम्रं** खादति।

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

© NCERT not to be republished

करणकारकम् (तृतीया-विभक्तिः)

1. अधोलिखितानि उदाहरणानि पठत —

मेघैः वर्षा भवति।

सरोवरः **कमलैः** भाति।

वृक्षः **पुष्पैः** शोभते।

उपवनं **वृक्षैः** शोभते।

वृक्षः **शाखाभिः** शोभते।

वानरः **कर्णाभ्याम्** बधिरः।

- उपरि यानि रेखाङ्कितपदानि सन्ति तानि करणकारके सन्ति।
- करणकारके तृतीयाविभक्तिः प्रयुज्यते।
- करणकारकस्य हिन्दीभाषयां चिह्नं भवति- से, के द्वारा।

© NCERT not to be republished

2. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत—

बन्दर आँख पर हाथ रखे।	सः **नेत्राभ्याम्** अन्धः।
बन्दर के साथ मदारी	**वानरेण** सह कः अस्ति?
मदारी रस्सी दूर करता है।	**रज्ज्वा** किं प्रयोजनम्?

- उपरिलिखितानि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि उपपदविभक्तेः सन्ति।
- अङ्गविकारे तृतीया-विभक्तिः प्रयुज्यते।
- सह-समम्-साकम्-सार्धम् एतेषां शब्दानाम् अर्थः भवति 'साथ' एतेषां योगेऽपि तृतीया विभक्तिः प्रयुज्यते।

अभ्यासः

1. उचितपदेन रिक्तस्थानानि पूरयत—

i. गृहे आनन्दमयं वातावरणं .... भवति। (बालैः , बालान्)

ii. विद्यालयस्य विद्यालयत्वं .... भवति। (छात्रान्, छात्रैः)

iii. रङ्गशालायाः शोभा .... भवति। (उत्सवान्, उत्सवैः)

iv. सभागारे जनाः .... सह चर्चां कुर्वन्ति। (विदुषां, विद्वद्भिः)

2. अधोलिखितश्लोकेभ्यः तृतीयाविभक्तियुक्तपदानि चित्वा लिखत-

यथा— सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

सत्येन	सत्येन	सत्येन

मनसा चिन्तितं कार्यं वाचा नैव प्रकाशयेत्॥
मन्त्रेण रक्षयेद् गूढं कार्ये चाऽपि नियोजयेत्।

© NCERT not to be republished

पुत्राश्च विविधैः शीलैर्नियोज्याः सततं बुधैः ।
नीतिज्ञाः शीलसम्पन्ना भवन्ति कुलपूजिताः ।

दरिद्रता धीरतया विराजते,
कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते ।
कदन्नता चोष्णतया विराजते,
कुरूपता शीलतया विराजते ।

उदाहरणानुसारं लिखत—

शब्दः	**विभक्तिः**	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
निर्धन	तृतीया	निर्धनेन	निर्धनाभ्याम्	निर्धनैः
जन	....	....	....	....
धनिक	....	....	....	....
शाखा	तृतीया	शाखया	शाखाभ्याम्	शाखाभिः
लता	....	....	....	....
रमा	....	....	....	....

4. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

i. पुत्रः .... सह गच्छति। (जनकस्य, जनकेन)

ii. सः जनः .... अन्धः तथापि पराश्रितः न अस्ति। (नेत्रयोः, नेत्राभ्याम्)

iii. .... हीनः पशुभिः समानः। (विद्यायाः, विद्यया)

© NCERT not to be republished

iv. .... किं प्रयोजनम्। (धनेन,धनात्)

v. सः .... बधिरः अस्ति। (कर्णाभ्याम्, कर्णेन)

5. तृतीया-बहुवचनशब्दानां रचनां कुरुत —

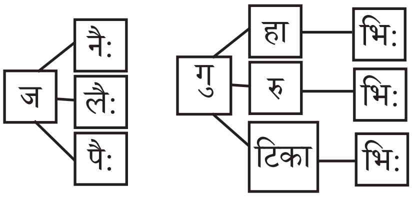

....

....

6. करणकारकं तृतीयाविभक्तिं च प्रयुज्य प्रदत्तम् उदाहरणम् अनुसृत्य पञ्च वाक्यानि लिखत।

उदाहरणाम् — 1. गौतमी **कलमेन** लिखति।

2. काशिका यानेन गच्छति।

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

© NCERT not to be republished

सम्प्रदानकारकम् (चतुर्थी-विभक्तिः)

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

बालः **पठनाय** गच्छति।

जनः **कार्यालयाय** गच्छति।

वृद्धः **भ्रमणाय** गच्छति।

वृद्धा **पूजनाय** गच्छति।

चिकित्सिका **उपचाराय** गच्छति।

कन्या **प्रार्थनायै** गच्छति।

© NCERT not to be republished

- उपरि यानि रेखाङ्कितपदानि सन्ति तानि सम्प्रदानकारके सन्ति। सम्प्रदानकारके चतुर्थी-विभक्तिः प्रयुज्यते।

यथा — सः पठनाय गच्छति।

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

पिता **बालकाय** क्रुध्यति।

मह्यं रोटिका न रोचते।

इन्द्राय नमः।

अग्नये स्वाहा।

सर्वेभ्यः स्वस्ति।

उपरि यानि उदाहरणानि सन्ति तानि उपपदविभक्तेः सन्ति ।

- क्रुध् - द्रुह् - ईर्ष्य् - असूय् आदि धातुकारणात् चतुर्थी प्रयुज्यते ।
- रुच् कारणात् येभ्यः रोचते तस्मिन् चतुर्थी विभक्तिः प्रयुज्यते ।
- नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-अलं-वषट् कारणात् चतुर्थी - विभक्तिः प्रयुज्यते ।

© NCERT not to be republished

अभ्यासः

1. कोष्ठकप्रदत्तपदैः सह उचितविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

i. अद्य अधिकांशजनाः शनिवासरे .... बहिः गच्छन्ति। (मनोरजंन)

ii. ते रात्रौ बहिः .... गच्छन्ति। (भोजन)

iii. .... ते चिरकालात् पंक्तौ तिष्ठन्ति। (आहार)

iv. ....सर्वे प्रशंसनीयाः। (सत्कार्य)

v. स्व .... किं किं कुरुते मानवः (प्रसन्नता)

2. अधोलिखितशब्दान् उदाहरणानुसारं लिखत—

श्रमिकः	श्रमिकाय	श्रमिकाभ्याम्	श्रमिकेभ्यः
जनः	....	....	....
लता	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
शाखा	....	....	....
पत्रम्	पत्राय	पत्राभ्याम्	पत्रेभ्यः
फलम्	....	....	....
कृषकः	....	....	....
रमा	....	....	....
पुष्पम्	....	....	....

© NCERT not to be republished

3. चतुर्थी-विभक्तियुक्तपदानि स्थूलरेखया चिह्नितानि कुरुत पृथक्तया लिखत च—

i. विद्या विवादाय धनं मदाय ....

ii. शक्तिः परेषां परपीडनाय। ....

iii. खलस्य साधोर्विपरीतमेतत् ....

iv. ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥ ....

4. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा लिखत—

i. बालाः .... क्रीडाक्षेत्रं गच्छन्ति। (खेलनाय, खेलनस्य)

ii. सूदः .... पाकशालां गच्छति। (भोजनपाचनाय, भोजनपाचने)

iii. जनाः .... किं किं न कुर्वन्ति। (उदरपूरणाय, उदरपूरणे)

iv. कृषकः .... सर्वत्र प्रसिद्धः अस्ति। (परिश्रमे, परिश्रमाय)

v. कुक्कुरः .... इतस्ततः भ्रमति। (भोजनं, भोजनाय)

5. घटात् चतुर्थी - विभक्तियुक्तपदानि चित्वा उचितकोष्ठके लिखत—

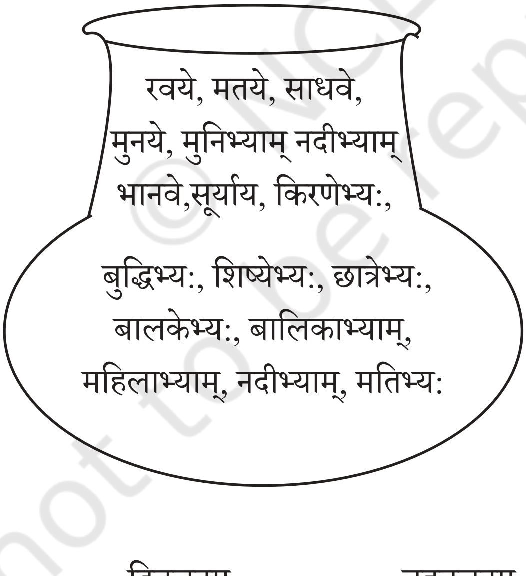

एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
....	....	....
....	....	....
....	....	....

© NCERT not to be republished

अपादानकारकम् (पंचमी-विभक्ति:)

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत—

अश्वारोही **अश्वात्** पतति।

लतायाः पुष्पाणि पतन्ति।

वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि 'अपादानकारके' सन्ति। अपादानकारके 'पंचमीविभक्ति:' प्रयुज्यते

गंगा **हिमालयात्** निस्सरति।

बाल: **अध्यापकात्** पठति।

बालः **<u>अध्ययनात्</u>** प्रमाद्यति।

बाला **<u>विडालात्</u>** बिभेति।

बालकः **<u>गृहात्</u>** बहिः आगच्छति।

- उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि पंचमी - उपपदविभक्तेः उदाहरणानि सन्ति।

अभ्यासः

1. कोष्ठके प्रदत्तशब्दैः सह उचितविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत।

i. .... अङ्कुरः प्रभवति। (बीज)

ii. .... विद्युत् उद्भवति। (जल)

iii. .... छात्राः पठन्ति। (शिक्षक)

iv. .... नद्यः प्रभवन्ति। (पर्वत)

v. .... मा प्रमदः। (स्वाध्याय)

2. पंचमीविभक्तियुक्तपदम् उदाहरणानुसारं चिह्नितं कुरुत-

यथा- <u>काष्ठात्</u> अग्निः जायते <u>मथ्यमानात्</u>।

i. कीटः अपि सुमनः सङ्गात् आरोहति सतां शिरः।

ii. धैर्यात् कदाचित् स्थितिम् आप्नुयात् सः।

iii. विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्म: तत: सुखम्।

iv. सत्यात् अपि हितं वदेत्।

v. दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते।

3. उदाहरणानुसारं लिखत —

	शब्द:	**विभक्ति:**	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
यथा—	सैनिक:	पञ्चमी	सैनिकात्	सैनिकाभ्याम्	सैनिकेभ्य:
	रक्षक:	....	....	....	....
	मनुष्य:	....	....	....	....
	महिला	पञ्चमी	महिलाया:	महिलाभ्याम्	महिलाभ्य:
	देवी	....	....	....	....
	कन्या	....	....	....	....
	मित्रम्	पञ्चमी	मित्रात्	मित्राभ्याम्	मित्रेभ्य:
	पात्रम्	....	....	....	....
	गात्रम्	....	....	....	....

4. यथोचितं योजयत-

पिपीलिका	नरात्	....	....
देव	वृद्धाया:	....	....
सैनिक	मधुमक्षिकाया:	....	....
मधुमक्षिका	सैनिकात्	....	....
वृद्धा	देवात्	....	....
नर	पिपीलिकाया:	....	....

© NCERT not to be republished

सम्बन्धे (षष्ठीविभक्तिः)

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

पश्यत। तत्र **वानरस्य** क्रीडा भवति।

सुन्दरं **मयूरस्य** नृत्यम्

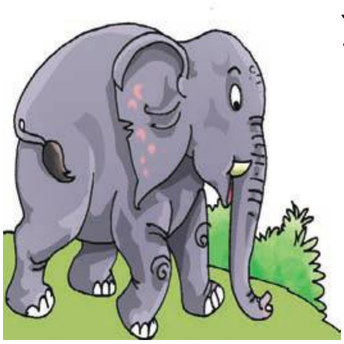

गजस्य गतिः सुन्दरी।

कोकिलस्य गीतं सुन्दरम्।

कपोतानां सङ्घटनं प्रसिद्धम्।

मृगस्य स्वभावः मुग्धः।

मधुमक्षिकायाः स्वभावः मधुसञ्चयः

© NCERT not to be republished

- उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि सर्वाणि षष्ठीविभक्ते: सन्ति।

2. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

अन्नस्य हेतवे स: तत्र गच्छति।

वृक्षस्य उपरि खगानां निवास: अस्ति।

- उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि उपपदविभक्ते: सन्ति।

हेतु:, उपरि आदि शब्दै: सह षष्ठी-विभक्ति: प्रयुज्यते।

अभ्यास:

1. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत —

i. बाल:.............................अङ्के उपविशति। (पितु:,पित्रा)

ii. अद्य चिकित्सालयेषु.............................सङ्ख्या प्रतिदिनं वर्धते। (रुग्णै:,रुग्णानाम्)

iii. वृक्षा:.............................आधारभूता: सन्ति। (पर्यावरणस्य, पर्यावरणेन)

iv. अद्यत्वे.............................जीवनं कष्टमयं जायते। (नगरात्, नगरस्य)

v. ....रक्षणाय वृक्षाणाम् आरोपणम् आवश्यकम्। (जीवनम्, जीवनस्य)

2. षष्ठीविभक्तियुक्तपदानि चित्वा लिखत —

i. महाजनस्य संसर्ग:
कस्य नोन्नतिकारक:।

ii.

अभिवादनशीलस्य
नित्यं वृद्धोपसेविन:।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते
आयुर्विद्या यशो बलम्।।

© NCERT not to be republished

iii. मानो हि महतां धनम्।

....

iv. गच्छन् पिपीलको याति
योजनानां शतान्यपि।

v. नरस्याभरणं रूपं रूपस्याभरणं गुणः।
गुणस्याभरणं ज्ञानं ज्ञानस्याभरणं क्षमा।।

3. उदाहरणानुसारं लिखत —

	नर	
नरस्य	नरयोः	नराणाम्

	क्षमा	
....	....	....

	वेद	
....	....	....

	नदी	
....	....	....

	तरु	
....	....	....

	विद्या	
....	....	....

© NCERT not to be republished

4. षष्ठीविभक्तियुक्तपदानां रचनां कुरुत-

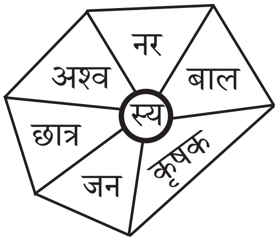

याः- लता, प्रज्ञा, सभा, रमा, क्षमा, विद्या

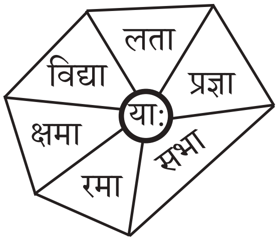

5. प्रदत्तम् उदाहरणम् अनुसृत्य षष्ठीविभक्तिम् उपयुज्य पञ्च वाक्यानि लिखत।

उदाहरणम् — 1. अहं **<u>विद्यायाः</u> महत्त्वं** जानामि।

2. **<u>कृषकस्य</u> क्षेत्रं हरितम्** अस्ति।

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

© NCERT not to be republished

अधिकरणकारकम् (सप्तमी–विभक्तिः)

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

आकाशे चन्द्रः उदयति।

नदीषु अवकरं मा क्षिप।

गृहे कोऽपि नास्ति।

माता **कन्यायां** स्निह्यति।

- उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि तानि अधिकरणकारके सन्ति।
- अधिकरणकारके सप्तमी-विभक्तिः प्रयुज्यते। यथा वृक्षेषु खगाः वसन्ति।

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

अमितः **बालकानां/बालेषु** श्रेष्ठः अस्ति।
बालः **अम्बायां** स्निह्यति।
अद्य बालाः **मित्रेषु** विश्वसन्ति।

- उपरि यानि रेखाङ्कतानि पदानि सन्ति तानि सप्तमी-विभक्तौ सन्ति।
- स्निह्, वि+श्वस्, श्रेष्ठ एतेषां योगे सप्तमीविभक्तेः प्रयोगः भवति।

अभ्यास:

1. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा लिखत —

i. अद्य तु .... अपि वृक्षा: न सन्ति। (पर्वतीयस्थलम्, पर्वतीयस्थले)

ii. चाणक्यो ब्रवीति .... अपि विश्वास: न कर्तव्य:। (मित्राय/मित्रे)

iii. कृष्ण: .... स्निह्यति (गोषु/गवम्)

iv. अद्य बाला: चलदूरभाषस्य .... रता: भवन्ति। (प्रयोगे, प्रयोगस्य)

v. .... रक्षाया: विषये जागरूका: भवेयु:। (पर्यावरणस्य,पर्यावरणे)

2. सप्तमीविभक्तियुक्तपदानि चित्वा लिखत —

i. उत्सवे व्यसने चैव
दुर्भिक्षे शत्रुविग्रहे।
राजद्वारे श्मशाने च,
यस्तिष्ठति स बान्धव:॥

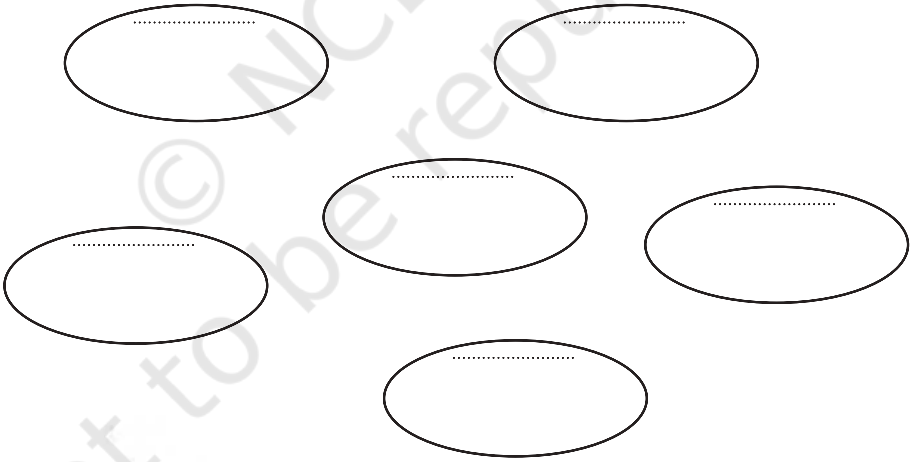

© NCERT not to be republished

ii. परोक्षे कार्यहन्तारम्,
प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत् तादृशं मित्रम्,
विषकुम्भं पयोमुखम्।।

iii. न कूपखननं युक्तं
प्रदीप्ते वह्निना गृहे।

iv. सत्यमेवेश्वरो लोके
सत्ये धर्मः समाश्रितः।

3. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितान् कोष्ठकान् यथायोग्यपदैः पूरयत —

यथा जन	जने	जनयोः	जनेषु
विद्वस्	....	....	....
आत्मन्	....	....	....

© NCERT not to be republished

राजन् | .... | .... | ....

क्षमा | .... | .... | ....

नदी | .... | .... | ....

4. अधिकरणकारकं सप्तमीविभक्तिं च उपयुज्य प्रदत्तम् उदाहरणम् अनुसृत्य पञ्च वाक्यानि लिखत।

उदाहरणम् — 1. **जले** मत्स्या: सन्तरन्ति।

2. **लतायां** पुष्पाणि सन्ति

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

© NCERT not to be republished

सम्बोधनम्

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत-

हे मेघ, वर्षां कुरु।

हे इन्द्रदेव, वर्षय अधुना।

हे मेघ, प्रसन्नोऽस्मि।

- एतानि रेखाङ्कितपदानि सम्बोधने सन्ति।
- सम्बोधने प्रथमा विभक्तिः प्रयुज्यते।
- सम्बोधने केवलं प्रथमा-एकवचने परिवर्तनं भवति।
- सम्बोधने एकवचने विसर्गस्य लोपः भवति।
- सम्बोधने द्विवचनस्य बहुचवचनस्य च रूपाणि प्रथमाविभक्तिवत् प्रचलन्ति।
- सर्वेषाम् पदानाम् अन्ते ',' इति चिह्नस्य प्रयोगः भवति।

© NCERT
not to be republished

7

0975CH07

सन्धिः

अस्माभिः पठितं यत् वर्णानां संयोजनेन शब्दरचना भवति। क्वचित् क्वचित् वर्णसंयोजनेन वर्णरूपेषु परिवर्तनम् अपि जायते।

यथा —

सूर्य + आतपे	=	सूर्यातपे	स्वर-सन्धिः
प्रत्यवदत्	=	प्रति + अवदत्	
तत् + अनन्तरम्	=	तदनन्तरम्	व्यञ्जन-सन्धिः
तस्मिन्नेव	=	तस्मिन् + एव	
तस्याः + च	=	तस्याश्च	विसर्ग-सन्धिः
नृपोऽवदत्	=	नृपः + अवदत्	

एतद् वर्णरूप परिवर्तनम् एव सन्धिः। परिवर्तित वर्णानां मूलरूपेषु पुनः आनयनं च सन्धिविच्छेदः। अधुना विस्तरेण जानमी : —

1. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत —

(क) अ, आ + अ, आ = आ

i. सूर्य + आतपे = सूर्यातपे (अ+आ=आ)

ii. लोभ + आविष्टा = ... (........................)

iii. आगतास्ति = ... + ... (........................)

iv. एव + अस्य = ... (........................)

v. पूर्वार्द्धः .... = ... (........................)

(ख) इ, ई + इ, ई = ई

i. अति + इव = अतीव (इ+इ=ई)

ii. नदी + इयम् = ... (........................)

iii. कपि + ईदृशः = ... (........................)

© NCERT not to be republished

iv. लघ्वीति = ... + ... (....................)

v. कपीन्द्रः = ... + ... (....................)

(ग) उ, ऊ + उ, ऊ = ऊ

i. गुरु + उचितम् = गुरूचितम् (उ+उ=ऊ)

ii. भानु + उदयः = ... (....................)

iii. लघूर्मिः .... + ... (....................)

iv. भू + ऊर्ध्वम् = ... (....................)

v. साधूपदेशः = ... + ... (....................)

(घ) ऋ, ॠ + ऋ, ॠ = ॠ

i. पितृ + ऋणम् = पितॄणम् (ऋ+ऋ=ॠ)

ii. मातृ + ऋद्धिः = ... (....................)

iii. भ्रातॄणम् .... + ... (....................)

'अकः सवर्णे दीर्घः', इति सूत्रेण समान-स्वरवर्णयोः दीर्घादेशः भवति। एषः 'दीर्घसन्धिः' इति कथ्यते।

2. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत —

(क) अ, आ + इ, ई = ए

i. अनेन + इति = अनेनेति (अ+इ=ए)

ii. यथा + इच्छया= .... (....................)

iii. मातेव = ... + ... (....................)

iv. लतेयम् = ... + ... (....................)

(ख) अ, आ + उ, ऊ = ओ

i. वृक्षस्य + उपरि= वृक्षस्योपरि (अ+उ=ओ)

ii. सूर्योदयात् = ... + ... (....................)

iii. घृत+ उत्पत्तिः = ... (....................)

iv. मानवोचितम् = ... + ... (....................)

v. गृह + उद्यानम् = ... (....................)

© NCERT not to be republished

(ग) अ, आ + ऋ, ॠ = अर्

i. महा + ऋषि: = महर्षि: (आ+ऋ=अर्)

ii. देवर्षि: = ... + ... (......................)

iii. वसन्त + ऋतु:= .... (......................)

iv. वर्षर्तु: = ... + ... (......................)

'आद् गुण:' इति सूत्रेण अ-आ-वर्णयो:, इ,ई
उ,ऊ/ऋ, ॠ वर्णाभ्यां सह मेलनेन क्रमशः:-ऐ, ओ, अर् इति
भवन्ति। एष: गुणसन्धि: इति कथ्यते।

3. यथापेक्षितं सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत —

(क) अ, आ + ए, ऐ = ऐ

i. गत्वा + एव = गत्वैव (आ+ए=ऐ)

ii. एव + एनम् = ... (......................)

iii. क्षणेनैव = ... + ... (......................)

iv. न + एतादृश: = ... (......................)

v. महैरावत: = ... + ... (......................)

(ख) अ, आ + ओ, औ = औ

i. जल + ओघ: = जलौघ: (अ+ओ=औ)

ii. तव + औदार्यम्= .... (......................)

iii. वनौषधि: = ... + ... (......................)

iv. महा + औत्सुक्येन= .... (......................)

v. जनौघ: = ... + ... (......................)

'वृद्धिरेचि' इति सूत्रानुसारेण अ,आ वर्णयो: क्रमश: ए, ऐ/ओ, औ वर्णाभ्याम् सह मेलने जाते क्रमश: 'ऐ', 'औ' इति भवति। एष: 'वृद्धिसन्धि:' इति कथ्यते।

2021–22

© NCERT not to be republished

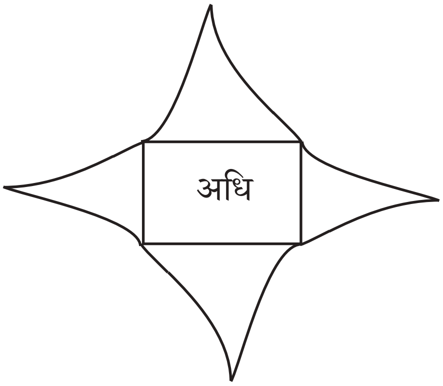

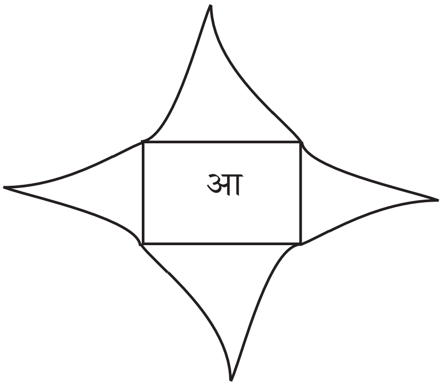

अधिकारः (अधि + ……………)

अधिगमः (अधि + ……………)

अधिकरणम् (……………+ करणम्)

अधिरोहति (…………… + रोहति)

आचारः (आ + ……………)

आधारः (आ + ……………)

आहारः (आ + ……………)

आगमनम् (आ + ……………)

4. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत —

(क) इ, ई + असमान-स्वरः= इ, ई स्थाने य् + स्वरः

i. प्रति + अवदत्= प्रत्यवदत् (इ+अ=य)

ii. यदि + अहम् = …………… (……………)

iii. तानि + एव = …………… (……………)

iv. पर्यावरणम् = …………… + …………… (……………)

v. इत्यवदत् = …………… + …………… (……………)

(ख) उ, ऊ + असमानः स्वरः= उ, ऊ स्थाने व् + स्वरः

i. खलु + अयम् = खल्वयम् (उ+अ=व)

ii. मधु + अरिः = …………… (……………)

iii. गुणेष्वेव = …………… (……………)

iv. विरमन्तु + एते = …………… + …………… (……………)

v. स्वागतम् = …………… + …………… (……………)

(ग) ऋ, ॠ + असमान-स्वरः= ऋ स्थाने र् + स्वरः

i. पितृ+ आदेशः= पित्रादेशः (ऋ+आ=रा)

© NCERT not to be republished

ii. मात्राज्ञा = ... + ... (......................)

iii. भ्रातृ + इच्छा = ... (......................)

iv. कर्तृ + उपदेश: = ... (......................)

v. पित्रनुमति: = ... + ... (......................)

'इको यणचि' सूत्रानुसारम् इ, ई/उ, ऊ/ ऋ, ॠ स्वराणाम् असमानस्वरेण सह मेलनेन इ, ई/उ,ऊ/ऋ, ॠ वर्णानां स्थाने क्रमश: य्, व्, र् इति भवन्ति, परवर्ती स्वर: च एतै: सह मात्रारूपेण प्रयुज्यते।

5. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत —

(क) म् + व्यञ्जनवर्ण: = म् स्थाने अनुस्वार:
म् + स्वर: = म् वर्णे स्वरस्य संयोग:

i. त्वम् + यासि = त्वं यासि (संधि:)

ii. अहम् + इच्छामि = ... (......................)

iii. किम्+ कथयति = ... (......................)

iv. अयम् + राजा = ... (......................)

v. माम् + मुञ्च = ... (......................)

vi. कथमागत: = ... + ... (......................)

vii. अयम् +राजा = ... (......................)

viii. हर्तुम् +इच्छति = ... (......................)

ix. सन्ध्याम् + यावत् = ... (......................)

'मोऽनुस्वार:' इति सूत्रानुसारं 'म्' इति वर्णस्य पश्चात् यदि कोऽपि व्यञ्जनवर्ण: भवति तर्हि 'म्' वर्णस्य स्थाने अनुस्वार: भवति।

© NCERT not to be republished

अभ्यास:

1. प्रदत्त-पदेषु सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत —

i. हिताहितम् = ... + ...
ii. पश्चिमोत्तरम् = ... + ...
iii. वृथा + अटनम् = ...
iv. इति + उभौ = ...
v. नमाम्येनम् = ... + ...
vi. वृकोदरेण = ... + ...
vii. राजमार्गेण + एव= ....
viii. इहागत: = ... + ...
ix. पूर्व + इतरम् = ...
x. वदतीति = ... + ...
xi. तव + औषधम् = ...
xii. राजर्षि: = ... + ...
xiii. अत्रान्तरम् = ... + ...
xiv. अहम् + गच्छामि = ...
xv. खलु + एष: = ...
xvi. साधूक्तम् = ... + ...
xvii. मातृ + ऋणम् = ...

© NCERT not to be republished

8

0975CH08

उपसर्गाव्ययप्रत्यया:

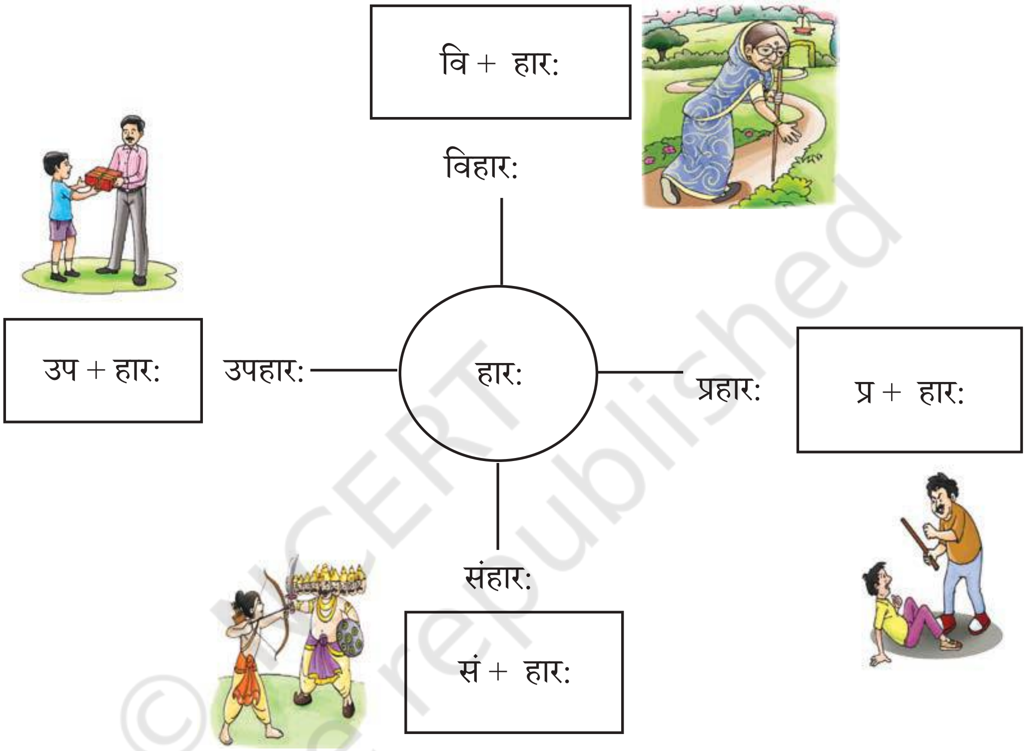

उपरि वयं पश्याम: यत् ‘हार:’ इति पदस्य भिन्नै: उपसर्गै: सह संयोगे जाते अर्थपरिवर्तनमपि सञ्जातम्। उपसर्ग-विषये उच्यते—

“उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहारवत्।।”

उपसर्ग-विषये ज्ञातव्यम् यत्—

- उपसर्ग: शब्दात् धातो: च पूर्वं भवति।
- उपसर्गेण कदाचित् अर्थे परिवर्तनं कदाचिच्च अर्थस्य पोषणं भवति।
- कदाचित् एकस्मिन् शब्दे द्वित्रा: उपसर्गा: अपि भवन्ति।

© NCERT not to be republished

1. उपसर्गान् संयुज्य पदरचनां कुरुत—

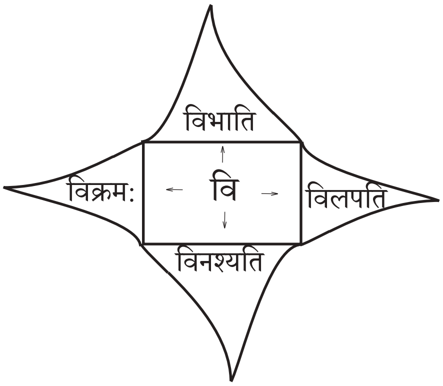

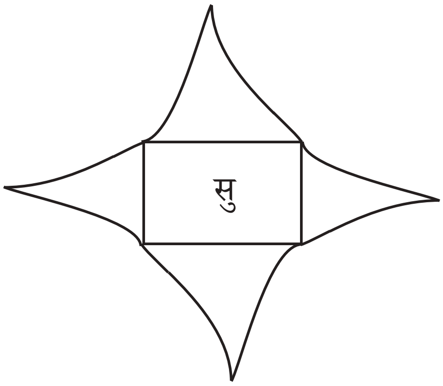

विशेषः (वि + शेषः)
विकारः (वि + कारः)
विहारः (वि + हारः)
विवादः (वि + वादः)

सुगन्धः (सु + गन्धः)
सुकन्या (सु + कन्या)
सुबुद्धिः (सु + बुद्धिः)
सुदर्शन (.................. + ...)

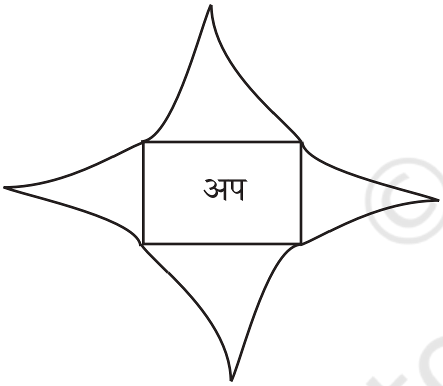

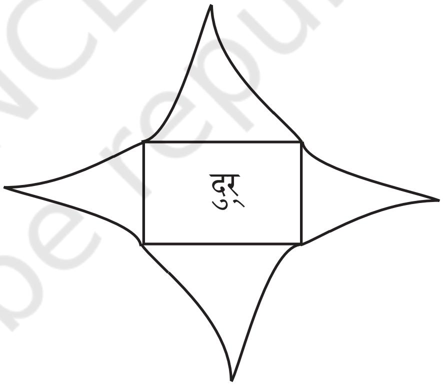

अपमानः (अप + मानः)
अपयशः(.................. + ...)
अपकारः (अप + कारः)

दुर्दशा (.................. + ...)
दुर्बुद्धिः (दुर्+ बुद्धिः)
दुर्जनः (.................. + ...)
दुराचारी (दुर् + आचारी)

© NCERT not to be republished

2. उपसर्गं संयोज्य उचितैः धातुरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत—

i. गङ्गा हिमालयात् .... । (निस् + सृ, लट्)

ii. कृषकाः क्षेत्रात् .... । (आ+गम्, लङ्)

iii. वयं नियमान् ....। (परि + पाल्, लट्)

iv. छात्राः गुरौ आगते ....। (उत्+स्था, लोट्)

v. विडालः मूषकम् ....। (अनु+सृ, लट्)

vi. त्वं कक्षायां पाठं ध्यानेन..। (अव + गम्, विधि.)

vii. बीजात् वृक्षः ....। (उद्+भू, लृट्)

viii. सेवकाः स्वामिनम् ....। (उप+सेव्+लट्)

ix. अद्याहं शीतं न ....। (अनु+भू+लट्)

3. उचितैः उपसर्गयुक्तैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत—

i. एषः मार्गः अतीव ....। (दुर् + गमः)

ii. कस्यापि अवगुणस्य .... मा कुरु। (उत् + लेखम्)

iii. ....अपि..न करणीयः। (निर् + धनस्य, अप+मानः)

iv. तव एतावत्..यत् मम् ....करोषि (दुस् + साहसम्, अप्+मानम्)

v. क्षम्यताम्, ... अहं तव.. करोमि। (निस्+सन्देहम्, सम्+मानम्)

vi. लोकस्य ....एव श्रेयस्करम्। (सम्+रक्षणम्)

© NCERT not to be republished

अव्ययपदानि

अव्ययपद	**अर्थ**	**अव्ययपद**	**अर्थ**
अभित:	दोनों ओर	यथा-तथा	जैसे-तैसे
परित:	चारों ओर	यदा-तदा	जब-तब
उभयत:	दोनों ओर	यत्र-तत्र	जहाँ-वहाँ
सर्वत:	सब ओर	उपरि-अध:	ऊपर-नीचे
समन्तत:	चारों ओर		
अधुना	अब	श्व:	(आने वाला कल)
		ह्य:	(बीता हुआ कल)
सम्प्रति	अब	चेत्	यदि, तो
इदानीं	अब	उच्चै:-नीचै:	ऊपर-नीचे
यावत्	जब तक	सर्वत्र	सब ओर
तावत्	तब तक	कुत्र	कहाँ
सदा	हमेशा	एकत्र	एक स्थान
सततम्	हमेशा	कथम्	क्यों, कैसे
शनै:-शनै:	धीरे-धीरे	कञ्चित्	जैसे-तैसे
भूयो भूय:	बार-बार	कुत:	कहाँ से
मुहुर्मुहु:	बार-बार	अजस्रम्	निरंतर
असकृत्	बार-बार	नूनम्	निश्चय ही
सहसा	अचानक	खलु	निश्चय ही
अकस्मात्	अचानक	किल	निश्चय ही
सद्य:	तुरन्त	एवमेव	ऐसा ही
सपदि	तुरन्त	ध्रुवम्	अवश्य
झटिति/शीघ्रं	तुरन्त	किञ्चन	कुछ
एकदा	एकबार	किञ्चित्	कुछ
सकृत्	एकबार	केवलम्	केवल
अचिरात्	अभी	ईषत्	थोड़ा सा
अचिरेण	अभी	तूष्णीम्	चुपचाप

© NCERT
not to be republished

अचिरम्	अभी	मा	मत
अपरम्	और भी	न	नही
च	और		
अथ किम्	हाँ, और क्या	ऋते	बिना
कदाचित्	कभी, किसी समय	समया	समीप
पुरा	प्राचीन काल में	निकषा	समीप
अपि	भी	अन्यथा	अन्यथा
वृथा	व्यर्थ		

1. निम्नलिखितानाम् अव्ययानां रिक्तस्थानेषु प्रयोगं कुरुत—

सहसा, अपि, सर्वदा, यदा, अचिरम्, श्वः, ह्यः, इदानीम्, तदा

i. .... निर्णयः न करणीयः।

ii. .... गृहम् गच्छ।

iii. अहम् .... वाराणसीं गमिष्यामि।

iv. .... प्रातः भ्रमणं कुर्यात्।

v. .... मम गृहे उत्सवः आसीत्।

vi. .... अहं संस्कृतं पठामि।

vii. त्वं किम् .... गच्छसि?

viii. .... अहम् गमिष्यामि .... सः अत्र आगमिष्यति।

2. अधोलिखितेषु वाक्येषु अव्ययपदानि प्रयुक्तानि तानि पदानि चित्वा यथास्थानं लिखत—

i. यावत् परीक्षाकालः नायाति तावत् परिश्रमं कुरु।

....

ii. कालः वृथा न यापनीयः।

....

iii. अहं सम्प्रति गृहं गन्तुम् इच्छामि।

....

© NCERT not to be republished

iv. यत्र-यत्र धूम: तत्र-तत्र अग्नि: सम्भाव्यते।

....

v. पुरा अशोक: नाम राजा आसीत्।

....

vi. शीघ्रं कार्यं समापय अन्यथा विलम्ब: भविष्यति।

....

vii. अद्य प्रभृति अहं धूमपानं न करिष्यामि।

....

viii. ईषत् हसित्वा स: तस्य उपहासं कृतवान्।

....

ix. स: मुहुर्मुहु: किम् पश्यति?

....

x. अहम् त्वाम् भूयो भूय: नमामि।

....

3. कोष्ठकेभ्य: शुद्धम् अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत —

i. अहं श्व: भ्रमणाय.................................. गमिष्यामि। (विना/ध्रुवम्)

ii. विद्यालयम् .... उद्यानमस्ति। (समन्तत:/अन्यत्र)

iii. .... वद। (उच्चै:/नीचै:)

iv. .... स: पुस्तकं पठति। (अधुना/पुरा)

v. त्वम् .... गच्छसि? (कुत्र/एकत्र)

vi. कोलाहलं .... कुरु। (मा/एव)

vii. अध्यापकं दृष्ट्वा छात्र: .... स्थित:। (तूष्णीं/मुखर:)

viii. सुरेश: आपणं गच्छति .... च मित्रेण सह क्रीडिष्यति।(अपि/अपरम्)

4. निम्नलिखित-अव्ययपदानां रिक्तस्थानेषु प्रयोगं कुरुत-

कुतः, सहसा, नूनम्, यदि-तर्हि, प्रायः, अद्य, चिरम्, अथ, सर्वत्र, सदा

i. भवान् .... आगतः?

ii. .... पिपासा अस्ति .... जलं पिबतु।

iii. प्रज्ञा ....आगच्छति।

iv. .... जनाः साक्षराः सन्ति।

v. .... अद्य वर्षा भविष्यति।

vi. .... सोमवासरः अस्ति।

vii. पुष्पं .... गन्धयति।

viii. .... कथा प्रारभ्यते।

ix. ईश्वरः .... अस्ति।

x. माता पुत्री च .... नृत्यतः।

योग्यता-विस्तार —

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

अव्ययपदस्य रूपपरिवर्तनं न भवति।
त्रिषु लिङ्गेषु समानं रूपम्।
सप्तसु विभक्तिषु समानं रूपम्।
त्रिषु वचनेषु समानं रूपम्।

© NCERT not to be republished

प्रत्ययाः

कृत्प्रत्ययाः

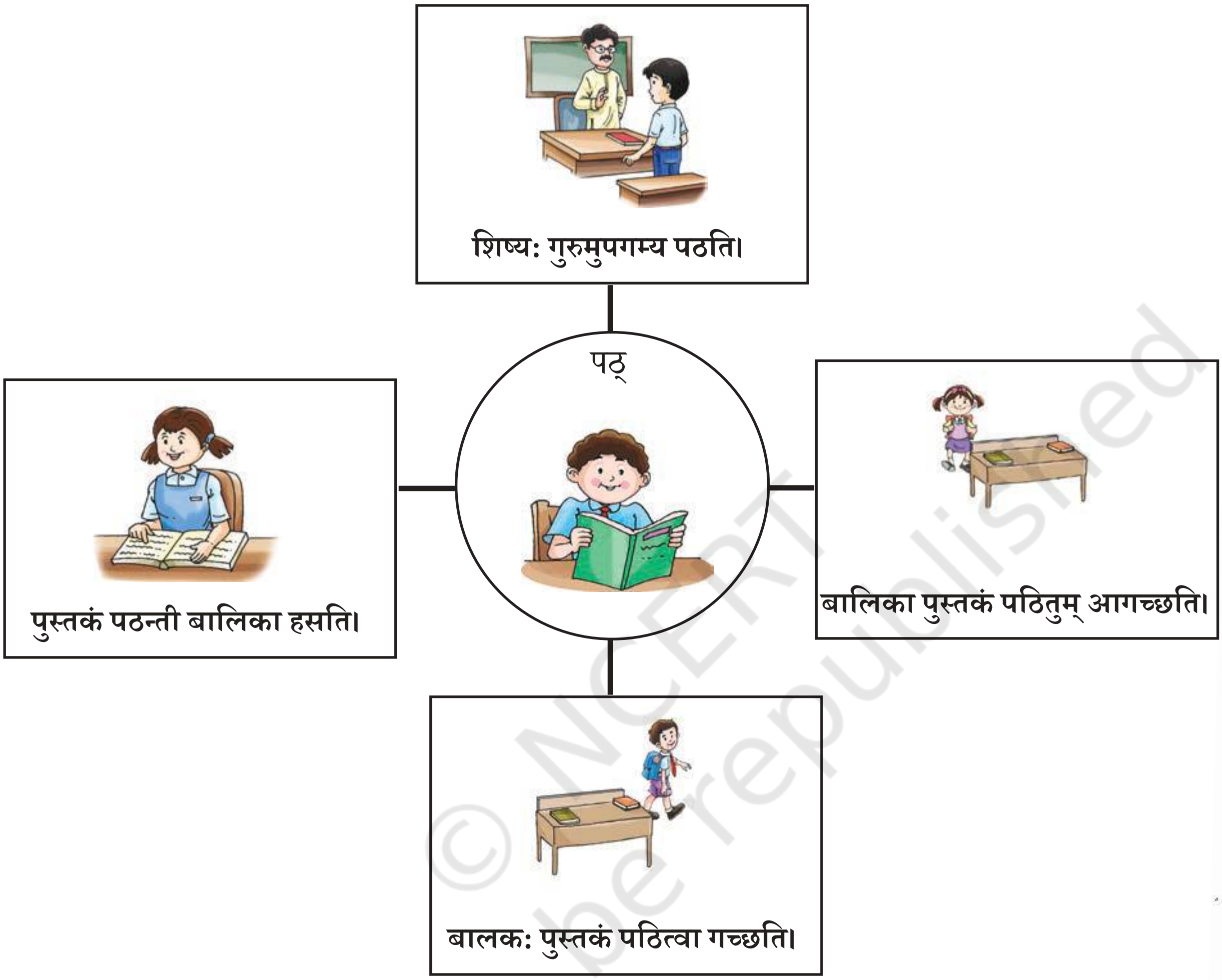

अत्र वयं पश्याम: यत् पठ्धातो: प्रयोग: विभिन्नेषु अर्थेषु भवति। अर्थस्य एषा विभिन्नता प्रत्ययानां प्रयोगेण सम्भवति। उपसर्गा: शब्देभ्य: धातुभ्य: वा पूर्वं संयुज्य अर्थपरिवर्तनं कुर्वन्ति, प्रत्ययाश्च शब्देभ्य: धातुभ्य: वा पश्चात् संयुज्य अर्थ-विस्तारं कुर्वन्ति।

क्त्वा-प्रत्ययः

(वाक्य में मुख्य क्रिया से पूर्व किए गए कार्य में पूर्वकालिक क्रिया को व्यक्त करने के लिए धातु में क्त्वा प्रत्यय का योग किया जाता है।)

यथा— बाल: आपणं **गत्वा** फलानि आनयत्। (गम् + क्त्वा = गत्वा)

© NCERT not to be republished

अध: प्रदत्त-वाक्यानि पठन्तु —

स: बहि: **दृष्ट्वा** आगच्छति। (दृश् + क्त्वा)

रमेश: मित्रं **स्पृष्ट्वा** अधावत्। (स्पृश् + क्त्वा)

स: दुग्धं **पीत्वा** शयनं करोति। (पा + क्त्वा)

गुरुं **पृष्ट्वा** एव कक्षाया: बहिर्गच्छ। (प्रच्छ् + क्त्वा)

अत्र **गत्वा, दृष्ट्वा, स्पृष्ट्वा, पीत्वा, पृष्ट्वा** इति शब्देषु **'क्त्वा'** प्रत्ययस्य प्रयोग: अस्ति। एकेन कर्त्रा यदा एकं कार्यं सम्पाद्य अन्यत् कार्यं क्रियते तदा प्रथमक्रियायामस्य प्रत्ययस्य प्रयोग: भवति।

1. कोष्ठके प्रदत्तधातुषु क्त्वाप्रत्ययप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत-

i. राम: रावणं .... सीतां प्राप्नोत्। (हन्)

ii. प्रश्नस्य उत्तरं .... छात्र: प्रसीदति। (ज्ञा)

iii. सीता गीतायै पुस्तकं .... गच्छति। (दा)

iv. सा कथां .... श्रावयति। (लिख्)

v. श्रोतार: कथां .... प्रसन्ना: भवन्ति। (श्रु)

vi. बाला: .... आगच्छन्ति। (धाव्)

vii. पुष्पं .... प्रसीदाम:। (घ्रा)

viii. गायक: गीतं .... संतुष्टिं प्राप्नोति। (गै)

ल्यप् प्रत्यय:

(पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ में ल्यप् प्रत्यय का भी प्रयोग होता है। जहाँ धातु से पूर्व कोई उपसर्ग लगा होता है वहाँ क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यथा — स: गुरुं **प्रणम्य** कक्षां गच्छति।

2. अधुना एतानि वाक्यानि पठन्तु भेदं चावगच्छन्तु —

बाल: पितरम् **अनुगम्य** कार्यं करोति। (अनु + गम् + ल्यप्)

अहं कार्यं **समाप्य** एव गमिष्यामि। (सम् + आप्+ ल्यप्)

त्वम् वृक्षम् **आरुह्य** किं करोषि? (आ + रुह् + ल्यप्)

महोदये! वृक्षात् फलं **प्राप्य** तुष्टो भवामि। एतेषु वाक्येष्वपि एकं कार्यं कृत्वा एवापरं कार्यं क्रियते परं यदा वयं ध्यानेन एतानि वाक्यानि पठाम: तदा स्पष्टं भवति यदत्र **क्त्वास्थाने** ल्यप्

2021–22

प्रत्ययस्य प्रयोगः अस्ति, यतः अत्र धातूनां प्रयोगः उपसर्गेण सह कृतः। अतः अत्र क्त्वास्थाने ल्यप्प्रत्ययः अस्ति। अधुना प्रकृति-प्रत्यय-विभागेन विस्तरेण अवगच्छामः —

यथा —	**प्रकृतिः**	**प्रत्ययः**
अनुगम्य	अनु+ गम्	ल्यप्
i. प्रणम्य	प्र+नम्	....
ii.	सम्+आप्	ल्यप्
iii. आरुह्य	..................+..................	....
iv. आदाय	..................+..................	ल्यप

3. समुचितप्रत्यय-प्रयोगेण वाक्यानि पूरयत —

छात्रः कक्षायाम् .... (उत्थाय/उत्थात्वा) प्रश्नं पृच्छति। शिक्षकः उत्तरम् .... (प्रदात्वा/प्रदाय) तं सन्तोषयति। छात्रः उत्तरं .... (ज्ञात्वा/ज्ञाय) प्रसन्नः भवति। सन्तुष्टः .... (भूत्वा/भवित्वा) पाठं च सम्यक् ....(अवगत्वा/अवगत्य) गृहं गच्छति।

तुमुन्

[निमित्तार्थक के लिए अर्थात् क्रिया को करने के लिए धातु के साथ तुमुन् प्रत्यय लगता है।]

यथा— बालकः नाटकं **द्रष्टुम्** गच्छति। (दृश् + तुमुन्)

4. अधुना एतानि वाक्यानि पठन्तु-

अहं जलं **पातुम्** इच्छामि। (पा + तुमुन्)

मयूरः **नर्तितुम्** स्वपक्षान् उद्घाटयति। (नृत् + तुमुन्)

विद्यालयं **गन्तुम्** छात्राः सज्जाः सन्ति। (गम् + तुमुन्)

पिता पुत्राय पुस्तकानि **क्रेतुम्** आपणं गच्छति। (क्री + तुमुन्)

अत्र **द्रष्टुम्, पातुम्, नर्तितुम्, गन्तुम्, क्रेतुम्,** इति शब्देषु 'तुमुन्' प्रत्ययस्य प्रयोगः अस्ति। प्रायशः चतुर्थीविभक्त्यर्थे 'तुमुन्' प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति।

उपरि प्रयुक्तानां तुमुन्-प्रत्ययान्तपदानां प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कृत्वा लिखत-

i. द्रष्टुम्- .... + ...

ii. पातुम्- .... + ...

iii. नर्तितुम्- .... + ...

© NCERT not to be republished

iv. गन्तुम्- .... + ...

v. क्रेतुम्- ....+............................

2. अधुना कोष्ठके प्रदत्तधातुषु तुमुन् प्रत्ययस्य योगेन रिक्तस्थानानि पूरयत-

एक: चौर: एकस्मिन् गृहे चौर्यं कृत्वा .... (धाव्) इच्छति। गृहस्वामी तं दृष्ट्वा तं .... (गृह्) धावति। मार्गे एक: वत्स: धेनो: क्षीरं .... (पा) तिष्ठति। छात्रा: अपि .... (पठ्) विद्यालयं गच्छन्ति स्म। अत: जनसम्मर्दे धेनुना आहत: चौर: आत्मानं .... (रक्ष्) असमर्थ: अभवत्। अत: गृहस्वामी जनै: सह चौरं ....(बन्ध्) समर्थ: अभवत्।

शतृ-प्रत्यय:

(एक कार्य को करते हुए जब अन्य कार्य भी किया जा रहा हो तो परस्मैपदी धातु के साथ शतृ प्रत्यय तथा आत्मनेपदी धातुओ में शानच् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।)

यथा— 1. **गायन्ती** बालिका नृत्यति। (गै+ शतृ+ स्त्री.)

2. **मोदमान:** बालक: पित्रे अङ्कसूचीं प्रदर्शयति। (मुद् + शानच्)

1. अध:प्रदत्तानि वाक्यानि ध्यानेन पठन्तु —

गच्छन् बालक: अपतत्। (गम्+ शतृ)

रुदन्तं बालकं रोदनस्य कारणं पृच्छ। (रुद् + शतृ)

कथां **कथयता** कथावाचकेन अद्य का कथा श्राविता? (कत् + शतृ + तृतीया विभक्ति)

हसत: बालकस्य नाम किम् अस्ति? (हस् + शतृ + षष्ठी)

एतेषु वाक्येषु गायन्ती, गच्छन्, रुदन्तम्, कथयता, हसत: इत्येता: क्रिया: अपूर्णा: सन्ति परं नृत्यति, अपतत्, पृच्छ, श्राविता, अस्ति इत्यादिभि: क्रियाभि: वाक्यानि पूर्णतां प्राप्नुवन्ति। वाक्ये शतृप्रत्यययुक्त: धातु: शब्दरूपेण परावर्तते, शब्दप्रयोगश्च विशेष्यरूपेण भवति। अत: अस्य लिङ्ग-विभक्ति- वचनञ्च विशेषणानुसारं निर्धार्यन्ते।

संयोजनेन शतृप्रत्ययस्य 'अत्' इति धातुषु प्रयुज्यते। पुल्लिङ्गे रूपाणि 'गच्छत्' शब्दानुसारं, स्त्रीलिङ्गे पुन: 'ती' इति संयोज्य (गच्छन्ती) 'नदी' शब्दानुसारं, नपुंसकलिङ्गे च 'जगत्' इति शब्दानुसारं भवन्ति।

2. अधोलिखितानि वाक्यानि पठित्वा अधुना एतत्सर्वम् प्रयोगेण जानीम: —

यथा- **(गम् + शतृ)** गन्छन्त्या बालिकया फलं खाद्यते।

हसन्तम्, पृच्छद्भि:, गच्छन्त्या, पश्यन्त:, यच्छते।

i. पिता ....**(हस् + शतृ)** पुत्रं पठनाय कथयति।

ii. पुस्तकं .... **(दा + शतृ)** छात्राय पुस्तकालयाध्यक्ष: परीक्षाया: प्रवेशपत्रं यच्छति।

iii. नाटकं .... **(दृश् + शतृ)** दर्शका: करतलवादं कुर्वन्ति।

iv. मार्गं .... **(प्रच्छ् + शतृ)** पथिकै: छायायां विश्रम्यते।

3. अधुना समुचितपदप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत —

i. रूप्यकाणि .... श्रमिक: प्रसन्न: भवति। (गणयन्/गणयतागणयन्तम्)

ii. जलं .... छात्रेण कक्षायां स्थीयते (पिबन्/पिबता/पिबन्तम्)

iii. पुत्रीं .... (पाल् + शतृ) माता गीतं गायति (पालयन्ती/पालयत्यै/पालयन्तीम्)

iv. भोजनं .... (पच् + शतृ) सूदाय शाकानि प्रयच्छ। (पचन्तम्/पचति/पचते)

v. स: उपरि .... (दृश् + शतृ) पतति। (दृश्यन्/पश्यन्/पश्यन्ती)

शानच् प्रत्यय:

याचमानाय भिक्षुकाय धनं यच्छ।

वृद्धाश्रमे **सेवमानानां** बालिकानां नामानि वद।

पूर्णचन्द्रेण **शोभमानायां** निशायां नौकाविहार: अतीव रोचते।

मालाकार: उद्यानात् पुष्पाणि **नयन्तीम्** बालिकां पुष्पत्रोटनात् वारयति।

अत्रापि मोदमान:, याचमानाय, सेवमानानाम्, शोभमानायाम्, नयन्तीम् इत्येतानि पदानि अपूर्णक्रियायै प्रयुक्तानि परमत्र शतृप्रत्ययस्य स्थाने शानच् प्रत्यय: प्रयुक्त: यत: अत्र प्रयुक्ता: धातव: आत्मनेपदिन: सन्ति। अस्य प्रत्ययस्य शकार: मकारे परिवर्त्य चकारस्य लोपेन 'मान' इति अशं धातुभिस्सह संयोज्य शब्दनिर्माणं भवति। पुल्लिङ्गे, स्त्रीलिङ्गे, नपुंसकलिङ्गे च शब्दरूपाणि क्रमश: देववत्, रमावत्, फलवच्च भवन्ति।

© NCERT not to be republished

1. अधुना समुचितपदप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत —

i. नाटकम् .... जना: प्रसीदन्ति। (ईक्षमाण:/ईक्षमाणौ/ईक्षमाणा:)

ii. सज्जनानां मैत्री क्रमेण .... भवति। (वर्धमाना/वर्धमाने/वर्धमाना:)

iii. शीतेन .... वानरं खगा: गृहनिर्माणाय अकथयन् (कम्पमान:/कम्पमानम्/कम्पमानेन)

iv. दीपावल्यां प्रकाशेन .... वीथिषु अमावस्याया: अन्धकार: सर्वथा नश्यति। (शोभमानायाम्/शोभमानयो:/शोभमानासु)

v. वृद्ध: .... बालिकायै आशीर्वचनानि कथयति। (सेवमानाया:/सेवमानाम्/सेवमानायै)

2. उदाहरणानुसारं पूर्वक्रियायां शतृ/शानच् प्रत्यय-प्रयोगेण वाक्यानि पुन: लिखत-

यथा– शिशु: चलति, स: रोदिति – **चलन्** शिशु: रोदिति।

याचक: याचते। स: एकं गृहं गच्छति।

यथा– **याचमान:** याचक: एकं गृहं गच्छति।

उपदेशक: उपदिशति। स: ज्ञानचर्चां करोति।

उषा गायति। सा उद्याने भ्रमति।

सैनिक: युद्धक्षेत्रे प्रहरति। स: शत्रुं मारयति।

बालिका दुग्धं पिबति। सा प्रसन्ना भवति।

मोहन: दु:खं सहते। स: ईश्वरं प्रार्थयति।

क्तिन् प्रत्यय: (ति)

देश की बहुत सी भाषाओं में क्तिन् प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग होता है, जिन्हें हम सहजता से समझ सकते हैं।

अस्य प्रत्ययस्य प्रयोग: भाववाचकसंज्ञापदानां निर्माणाय भवति यथा —

श्रु + क्तिन् - श्रुति:
स्तु + क्तिन् - स्तुति:
कृ + क्तिन् - कृति:
मन् + क्तिन् - मति:

एतेषां पदानां शब्दरूपाणि मतिशब्दवद् भवन्ति।

1. अधोलिखितवाक्येभ्य: क्तिन्–प्रत्यययुक्तान् शब्दान् आदाय उदाहरणानुसारं प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत —

रामायणम् वाल्मीके: कृति: अस्ति-	कृति:-	कृ+	क्तिन्
i. मनुष्यजन्मन: प्राप्ति: पुण्येन भवति।	....	....	....
ii. रमाया: बुद्धि: अत्युत्तमा।	....	....	....
iii. भक्त: ईश्वरस्य भक्तिं करोति।	....	....	....
iv. वानरस्य दृष्टि: फले अस्ति।	....	....	....
v. सिंहात् कस्य भीति: न जायते?	....	....	....

तद्धितप्रत्यया:

मतुप् (मत्)

देश की बहुत सी भाषाओं में मतुप् प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग होता है जिन्हें हम सहजता से समझ सकते हैं। वाला अर्थात् इसके पास है, इस अर्थ में स्वरान्त शब्दों से मतुप् प्रत्यय का योग किया जाता है। उप् का लोप होकर केवल यत् जुड़ता है।

यथा — **शक्तिमान्** जन: स्वशक्ते: प्रयोगं यथास्थानमेव कुर्यात्।

श्रीमान् श्रिया युक्त: भवति।

बलवान् जन: स्वबलस्य प्रयोगं दुर्बलेषु न कुर्यात्।

गुणवान् एव गुणानां महत्त्वं जानाति।

कीर्तिमत: कीर्ति: स्वयमेव प्रसरति।

'अस्यास्ति' इत्यर्थे युक्तताया: बोधने मतुप् (मत्) प्रत्ययस्य प्रयोग: भवति। शब्दान्ते अकार: यद्यस्ति तदा **'मतुप् (मत्)'** इत्यस्य परिवर्तनं **'वतुप् (वत्)'** इत्येतस्मिन् भवति।

प्रत्यययोजनानन्तरं रूपाणि **'भवत्'** इति हलन्तशब्दानुसारं भवन्ति।

यथा उपर्युक्तवाक्येषु 'कीर्तिमत:' शब्दस्य प्रयोग: षष्ठ्यां विभक्त्यां कृत:।

समुचितशब्दं (✓) इति चिह्नेन चिह्नीकुरुत, प्रदत्तस्थाने च लिखत —

i. मधुवान्/मधुमान् मधु खादति। ....

ii. बलवन्तं/बलमन्तं जनं पश्य। ....

iii. विद्यामान्/विद्यावान् जगति शोभते। ....

iv. रूपवता/रूपमता स्वरूपस्य गर्वः न करणीयः। ....

v. कीर्तिमता/कीर्तिवता कविकालिदासेन अभिज्ञानशाकुन्तलं नाम नाटकं रचितम्। ......
....

णिनि (इनि)

देश की बहुत सी भाषाओं में णिनि प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग होता है जिन्हें हम सहजता से समझ सकते हैं।

युक्ततायाः अर्थे एव इनि (इन्) प्रत्ययस्य योगः क्रियते।

यथा — रथेन युक्तः- रथी (रथिन्)

बलेन युक्तः - बली (बलिन्)

धनेन युक्तः - धनी (धनिन्)

गुणेन युक्तः - गुणी (गुणिन्)

एतेषां प्रयोगः अपि वाक्येषु शब्दरूपनिर्माणाय क्रियते।

विशेषण- विशेष्यपदानि योजयत —

धनिना	राजानम्	....	....
गुणिने	राज्ञि	....	....
रथिनम्	पुरुषेण	....	....
बलिनि	शासकम्	....	....
दण्डिनम्	नृपाय	....	....

तरप्-तमप् (तर-तम)

देश की बहुत सी भाषाओं में तरप्-तमप् प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग होता है जिन्हें हम सहजता से समझ सकते हैं।

लघुः	लघुतरः	लघुतमः
प्रशस्यः	प्रशस्यतरः	प्रशस्यतमः
कुशलः	कुशलतरः	कुशलतमः

एभिः उदाहरणैः स्पष्टं भवति यत् तुलनायां तरप्-तमप् प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति। यदा द्वयोः मध्ये तुलना क्रियते तदा तरप्प्रत्ययस्य, यदा च अधिकैः सह तुलना तदा तमप्प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति।

1. अधोलिखितवाक्येषु समुचितपदेन रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत —

i. अविनाशः स्वकार्ये .... । (पटुः/पटुतरः/पटुतमः)

ii. सर्वेषु छात्रेषु प्रमोदः .... । (कुशलः/कुशलतरः/कुशलतमः)

iii. फलेषु आम्रफलम् .... । (मधुरम्/मधुरतम्/मधुरतमम्)

iv. अश्वगर्दभयोः मध्ये अश्वः .... । (तीव्रः/तीव्रतरः/तीव्रतमः)

v. गीतासुशीलयोः मध्ये गीता .... । (कुशला/कुशलतरा/कुशलतमा)

vi. वृक्षेषु देवदारुवृक्षः .... । (उच्चः/उच्चतरः/उच्चतमः)

मयट् प्रत्ययः (मय)

देश की बहुत सी भाषाओं में मयट् प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग होता है जिन्हें हम सहजता से समझ सकते हैं।

- प्रचुरतायाः अर्थे मयट् (मय) प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति।
- वस्तुवाचकशब्दैः (खाद्यवस्तूनि विहाय) विकारार्थेऽपि मयट् प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति।

  यथा — स्वर्णमयः, तेजोमयः, मृण्मयः इत्यादि।

1. मयट्प्रत्यययुक्तानि पदानि आदाय प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत —

i. सौन्दर्यमयी कलिका उद्याने शोभते। ....

ii. स्वर्णमयम् आभूषणं बहुमूल्यं भवति। ....

iii. तुला लौहमयी भवति। ....

iv. शान्तिमयं जीवनमेव श्रेयस्करम्। ....

v. आनन्दमयं सुखमयम् च विद्यार्थिजीवनम्। ....

स्त्री-प्रत्ययाः

(देश की बहुत सी भाषाओं में स्त्री-प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग होता है जिन्हें हम सहजता से समझ सकते हैं।)

पुल्लिङ्गशब्देभ्यः स्त्रीलिङ्गपदनिर्माणाय ये प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते ते स्त्रीप्रत्ययाः इति कथ्यन्ते। प्रमुखाः स्त्रीप्रत्ययाः सन्ति —

(क) टाप्, डाप्, चाप् (एषु 'आ' अवशिष्यते।)

(ख) ङीप्, ङीष्, ङीन् (एषु 'ई' अवशिष्यते।)

© NCERT not to be republished

(क) यथा–

अज	-	अजा	बालक	-	बालिका
बाल	-	बाला	सेवक	-	सेविका
सरल	-	सरला	नायक	-	नायिका
कृष्ण	-	कृष्णा	मूषक	-	मूषिका

(ख) यथा–

गोप	-	गोपी	मृदु	-	मृद्वी
देव	-	देवी	पटु	-	पट्वी
नद	-	नदी	साधु	-	साध्वी
व्याघ्र	-	व्याघ्री	गुरु	-	गुर्वी

अभ्यास:

1. प्रदत्तवाक्येषु लिङ्गपरिवर्तनं कृत्वा वाक्यानि पुन: लिखत-

यथा- एक: बाल: जलं पातुम् इच्छति। एका बालिका जलं पातुम् इच्छति।

i. स: सेविकाम् आकारयति। ....

ii. अस्य नाटकस्य नायक: क: अस्ति? ....

iii. आचार्य: स्नेहेन पाठयति। ....

iv. चतुरा बालिका सम्माननीया। ....

v. श्रीमान् कुत्र गच्छति? ....

vi. सभायाम् अनेके विद्वांस: आगच्छन्। ....

vii. बुद्धिमान् बाल: पुरस्कारं लभते। ....

viii. गतवती महिला किम् उक्तवती? ....

© NCERT not to be republished

9

0975CH09

समासा:

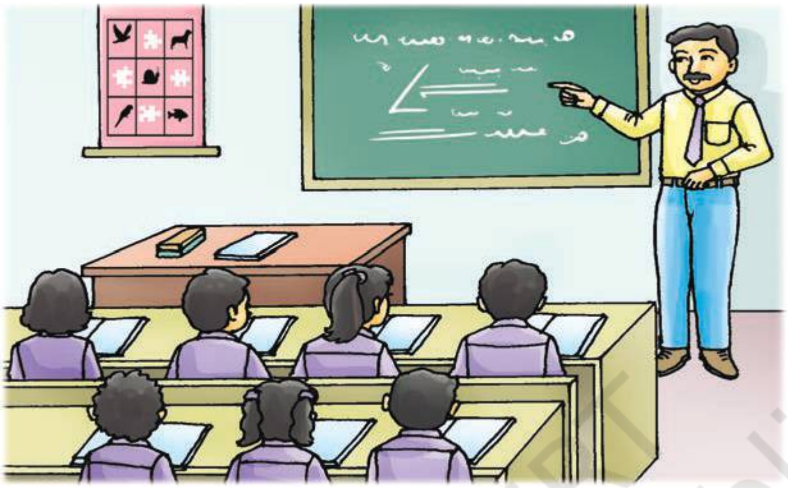

(अध्यापक: कक्षायां प्रविशति। छात्रा: उत्थाय अभिवादनं कुर्वन्ति।

अध्यापक: – (एकं छात्रम् उद्दिश्य) पङ्कज! किमर्थं खिन्न: इव दृश्यसे?

पङ्कज: – गुरुवर! एष शुभङ्कर: माम् सर्वदा 'पङ्के जात:' इति सम्बोधयति। न रोचते एतत् मह्यम्।

मनोज: – आम् गुरुवर! एष: माम् अपि 'मनसि जायते' इति उपहसति।

यशोदा – परम् यदा एष: माम् 'यश: ददाति या' इति कथयति तदा अहं तु प्रसन्ना भवामि।

घनश्याम: – माम् अपि एष: 'घन इव श्याम:' इति कथयति।

सुरेश: – माम् तु एष 'सुराणाम् ईश:' इति कथयति।

सर्वे छात्रा: – गुरुवर! कृपया एनम् अवबोधयतु येन स: एवं मा व्यवहरेत्।

अध्यापक: – (विहस्य) शुभङ्कर! किं त्वम् आत्मन: नाम अपि 'शुभं करोति' इति एवम् उच्चारयसि?

(सर्वे छात्रा: उच्चै: हसन्ति।)

अध्यापक: – भो छात्रा:! भवताम् नाम्नां कृते शुभङ्कर: यानि कानि अपि पदानि प्रयोजयति तानि न कथमपि अनुचितानि। वस्तुत: स: युष्माकं नाम्नां विग्रहम् एव प्रयोजयति।

छात्रा: – कृपया विस्तरेण बोधयन्तु।

अध्यापक: – बाढम्। ध्यानेन एतत् कथनं शृणुत- एकदा नीले अक्षिणी यस्या:, सा माता च पिता च, तौ प्रणम्य, लम्बम् उदरम् यस्य तम्, घन इव श्यामम्, पार्वती च परमेश्वर: च, तौ प्रणतवती, गृहस्य उद्याने विशाल: च एष: वृक्ष:, तत्र आरूढम् एकं वानरम् अपश्यत्।

छात्रा: – गुरुवर! भवत: कथनम् अवगन्तुम् अक्षमा: वयम्।

अध्यापक: – अधुना पुन: शृणुत- एकदा नीलाक्षी पितरौ प्रणम्य लम्बोदरं घनश्यामं पार्वतीपरमेश्वरौ च प्रणतवती। तत: गृहोद्याने विशालवृक्षारूढम् एकं वानरम् अपश्यत्।

प्रथमं मया यानि पदानि प्रयुक्तानि तानि विग्रहवाक्यानि आसन्। पुन: मया तत्स्थाने समस्तपदानि प्रयुक्तानि। एतद्विषयं विस्तरेण एवम् अवगच्छाम: - यदा अनेकपदानां स्थाने विभक्तिलोपं कृत्वा एकपदं प्रयुज्यते तदा तत् पदं समस्तपदं भवति। समासप्रक्रियायाम् अनेन भाषासौष्ठवं लाघवं च परिज्ञायते। कथितमस्ति - **'समसनं समास:।'**

समासस्य मुख्यत: चत्वार: भेदा: सन्ति - अव्ययीभाव:, तत्पुरुष:, द्वन्द्व:, बहुव्रीहिश्च। तत्पुरुषस्य अन्यौ द्वौ मुख्यौ भेदौ अपि स्त: - कर्मधारयंद्विगुश्च। एतदतिरिक्तम् अलुक्, नञ्, उपपदतत्पुरुष: च अस्य भेदा: भवन्ति।

अस्मिन् अध्याये वयम् केवलं तत्पुरुष-द्विगु-द्वन्द्व-समासानां विशिष्टम् अभ्यासं करिष्याम:।

तत्पुरुष: समास:
(उत्तरपदप्रधान: तत्पुरुष:)

अस्मिन् समासे उत्तरपदं प्रधानं भवति। विग्रहे पूर्वपदेन सह विभक्तिप्रयोग: भवति। विग्रहे या विभक्ति: प्रयुज्यते तया नाम्ना एवास्य तत्पुरुष-समासस्य नाम भवति।

यथा —

समस्तपदानि	विग्रह:	समासनाम
शरणागत:	शरणम् आगत:	द्वितीय-तत्पुरुष:
हरित्रात:	हरिणा त्रात:	तृतीया-तत्पुरुष:
पाकशाला	पाकाय शाला	चतुर्थी-तत्पुरुष:
रोगमुक्त:	रोगात् मुक्त:	पञ्चमी-तत्पुरुष:
राजपुरुष:	राज्ञ: पुरुष:	षष्ठी-तत्पुरुष:
जलमग्न:	जले मग्न:	सप्तमी-तत्पुरुष:
युधिष्ठिर:	युधि स्थिर:	अलुक्-तत्पुरुष:

कुम्भकार:	कुम्भं करोति इति	उपपद-तत्पुरुष:
अज्ञानम्	न ज्ञानम् इति	नञ्-तत्पुरुष:

- नञ्-तत्पुरुषे यदि पदस्य प्रथमवर्ण: स्वर: भवति तदा समस्तपदे 'न' स्थाने 'अन्' प्रयुज्यते परं यदि शब्दस्य प्रथमवर्णं व्यञ्जनं भवति तदा 'न' स्थाने 'अ' प्रयुज्यते।

द्विगु: समास:
(संख्यापूर्वो द्विगु:)

यस्मिन् समासे प्रथमपदं संख्यावाचि भवति समाहारस्य (एकत्रीकरणस्य) च भाव: अस्ति स: द्विगुसमास: भवति।

यथा —

समस्तपदम्	**विग्रह:**
पञ्चपात्रम्	पञ्चानां पात्राणां समाहार:
चतुर्युगम्	चतुर्णां युगानां समाहार:
त्रिभुवनम्	त्रयाणां भुवनानां समाहार:
अष्टाध्यायी	अष्टानाम् अध्यायानां समाहार:

द्वन्द्व-समास:
(उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्व:)

द्वन्द्वसमासे उभयो: पदयो: प्रधानता भवति। विग्रहे प्रतिपदं पश्चात् 'च' इति पदस्य प्रयोग: भवति।

यथा —

समस्तपदम्	**विग्रह:**
रामकृष्णौ	राम: च कृष्ण: च
पितरौ/मातापितरौ	माता च पिता च
कन्दमूलफलानि	कन्दं च मूलं च फलं च
पाणिपादम्	पाणी च पादौ च

अभ्यास:

1. प्रदत्तपदानां विग्रहं कृत्वा समासनाम लिखत —

समस्तपदम्	**विग्रह:**	**नाम**
विद्यालय:	**विद्याया: आलय:**	**तत्पुरुष:**
i. सप्तर्षि:	....	....
ii. खलसज्जनौ	....	....

© NCERT not to be republished

iii. गृहोद्याने ....

iv. विभवहीना: ....

v. चतुर्भुजम् ....

vi. पत्रपुष्पे ....

vii. लौहघटिता ....

viii. खगोत्तम: ....

ix. सुखदु:खे ....

x. त्रिलोकी ....

2. प्रदत्तपदेषु समासं कृत्वा समासनाम लिखत —

विग्रहः	**समस्तपदम्**	**नाम**
कुसुमानाम् आवलिः	**कुसुमावलिः**	**तत्पुरुषः**
i. सप्तानां पदानां समाहार:	....	....
ii. परेषाम् उपकार:	....	....
iii. राम: च लक्ष्मण: च	....	....
iv. न पेयम्	....	....
v. धर्म: च अर्थ: च	....	....
vi. काम: च मोक्ष: च	....	....
vii. पञ्चानां वटानां समाहार:	....	....
viii. मातु: गृहे	....	....
ix. न इष्टम्	....	....
x. त्रयाणां भुवनानां समाहार:	....	....
xi. लाभ: च अलाभ: च	....	....

© NCERT not to be republished

10

0975CH10

शब्दरूपाणि

अकारान्तपुँल्लिङ्गशब्दः —

देव

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवः	देवौ	देवाः
द्वितीया	देवम्	देवौ	देवान्
तृतीया	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
चतुर्थी	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
पञ्चमी	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
षष्ठी	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
सप्तमी	देवे	देवयोः	देवेषु
सम्बोधनम्	हे देव!	हे देवौ!	हे देवाः!

एवमेवान्येषाम् अकारान्तशब्दानां यथा बालक, हंस, मृग, वृक्ष, सागर, राम, नृप, गज, विद्यालय, पुस्तकालय इत्यादीनां शब्दानां रूपाण्यपि भवन्ति।

अधुना प्रयोगं कुर्मः

प्रथमा विभक्तिः

गजः शनैः चलति।

बालकौ अत्र पठतः।

.... धावन्ति। (मृग)

द्वितीया विभक्तिः

महेशः पाठं पठति।

सोहनः वृक्षौ पश्यति।

रोहितः.................... पूजयति। (देव)

तृतीया विभक्तिः

छात्रः कलमेन लिखति

वयं .... कार्यं कुर्मः (हस्त)

पशवः .... चलन्ति (पाद)

चतुर्थी विभक्तिः

सः पठनाय गच्छति

माला .... फलानि आनयति (सुत)

सुधा .... पुस्तकानि नयति। (बालक)

पञ्चमी विभक्तिः

घटात् जलं वहति।

....

षष्ठी विभक्तिः

रामस्य पिता दशरथः आसीत्।

....

© NCERT not to be republished

सप्तमी विभक्तिः	सम्बोधनविभक्तिः
नकुलः बिले प्रविशति	हे छात्र! पुस्तकं पठ ....

अकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दः
'फल'

प्रथमा - फलम् फले फलानि
द्वितीया- फलम् फले फलानि
अन्यविभक्तिषु पुँल्लिङ्गवत्।

एवमेव चक्र, पुस्तक, सोपान, क्रीडनकैः, वस्त्र, स्यूत, नेत्र, पुष्प इत्यादिशब्दानां रूपाण्यपि भवन्ति।

अधुना प्रयोगं कुर्मः।

प्रथमा विभक्तिः
फलं पतति
पुस्तके स्तः
चक्राणि चलन्ति

द्वितीया विभक्तिः
सः पुष्पं पश्यति।
....

तृतीया विभक्तिः
वयं नेत्राभ्यां पश्यामः।
....
बालकाः क्रीडनकैः खेलन्ति।
....
....
सः सोपानेभ्यः अवतरति

चतुर्थी विभक्तिः
सः पुस्तकाय पुस्तकालयं गच्छति।
....

षष्ठी विभक्तिः
क्रीडनकस्य वर्णः रक्तः अस्ति।
....

सप्तमी विभक्तिः
पुस्तके चित्राणि सन्ति।
....

आकारान्तस्त्रीलिङ्ग-शब्दः

रमा

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमा:
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमा:
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभि:
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्य:
पञ्चमी	रमाया:	रमाभ्याम्	रमाभ्य:
षष्ठी	रमाया:	रमयो:	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयो:	रमासु
सम्बोधनम्	हे रमे!	हे रमे!	हे रमा:!

एवमेव गीता, सीता, प्रभा, लतिका, शाखा, नौका, रोटिका, घटिका, माला, आभा इत्यादीनाम् आकारान्तशब्दानां रूपाण्यपि भवन्ति।

प्रयोग: —

प्रथमा विभक्तिः
बालिका लिखति।
शाखे पतत:
....

द्वितीया विभक्तिः
राम: सीतां वने अत्यजत्।
स: नौके पश्यति।
....

तृतीया विभक्तिः
घटिकया समयज्ञानं भवति।
स: कथाभ्याम् मनोरञ्जनं करोति।
....

चतुर्थी विभक्तिः
स: मालाभ्य: पुष्पाणि चिनोति।
....

पञ्चमी विभक्तिः
वाटिकाया: पुष्पाणि आनयति।
....

षष्ठी विभक्तिः
महिलाया: शाटिका सुन्दरीअस्ति।
....

सप्तमी विभक्तिः
शाखयो: पत्राणि सन्ति।
....

सम्बोधनम्
हे प्रभो! पुस्तकं पठ।
....
....

© NCERT not to be republished

इकारान्तपुँल्लिङ्गशब्दः —
मुनि

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधनम्	हे मुने!	हे मुनी!	हे मुनयः!

एवमेव - कपि, हरि, गिरि, विधि, अग्नि, ऋषि, नृपति, कवि, भूपति, वाल्मीकि, इत्यादीनां रूपाणि भवन्ति।

इदानीं प्रयोगं पश्यामः—

प्रथमा विभक्तिः

मुनिः वने वसति।

ऋषी तपस्यां कुरुतः

....

द्वितीया विभक्तिः

वृक्षे कपिं पश्य।

....

....

तृतीया विभक्तिः

कविना मधुरकविता रचिता।

....

चतुर्थी विभक्तिः

भूपतये आसनम् इदम्।

....

नृपतिभ्यः प्रजाः स्वपुत्रवत् भवितव्याः

पञ्चमी विभक्तिः

अग्नेः दूरं तिष्ठ।

....

षष्ठी विभक्तिः

हिमालयः गिरेः नाम अस्ति।

....

सप्तमी विभक्तिः

ऋषिषु तपस्याशक्तिः भवति।

....

सम्बोधनम्

हे विधे! पाहि माम्।

....

© NCERT not to be republished

अपवाद: — अत्र एतदपि ध्यातव्यं यत् सखि, पति-इत्येतयो: इकारान्त- शब्दयो: रूपाणि मुनिशब्दरूपात् पृथक् भवन्ति। परं यदा 'पति' शब्दस्य प्रयोग: समासान्ते भवति, तदा मुनिवत् एव रूपाणि भवन्ति यथा- श्रीपति, भूपति, नृपति, नरपति इत्यादिशब्दानां मुनिवदेव प्रयोग: कृत:। परं यदा पति-शब्द: पृथक्रूपेण भवति तदा तृतीयात: सप्तमीपर्यन्तं एकवचने रूपाणि एवम् भवन्ति —

तृ.ए	**च.ए**	**पं. ष.ए**	**स.**
पत्या	पत्ये	पत्यु:	पत्यौ

एवमेव सखि (मित्र)

प्रथमा	-	सखा	सखायौ	सखाय:
द्वितीया	-	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीयात: सप्तमीपर्यन्तं पतिवत्				
सम्बोधनम्	-	सखे	सखायौ	सखाय:

एतेषाम् अन्यशब्दानां चाऽपि रूपाणि परिशिष्टात् पठित्वा प्रयोगाभ्यासं कुरुत –

1. निर्देशानुसारं विभक्तिं प्रयुज्य वाक्यपूर्तिं कुरुत —

i. ग्रीष्मर्तौ .... आतप: उष्णतर: भवति। (भानु-षष्ठी)

ii. ग्रामे .... गोचारणभूमि: अस्ति।(धेनु-चतुर्थी-बहु.)

iii. .... दुग्धम् अतिमधुरं भवति। (धेनु-षष्ठी-एक.)

iv. वसन्तर्तौ .... मत्त: पिक: मधुरं कूजति।(मधु-तृतीया-एक.)

v. .... बहव: गुणा: भवन्ति। (मधु-सप्तमी-एक.)

vi. मम .... सर्वे छात्रा: योग्या: सन्ति। (मति-सप्तमी)

vii. जना: .... प्रयोगेण एव कार्यं कर्तुं क्षमा: भवन्ति।(बुद्धि-षष्ठी)

viii. पुत्र: .... सह आपणं गच्छति। (पितृ- तृतीया)

ix. राजा दिलीप: प्रजानां पिता आसीत् तासां .... केवलं जन्महेतव: आसन्। (पितृ-प्रथमा -बहु.)

व्यञ्जनान्तशब्दा:

i. .... अजस्य पुत्र: दशरथ: नाम नृप: आसीत्। (राजन्-षष्ठी)

ii. .... विनयशीला: भवन्ति। (विद्वस्-प्रथमा बहु.)

iii. ग्रीष्मर्तौ .... दर्शनेन शान्तिरनुभूयते।(चन्द्रमस्-षष्ठी)

iv. यथा .... तथा चित्ते अपि सत्यता भवेत्। (वाच्-सप्तमी)

© NCERT not to be republished

v. किं .... श्रुतं यदस्माभिः कथितम् (भवत्-तृतीया बहु.)

vi. .... प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।(आत्मन्-षष्ठी)

vii. .... श्रद्धापुष्पाणि अर्पयामि अहम्। (विद्वस्-चतुर्थी-बहु.)

viii. .... बालकाभ्याम् किं पातितं तत्र? (गच्छत्-तृतीया-द्वि)

ix. मनुष्यः आत्मना एव .... उद्धरेत्। (आत्मन्-द्वितीया-एक.)

x. .... प्रजानां रक्षकाः स्युः। (राजन्-प्रथमा-बहु.)

सर्वनामशब्दाः

सर्वनामशब्दाः विशेषणरूपेण एव प्रयुज्यन्ते। अतः लिङ्गम् विभक्तिश्च विशेष्यपदानुसारमेव प्रयुज्यते। एतदाधारेणैव अधःप्रदत्तवाक्येषु रिक्तस्थानानि पूरयत —

i. ....ज्ञानेन कः लाभः यत् क्रियान्वितं न स्यात्। (तत्)

ii. .... नाटकस्य रचयिता कः ?(इदम्)

iii. भाषणप्रतिस्पर्धायाः पुरस्कारः .... बालिकया प्राप्तः? (किम्)

iv. .... समारोहे त्वं गमिष्यसि तस्य आयोजनं कुत्र भवति?(यत्)

v. .... बालकाः अत्र आगत्य प्रसन्नाः भवन्ति। (सर्व)

vi. .... बालिकानां नाम अकारेण प्रारभ्यते ताः अत्र आगच्छन्तु (यत्)

vii. ....स्यूते अद्य साहित्यस्य पुस्तकं नास्ति। (अस्मद्-षष्ठी-एक.)

viii. .... एतत् कार्यं किमर्थं न कृतम्? (युष्मद्-तृतीया-बहु.)

ix. .... प्रयोगशालायां कः प्रयोगः क्रियते?(तत्)

x. .... कथायाः रचयिता कः? (इदम्)

संख्यापदानि

पुँल्लिङ्गे	**स्त्रीलिङ्गे**	**नपुंसकलिङ्गे**
एक पेड़	एक बेल	एक फल
एकः वृक्षः	एका लता	एकं फलम्
दो पेड़	दो बेल	दो फल
द्वौ वृक्षौ	द्वे लते	द्वे फले
तीन पेड़	तीन बेल	तीन फल

त्रय: वृक्षा:	तिस्र: लता:	त्रीणि फलानि
चार पेड़	चार बेल	चार फल
चत्वार: वृक्षा:	चतस्र: लता:	चत्वारि फलानि

* एकत: चतु:पर्यन्तानि सङ्ख्यापदानि त्रिषु लिङ्गेषु भिन्नानि भवन्ति पञ्चत: च शतंपर्यन्तं समानानि भवन्ति।
* एकत: दश-पर्यन्तं सङ्ख्यापदानां प्रयोग: सर्वासु विभक्तिषु भवति।

एक (एकवचने)

विभक्ति:	**पुँल्लिङ्गे**	**स्त्रीलिङ्गे**	**नपुंसकलिङ्गे**
प्रथमा	एक:	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्या:	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	एकस्या:	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि (द्विवचने)

विभक्ति:	**पुँल्लिङ्गे**	**स्त्रीलिङ्गे**	**नपुंसकलिङ्गे**
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयो:	द्वयो:	द्वयो:
सप्तमी	द्वयो:	द्वयो:	द्वयो:

त्रि (बहुवचने)

विभक्ति:	**पुँल्लिङ्गे**	**स्त्रीलिङ्गे**	**नपुंसकलिङ्गे**
प्रथमा	त्रय:	तिस्र:	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्र:	त्रीणि
तृतीया	त्रिभि:	तिसृभि:	त्रिभि:

© NCERT not to be republished

चतुर्थी	त्रिभ्य:	तिसृभ्य:	त्रिभ्य:
पञ्चमी	त्रिभ्य:	तिसृभ्य:	त्रिभ्य:
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

चतुर् (बहुवचने)

विभक्ति:	पुँल्लिङ्गे	स्त्रीलिङ्गे	नपुसंकलिङ्गे
प्रथमा	चत्वार:	चतस्र:	चत्वारि
द्वितीया	चतुर:	चतस्र:	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भि:	चतसृभि:	चतुर्भि:
चतुर्थी	चतुर्भ्य:	चतसृभ्य:	चतुर्भ्य:
पञ्चमी	चतुर्भ्य:	चतसृभ्य:	चतुर्भ्य:
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

पञ्चत: दश-पर्यन्तं शब्दरूपाणि (सर्वेषु लिङ्गेषु समानानि)

विभक्ति:	पञ्चन्	षष्	सप्तन्	अष्टन्	नवन्	दशन्
प्रथमा	पञ्च	षट्	सप्त	अष्ट	नव	दश
द्वितीया	पञ्च	षट्	सप्त	अष्ट	नव	दश
तृतीया	पञ्चभि:	षड्भि:	सप्तभि:	अष्टभि:	नवभि:	दशभि:
चतुर्थी	पञ्चभ्य:	षड्भ्य:	सप्तभ्य:	अष्टभ्य:	नवभ्य:	दशभ्य:
पञ्चमी	पञ्चभ्य:	षड्भ्य:	सप्तभ्य:	अष्टभ्य:	नवभ्य:	दशभ्य:
षष्ठी	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
सप्तमी	पञ्चसु	षट्सु	सप्तसु	अष्टसु	नवसु	दशसु

एकादशत: पञ्चाशत्-पर्यन्तं संख्यापदानि

11 एकादश	21 एकविंशति:	31 एकत्रिंशत्	41 एकचत्वारिंशत्
12 द्वादश	22 द्वाविंशति:	32 द्वात्रिंशत्	42 द्विचत्वारिंशत्
13 त्रयोदश	23 त्रयोविंशति:	33 त्रयस्त्रिंशत्	43 त्रयश्चत्वारिंशत्
14 चतुर्दश	24 चतुर्विंशति:	34 चतुस्त्रिंशत्	44 चतुश्चत्वारिंशत्
15 पञ्चदश	25 पञ्चविंशति:	35 पञ्चत्रिंशत्	45 पञ्चचत्वारिंशत्
16 षोडश	26 षड्विंशति:	36 षट्त्रिंशत्	46 षट्चत्वारिंशत्

© NCERT not to be republished

17 सप्तदश	27 सप्तविंशति:	37 सप्तत्रिंशत्	47 सप्तचत्वारिंशत्
18 अष्टादश	28 अष्टाविंशति:	38 अष्टात्रिंशत्	48 अष्टचत्वारिंशत्
19 नवदश/ एकोनविंशति:	29 नवविंशति:/ एकोनत्रिंशत्	39 नवत्रिंशत्/ एकोनचत्वारिंशत्	49 नवचत्वारिंशत्/ एकोनपञ्चाशत्
20 विंशति:	30 त्रिंशत्	40 चत्वारिंशत्	50 पञ्चाशत्

1. उचितै: संख्यापदै: रिक्तस्थानानि पूर्यन्ताम् —

i. अहम् .... (2) नेत्राभ्याम् पश्यामि।

ii. .... (1) पात्रे .... (9) फलानां रस: वर्तते?

iii. .... (10) आननानि यस्य, स: दशानन: कथ्यते।

iv. मईमासे ....(31) दिवसा: भवन्ति।

v. विद्यालयस्य वार्षिकोत्सव: .... (24) तारिकायां भविष्यति।

vi. .... (50) अर्धशतकमपि कथ्यते।

vii. वेधशालाया: निर्माणम् .... (18) शताब्द्याम् अभवत्।

viii. .... (4) वृक्षेभ्य: ....(47) पत्राणि अपतन्।

ix. चर्चायाम् .... (33) विद्वांस: भागं गृहीतवन्त:

2. शुद्धं विकल्पं गोलाकारं कुरुत —

यथा—विशन्ति: (विंशति:) विन्शति:

i.	एकदश	एकेदश	एकादश
ii.	द्वात्रिंशत्	द्वत्रिंशत्	द्वात्रींशत्
iii.	षोदश	षोडदश	षोडश
iv.	चत्वारींशत्	चत्वारिंशत्	चत्वारंशत्
v.	अष्ट	अष्ट:	अष्टा:
vi.	त्रय:विंशति:	त्रिविंशति:	त्रयोविंशति:
vii.	चतुर्दश	चर्तुदश	चतुरदश

3. उचितेन विकल्पेन रिक्तस्थानानि पूरयत —

i. वृक्षे .... (2) काकौ स्त: (द्वि/द्वौ/द्वे)

ii. उद्याने .... (4) महिला: भ्रमन्ति। (चत्वार:/चतुरै:/चतस्र:)

© NCERT not to be republished

iii. गज: ....(4) पादै: चलति। (चतुर्भि:/चतुरै:/चतुर्भ्य:)

iv. .... (1) शाखायां खगा: कूजन्ति। (एकस्मिन्/एके/एकस्याम्)

v. बालका: .... (3) फलानि खादन्ति। (त्रीणि/त्रय:/तिस्र:)

vi. एतेषां .... (6) वृक्षाणां नामानि वदत। (षट्/षण्णाम्/षट्नाम्)

vii. पाण्डवा: .... आसन्। (पञ्च:, पञ्चा:, पञ्च)

4. (अ) प्रदत्तसंख्यापदानि आरोहक्रमेण लिखत —

एकविंशति:, दश, सप्तत्रिंशत्, एकादश, नवचत्वारिंशत्, पञ्चविंशति:, षट्चत्वारिंशत्, सप्तदश, षट्, द्वात्रिंशत्।

....

....

....

....

(आ) प्रदत्तसंख्यापदानि अवरोहक्रमेण लिखत —

नवदश, षट्त्रिंशत्, सप्त, चतुर्विंशति:, पञ्चाशत्, चत्वार:, द्विचत्वारिंशत्, अष्टाविंशति:, पञ्चचत्वारिंशत्, त्रयोदश

....

....

....

....

5. ध्यानेन चिन्तयित्वा वदत लिखत च–

i. मम समीपे नवचत्वारिंशत् फलानि सन्ति।

त्रयोदश फलानि मया वितीर्णानि कति अवशिष्टानि?

....

ii. एकस्य आम्रस्य मूल्यं पञ्चरूप्यकाणि अस्ति। मया अष्ट आम्राणि क्रीतानि। मया कियत् मूल्यं दातव्यम् वर्तते?

....

© NCERT not to be republished

iii. सुधीरस्य समीपे दश रूप्यकाणि आसन्। तस्य माता तस्मै चतुर्विंशतिं रूप्यकाणि दत्वा शाकम् आनेतुं प्रैषयत्। स: षड्विंशत्या: रूप्यकै: शाकम् आनीतवान्। कति रूप्यकाणि अवशिष्टानि?

....

iv. सुधाया: जन्मदिवस: आसीत्। तस्या: माता तस्मै पञ्चाशत् चॉकलेहान् (Chocolate) कक्षायां वितरणाय अयच्छत्। कक्षायां सप्तत्रिंशत् छात्रा: उपस्थिता: आसन्। तया कति 'चॉकलेहा:' वितीर्णा: कति च अवशिष्टा:?

....

v. विजयस्य समीपे द्विचत्वारिंशत् लेखन्य: आसन्। स: प्रतिच्छात्रं द्वे-लेखिन्यौ वितरितुम् इच्छति। स: कति-छात्रेभ्य: लेखिनी: प्रदास्यति येन किमपि अवशिष्टं न भवेत्।

....

कानिचन उपयोगीनि शब्दरूपाणि

नदी (ईकारान्तशब्द:)

विभक्ति:	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्य:
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदी:
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभि:
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्य:
पञ्चमी	नद्या:	नदीभ्याम्	नदीभ्य:
षष्ठी	नद्या:	नद्यो:	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्यो:	नदीषु
सम्बोधनम्	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्य:!

एवमेव लक्ष्मी, वाणी, रसवती, भगिनी, पुत्री, नगरी, जननी, सरस्वती, गृहिणी, लेखनी इत्यादीनां रूपाण्यपि भवन्ति।

भानु (उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द:)

विभक्ति:	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानु:	भानू	भानव:
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्

तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभि:
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्य:
पञ्चमी	भानो:	भानुभ्याम्	भानुभ्य:
षष्ठी	भानो:	भान्वो:	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वो:	भानुषु
सम्बोधनम्	हे भानो!	हे भानू!	हे भानव:!

एवमेव सूनु (पुत्र), कृशानु (आग), चञ्चु (चोंच), इत्यादीनां शब्दानां रूपाण्यपि भवन्ति।

धेनु (उकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति:	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	धेनु:	धेनू	धेनव:
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनू:
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभि:
चतुर्थी	धेनवे/धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्य:
पञ्चमी	धेनो:/धेन्वा:	धेनुभ्याम्	धेनुभ्य:
षष्ठी	धेनो:/धेन्वा:	धेन्वो:	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ/धेन्वाम्:	धेन्वो:	धेनुषु
सम्बोधनम्	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनव:!

मधु (उकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति:	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभि:
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्य:
पञ्चमी	मधुन:	मधाुभ्याम्	मधुभ्य:
षष्ठी	मधुन:	मधुनो:	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनो:	मधुषु
सम्बोधनम्	हे मधु/मधो	हे मधुनी!	हे मधूनि!

एवमेव अश्रु (आँसू), अम्बु (जल), श्मश्रु (दाढ़ी) वस्तु, वसु (धन) लघु इत्यादीनां शब्दानां रूपाण्यपि भवन्ति।

© NCERT not to be republished

पितृ (ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधनम्	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

एवमेव जामातृ, भ्रातृ, देवृ (देवर) इत्यादि - शब्दानां रूपाण्यपि भवन्ति। दातृ, कर्तृ, धातृ, नेतृ, श्रोतृ, सवितृ, भर्तृ, द्रष्ट्र (देखने वाला) इत्यादिशब्दानां रूपाण्यपि एवमेव भवन्ति। केवलं प्रथमा, द्वितीया, संबोधने च द्विवचनान्तरूपं पितरौ इति प्रकारेण न अपितु दातारौ, कर्तारौ, वक्तारौ....इत्यादिप्रकारेण भवति।

मातृ (माँ, माता) (ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधनम्	हे मातः!	हे मातरौ	हे मातरः!

एवमेव दुहितृ, (पुत्री) यातृ (देवरानी या जेठानी), ननान्दृ (ननद) इत्यादीनां शब्दानां रूपाण्यपि भवन्ति। मूलतः ऋकारान्त-स्त्रीलिङ्गे, पुँल्लिङ्गे च केवलं द्वितीया-बहुवचनमेव मातॄः, दुहितॄः इत्यादिप्रकारेण प्रयुज्यते अन्यत् सर्वं तु समानमेव वर्तते।

© NCERT not to be republished

राजन् (राजा) (नकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति:	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजान:
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञ:
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभि:
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्य:
पञ्चमी	राज्ञ:	राजभ्याम्	राजभ्य:
षष्ठी	राज्ञ:	राज्ञो:	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि/राजनि	राज्ञो:	राजसु
सम्बोधनम्	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजान:!

भवत् (आप) (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति:	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्त:
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवत:
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भि:
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्य:
पञ्चमी	भवत:	भवद्भ्याम्	भवद्भ्य:
षष्ठी	भवत:	भवतो:	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतो:	भवत्सु

आत्मन् (आत्मा, अपने आप) (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति:	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मान:
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मन:
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभि:
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्य:
पञ्चमी	आत्मन:	आत्मभ्याम्	आत्मभ्य:
षष्ठी	आत्मन:	आत्मनो:	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनो:	आत्मसु
सम्बोधनम्	हे आत्मन्!	हे आत्मानौ!	हे आत्मान:!

© NCERT not to be republished

विद्वस् (विद्वान्) (पुँल्लिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधनम्	हे विद्वन्!	हे विद्वांसौ!	हे विद्वांसः!

चन्द्रमस् (चन्दमा) (पुँल्लिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पञ्चमी	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
षष्ठी	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमस्सु
सम्बोधनम्	हे चन्द्रमः!	हे चन्द्रमसौ!	हे चन्द्रमसः!

वाच् (चकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्

© NCERT not to be republished

सप्तमी	वाचि	वाचो:	वाक्षु
सम्बोधनम्	हे वाक्, वाग्!	हे वाचौ!	हे वाच:!

गच्छत् (तकारान्त पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति:	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्त:
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छत:
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भि:
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्य:
पञ्चमी	गच्छत:	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्य:
षष्ठी	गच्छत:	गच्छतो:	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतो:	गच्छत्सु
सम्बोधनम्	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्त:!

सर्व (सब) (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति:	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सर्व:	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वै:
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्य:
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्य:
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयो:	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयो:	सर्वेषु

सर्व (सब) (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति:	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वा:
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वा:
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभि:
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्य:
पञ्चमी	सर्वस्या:	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्य:
षष्ठी	सर्वस्या:	सर्वयो:	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयो:	सर्वासु

सर्व (सब) (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति:	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

(तृतीया से सप्तमी पर्यन्त शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान चलेंगे। सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता।)

यत् (जो) (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति:	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	य:	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यै:
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्य:
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्य:
षष्ठी	यस्य	ययो:	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययो:	येषु

यत् (सब) (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति:	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	या	ये	या:
द्वितीया	याम्	ये	या:
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभि:
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्य:
पञ्चमी	यस्या:	याभ्याम्	याभ्य:
षष्ठी	यस्या:	ययो:	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययो:	यासु

यत् (जो) (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति:	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

(तृतीया से सप्तमी पर्यन्त शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।)

© NCERT not to be republished

एतत् (यह) (पुँलिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एष:	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतै:
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्य:
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्य:
षष्ठी	एतस्य	एतयो:	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयो:	एतेषु

एतत् (यह) (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि

(शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।)

एतत् (यह) (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एता:
द्वितीया	एताम्	एते	एता:
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभि:
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्य:
पञ्चमी	एतस्या:	एताभ्याम्	एताभ्य:
षष्ठी	एतस्या:	एतयो:	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयो:	एतासु

तत् (वह) (पुँलिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स:	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तै:

© NCERT not to be republished

चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्य:
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्य:
षष्ठी	तस्य	तयो:	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयो:	तेषु

(तत्, यत्, एतत्, इदम्, अदस्, युष्मद्, अस्मद् आदि सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता)

तत् (वह) (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति:	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सा	ते	ता:
द्वितीया	ताम्	ते	ता:
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभि:
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्य:
पञ्चमी	तस्या:	ताभ्याम्	ताभ्य:
षष्ठी	तस्या:	तयो:	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयो:	तासु

तत् (वह) (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति:	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

(शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं)

किम् (कौन) (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति:	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	क:	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कै:
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्य:
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्य:
षष्ठी	कस्य	कयो:	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयो:	केषु

© NCERT not to be republished

किम् (कौन) (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति:	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	का:
द्वितीया	काम्	के	का:
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभि:
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्य:
पञ्चमी	कस्या:	काभ्याम्	काभ्य:
षष्ठी	कस्या:	कयो:	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयो:	कासु

किम् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति:	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

(शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होंगे)

इदम् (यह) (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति:	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभि:
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्य:
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्य:
षष्ठी	अस्य	अनयो:/एनयो:	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयो:/एनयो:	एषु

इदम् (यह) (स्त्रीलिंग)

विभक्ति:	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमा:
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमा:
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभि:
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्य:

© NCERT not to be republished

पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

इदम् (यह) (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्तिः	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

(इसके शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं)

अस्मद् (मैं)

विभक्तिः	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् (तुम)

विभक्तिः	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

© NCERT not to be republished

11

0975CH11

धातुरूपाणि

संस्कृतभाषायां क्रियार्थं धातुरूपाणां प्रयोग: भवति। धातुरूपेषु पञ्चलकाराणां मुख्यत: प्रयोग: भवति। यथा —

लट्लकार:

(वर्तमानकाले)

जन: चलदूरभाषे चित्राणि पश्यति।

लङ्लकार:

(भूतकाले)

ह्य: त्वं कुत्र आसी:?

लृट्लकार:

(भविष्यत्काले)

श्व: आवाम् आपणं चलिष्याव:।

लोट्लकार:

(आज्ञार्थे)

अत्र मा तिष्ठ।

© NCERT not to be republished

विधिलिङ्लकार

(संभावनार्थे)

संभवत: अद्य वर्षा भवेत्।

प्रत्येकं लकारे त्रय: पुरुषा: त्रीणि वचनानि च भवन्ति। अधुना वयं लट्लकारस्य माध्यमेन कर्तृ-क्रिया-अन्वितिं प्रदर्शयन्तीम् इमाम् तालिकाम् अवगच्छाम:-

लट्लकार: (पठ् धातु)

	एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथम: पुरुष:	पठति	पठत:	पठन्ति
(कर्तृपदम्)	(स:,सा,तत्)	(तौ,ते,ते)	(ते,ता:,तानि)
मध्यम: पुरुष:	पठसि	पठथ:	पठथ
(कर्तृपदम्)	(त्वम्)	(युवाम्)	(यूयम्)
उत्तम: पुरुष:	पठामि	पठाव:	पठाम:
(कर्तृपदम्)	(अहम्)	(आवाम्)	(वयम्)

एवमेव सर्वाषु धातुषु सर्वेषु लकारेषु च क्रियाया: (धातुरूपाणां) प्रयोग: भवति।

1. कोष्ठके प्रदत्त-धातूनाम् उचितै: रूपै: रिक्तस्थानानि पूरयत —

i. ये छात्रा: कक्षायां ध्यानेन पाठं .... (श्रु, लट्), ते अभीष्टं परिणामं .... (लभ्, लट्)।

ii. भो छात्रा:! जंक इति भोज्यवस्तूनि तु कदापि मा .... (भक्ष्, लोट्)

iii. अनुशासनबद्ध: बाल: यथाकालं सर्वं कार्यं कर्तुं ....। (शक्, लट्)

iv. पुत्र! .... (दृश्, लोट्) स्वलेखम्। त्वं ध्यानेन सुलेखं ....। (लिख्, लोट्)

2021–22

v. पित:! अद्याहम् ध्यानेन लिखित्वा भवते ....। (दृश्, लृट्)

vi. रमा आश्रमे पुष्पाणि ....। (चि, लट्)

vii. यदि अहम् एतत् कार्यं कुर्याम् तर्हि कमुपहारं ....? (लभ्, लृट्)

viii. ये जना: यत्किमपि अखाद्यम् .... (भक्ष्, लट्) ते प्राय: अस्वस्था: .... (भू, लट्)

ix. भो बाला:! कमपि प्राणिनं मा .... (तुद्, लोट्)

x. भवान् किं सत्यं .... (ब्रू, लट्)

2. रेलदुर्घटनाया: विषये प्रकाशितेऽस्मिन् समाचारपत्रे धातुरूपाणाम् अशुद्धय: सञ्जाता:। एतत् समाचारपत्रं पठित्वा क्रियापदानि शुद्धानि कुरुत–

यथा –

ह्य: अहम् समाचार-पत्रे <u>पठामि</u> अपठम् यत् रेलदुर्घटनायाम् अनेके जना: आहता:।

i. केचन जना: तान् असेवन् परम् दु:खस्य ....

ii. विषय: एष: सन्ति यत् केचित् दुर्जना: तेषां ....

iii. धनस्यूतम् अचोरय: येन अनेकेषां तु ....

iv. परिचयपत्रमपि न अमिलत्। इतोऽपि ....

v. अधिकं यत् तेषां दु:खेन संवेदनहीना: ....

vi. जना: तु केवलं स्वचलदूरभाषयन्त्रेण तस्या: ....

vii. घटनाया: वीडियो-निर्माणे संलग्ना: सन्ति। ....

3. उचित-धातुरूपेण रिक्तस्थानानि पूरयत —

i. न कोऽपि जानाति श्व: किम् .... ? (भू)

ii. ह्य: त्वम् आपणात् किं .... (क्री)

iii. आगामिवर्षे अहम् विदेशम् ....। (गम्)

iv. अधुना त्वं किं ....। (पच्)

v. गतदिवसे अहम् एतत् पुस्तकम् ....। (इष्)

vi. परश्व: अहम् तव गृहे ....। (स्था)

© NCERT not to be republished

4. प्रदत्तैः पदैः वाक्यानि रचयत–

i. सिञ्चति ....

ii. पठेयुः ....

iii. कथयानि ....

iv. पिबाव ....

v. सेवामहे ....

vi. आसन् ....

vii. लेखिष्यसि ....

viii. अपश्यः ....

ix. लभन्ते ....

x. अस्ति ....

© NCERT
not to be republished

12

0975CH12

वर्णविचारः

इदानीं यावत् भवद्भिः संस्कृतभाषायाः वर्णानां ज्ञानं तु प्राप्तमेव। अतः सर्वप्रथमं वयमेतेषां संयोजनविच्छेदयोः अभ्यासं कुर्मः तद्यथा —

व्+अ+र्+ण्+अ+व्+इ+च्+आ+र्+अः	–	**वर्णविचारः**
क्+आ+र्+य्+अ+द्+अ+क्+ष्+अ+त्+आः	–	**कार्यदक्षताः**
प्+र्+इ+य्+अ+व्+आ+द्+इ+त्+आ	–	**प्रियवादिता**
ज्+ञ्+आ+न्+अ+प्+र्+आ+प्+त्+इः	–	**ज्ञानप्राप्तिः**

1. एवमेव एतेषां पदानामपि संयोजनं कुरुत —

i. स्+ऊ+क्+त्+इ+स्+औ+र्+अ+भ्+अ+म् – ....

ii. प्+र्+अ+त्+य्+आ+ह्+आ+र्+अः – ....

iii. अ+न्+उ+द्+आ+त्+त्+अः – ....

iv. इ+क्+ष्+उ+द्+अ+ण्+ड्+अ+म् – ....

v. म्+अ+ञ्+ज्+ऊ+ष्+आ – ....

vi. ज्+ञ्+आ+न्+ए+च्+छ्+उः – ....

अधुना वर्णविच्छेदस्य अभ्यासं कुर्मः

धनञ्जयः	–	**ध्+अ+न्+अ+ञ्+ज्+अ+य्+अः**
प्रयच्छति	–	**प्+र्+अ+य्+अ+च्+छ्+अ+त्+इ**
स्वार्थान्धः	–	**स्+व्+आ+र्+थ्+आ+न्+ध्+अः**
चिरञ्जीवः	–	**च्+इ+र्+अ+ञ्+ज्+ई+व्+अः**

2. एवमेव एतेषां पदानामपि विच्छेदं कुरुत —

i. विद्यालयः – ....

ii. पुत्रप्रीत्या – ....

© NCERT not to be republished

iii. आज्ञापयति – ....

iv. प्रभृति – ....

v. प्रतीक्षा – ....

vi. अश्रद्धेयम् – ....

vii. सुरक्षितम् – ....

अत्र वयं पश्याम: यत् स्वर-व्यञ्जनानां संयोजनेन शब्दनिर्माणं भवति। अत्र एतदपि ध्यातव्यं यत् —

- 'स्वयं राजन्ते इति स्वरा:'
- अर्थात् स्वराणाम् उच्चारणाय अन्यवर्णस्य आवश्यकता न भवति परं व्यञ्जनानाम् उच्चारणाय स्वरा: सदैव अपेक्ष्यन्ते।
- स्वराणामपरं नाम अस्ति अच् इति।
- व्यञ्जनानां चापरं नाम अस्ति हल् इति।
- स्वरेण विरहितस्य व्यञ्जनवर्णस्य लेखनाय हलन्तचिह्नम् (्) इति प्रयुज्यते। अत्र वर्णविन्यासं कर्तुं सदैव ध्यातव्यं यत् कोऽपि व्यञ्जनवर्ण: हलन्तचिह्नेन विना न लेखनीय:।

किं भवन्त: जानन्ति यत् सर्वेषाम् वर्णानाम् उच्चारणाय मुखे विशिष्टस्थानं वर्तते।

मयङ्क: – मोहन! इति उच्चारणक्रमे 'म' इति वर्णस्य उच्चारणे ओष्ठ: अपरम् ओष्ठं स्पृशति परं 'ह', 'न' इति पदयो: उच्चारणे ओष्ठ: न स्पृश्यते इति एतदनुभूयते।

अध्यापिका– आम्। यत: हकारस्य उच्चारणस्थानं कण्ठ: नकारस्य च दन्ता:।

तन्वी – आम्। मम नाम्नि अपि तकारस्य उच्चारणे जिह्वा दन्तान् स्पृशति।

शान्ति: – आम्। मम नाम्नि अपि शकारस्य उच्चारणं तालुना, परं नकारतकारयो: उच्चारणं मुखस्य सहायतया भवति (सर्वे छात्रा: शिक्षिकां प्रति)

महोदये! एतत् तु न कदापि विचारितम् यत् कथमस्माकं जिह्वा जानाति यत् कस्य वर्णस्य उच्चारणं मुखस्य केन भागेन कर्तव्यम्।

शिक्षक: (विहस्य) एतत् तु अतीव वैज्ञानिकं रहस्यम् यद् ज्ञात्वा वयं सकार-शकार-षकार इति वर्णानाम् उच्चारणे अवबोधने च त्रुटिकर्तॄन् बोधयितुं क्षमा: उच्चारणदोषं च मार्जयितुमपि समर्था:। अधुना उच्चारणस्थानानाम् अभ्यासं कुर्म:।

© NCERT not to be republished

1. एतेषां वर्णानाम् उच्चारणस्थानं लिखत–

i. ट् .... ओ .... य् .... ण् ....

ii. थ् .... ज् .... ग् .... उ ....

iii. ए .... न् .... ऋ .... व् ....

2. एतेषु मूर्धन्यवर्णान् गोलाकार-युक्तान् कुरुत –

च्, ल्, ए, म्, आ, ष्, य्, उ

3. प्रदत्तानि उच्चारणस्थानानि अधिकृत्य द्वौ वर्णौ लिखत –

i. ओष्ठ्य: – .... दन्त्य: – ....

ii. तालव्य: – .... कण्ठ्य: – ....

iii. कण्ठोष्ठ्य: – .... नासिक्य:– ....

4. प्रदत्तपदेभ्य: यथानिर्दिष्टम् उच्चारणस्थानानुरूपं वर्णान् चित्वा लिखत –

i. जाड्यम् – (मूर्धन्यवर्ण:)
ii. वर्तते – (दन्तोष्ठ्यवर्ण:)
iii. स्वीकरोतु – (तालव्यवर्ण:)
iv. विहितम् – (कण्ठ्यवर्ण:)
v. प्रतिज्ञा – (ओष्ठ्यवर्ण:)
vi. उत्थाय – (दन्त्यवर्ण:)
vii. पाषाणतले – (ओष्ठ्यवर्ण:)
viii. प्राणिनाम् – (नासिक्यवर्ण:)
ix. आश्रमे – (कण्ठतालव्य:)
x. लतासु – (दन्त्यवर्ण:)

5. वर्णानाम् उच्चारणस्थानानां सरलतया ज्ञानार्थम् एतानि सूत्राणि स्मरत –

i. अकुहविसर्जनीयानां कण्ठ:। (अ, आ, कवर्ग, ह विसर्ग)
ii. इचुयशानां तालु:। (इ, ई, चवर्ग, य्, श्)
iii. ऋटुरषाणां मूर्धा। (ऋ, ॠ, टवर्ग, र्, ष्)
iv. लृतुलसानां दन्ता:। (लृ, तवर्ग, ल्, स्)

v. उपूपध्मानीयानामोष्ठौ। (उ, ऊ, पवर्ग, उपध्मानीय)
vi. ञमङणनानां नासिका। (ञ्, म्, ङ्, ण्, न्)
vii. एदैतोः कण्ठतालु। (ए, ऐ)
viii. ओदौतोः कण्ठोष्ठम्। (ओ, औ)
ix. वकारस्य दन्तोष्ठम्। (व)
x. नासिकाऽनुस्वारस्य। (अनुस्वार)

© NCERT not to be republished